१. प्रथमेश परिपत्रों में

प्रथमेश परिपत्रों में

पूज्य प्रथमेशजी ने अपने युग की ज्वलंत समस्याओं का विचार किया और समय-समय पर सार्वजनिक रूप से परिपत्र जारी किये। इन परिपत्रों में प्रथमेशजी का सामयिक चिन्तन और प्रेरक मार्गदर्शन उपलब्ध होता है। इन परिपत्रों में युगनिर्माता श्री प्रथमेश के युगान्तरकारी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

— संपादक

पूज्य प्रथमेशजी परिषद् के प्रकाशनों
में विविधता, व्यापकता और रोचकता
चाहते थे. अतः आपने अपने निर्देशन
में स्थायी स्तंभों के लिये कुछ शीर्षक
कलाकार श्री गोकुलेन्द्र शर्मा से तैयार
करवाये थे. इनमें से कुछ यहां प्रस्तुत हैं—

व्यंगकार श्री प्रथमेश

सीधी बात की अपेक्षा व्यंग मार्मिक चोट करता है- इसे मनुष्य न केवल झेल जाता है अपितु वह मार्गदर्शक भी बन जाता है, पून्य प्रथमेशजी ने अनेक व्यंग चित्र अपने निर्देशन में तैयार करवाये थे, उनमें से कुछ प्रस्तुत हैं

स्वातंत्र्य सदुपयोग

"आज तो मैं तुम्हें कच्चा ही खा जाऊंगी"

"ना ना डार्लिग! ऐसा मत करो"

कोई आपत्ति नहीं

"इससे शादी क्यों नहीं कर लेते?"

" नहीं भाई! दूसरी शादी के लिए सोसायटी या कानून की अनुमति नहीं है। हाँ, गर्लफ्रेंड चाहे जितनी रख लो; इसमें कोई बाधा नहीं है"

"आरती इधर लाओ, मैं करूंगा आरती
एक लाख रुपये डोनेशन में जो दिये हैं"

वल्लभ संदेश १५-८-८१

'यह आरती यहां गाड़ दो, मुझे यहां नई बैठक स्थापित करनी है'
'क्या पुरानी बैठकों से काम नहीं चलता?'
'अब नया जमाना आ गया है, सब नया प्रकट होना चाहिये
पुरानी की चिन्ता हमें क्या?

वल्लभ संदेश १.७.८१

सच्ची बात करने में डर काहे का???

'पापा आप ईडिएट है,' 'हाँ बेटा! सच है, तुम्हारी जैसी संतान को जन्म जो दिया है.'

वल्लभ संदेश १.५.८१

'महाजनो येन गतः स पंथा'

बूफे डिनर या बफेलो डिनर

जंगल में गाड़ी बिगड़ गई कच्चा सामान डिक्की में है लेकिन सौंदर्य महारानी को तो भोजन बनाना आता ही नहीं वल्लभ संदेश १५.६.८१

हनीमून के लिये लाख रुपया और धर्म के नाम पर? वल्लभ संदेश १५.७.८१

हरि ॐ हरि
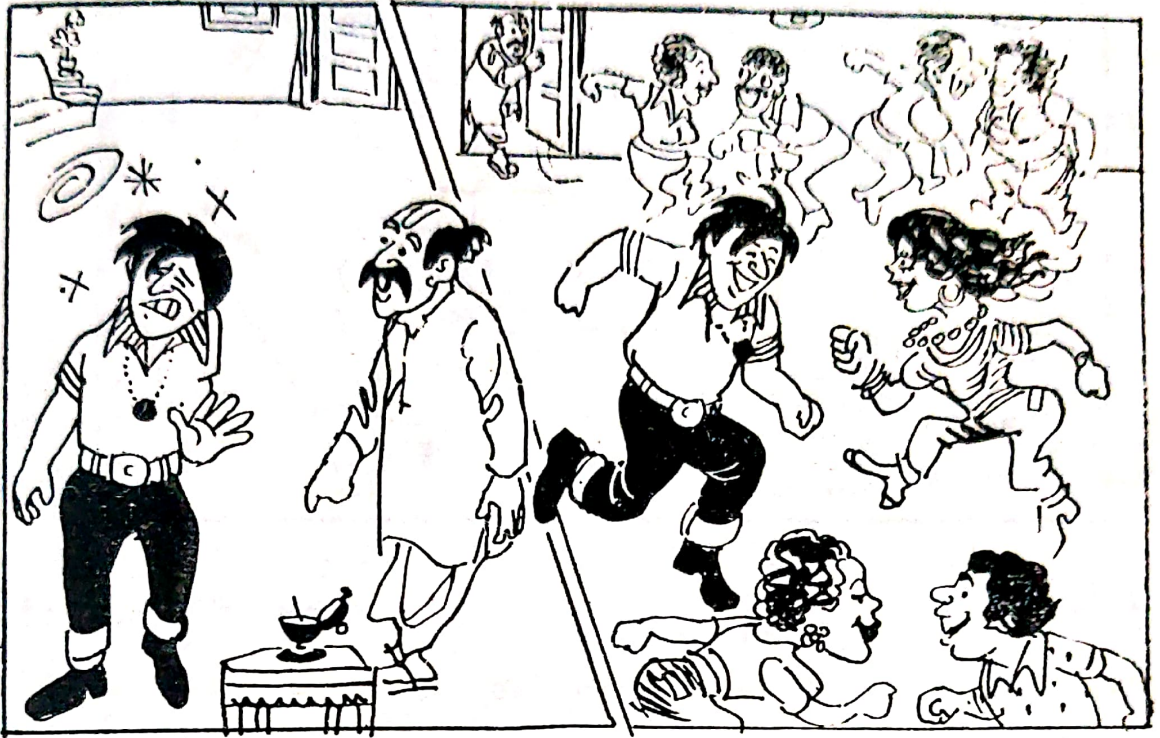
वल्लभ संदेश १.३.८१

आज के युवकों को धार्मिक संस्कारों, रीति-नीति, माता-पिता की आज्ञा आदि बातें गले नहीं उतरती नहीं और इसके लिये शर्म-संकोच अनुभव करते हैं, परन्तु निरर्थक प्रवृत्तियों में शर्म-संकोच करते नहीं.

यथार्थ का प्रतिरूप   वल्लभ संदेश १५.११.८१

हाथी और अंधे   वल्लभ संदेश १५.१.८२
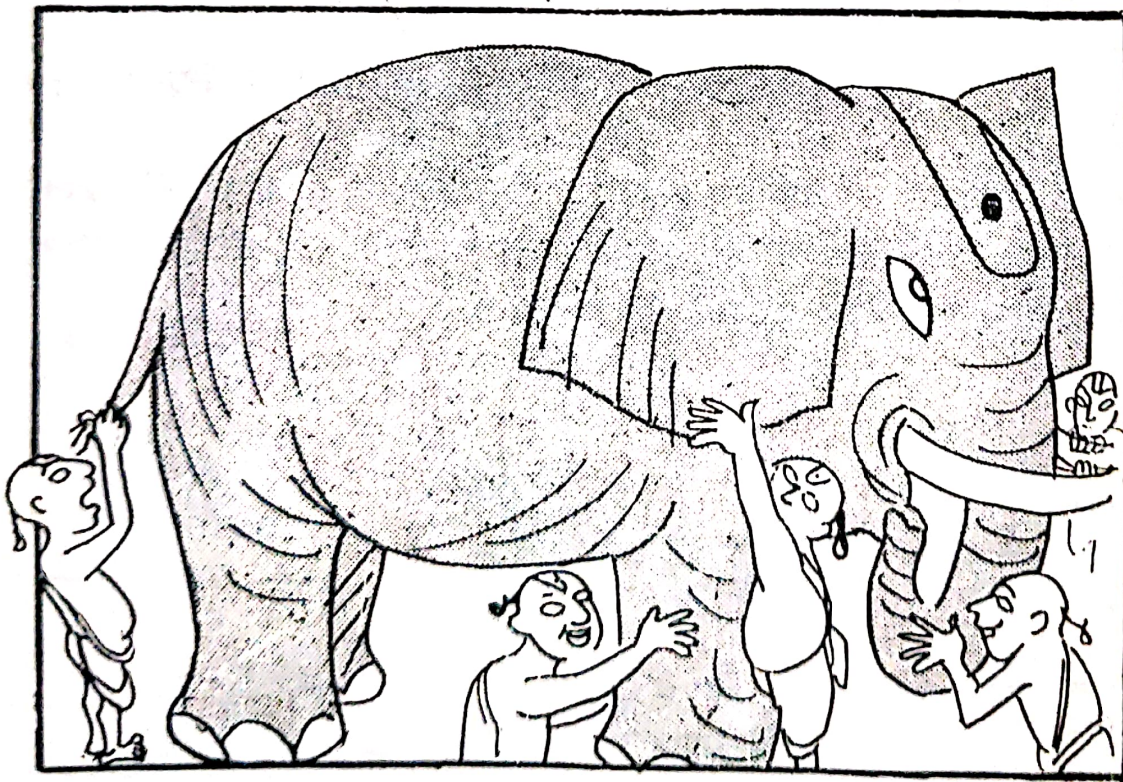
(कलकत्ते में रुग्ण शैया से पूज्यपाद का स्वाक्षरी संदेश)

।। श्रीहरि: ।।

कलकत्ता
दि. २६-१२-८६

स्नेहल शुभेच्छु जन
साधक परिजन

मैं आप सभी को भगवत्स्मरण करने का अनुरोध करता हूँ। जीवन और मृत्यु मेरे लिए ~~सुख~~ या दुःख के कारण नहीं हैं।

ये दोनों पक्ष मानवजीवन में अनिवार्य और आवश्यक हैं। "मेरे लिए अधिक विचार में समय वृथा न खोकर "स्वधर्म में समय लगाइये" वह अधिक सार्थक है। शिष्टाचार या चिन्ता और सद्भावना एवं समवेदना की मुझे आवश्यकता नहीं है। यह आप सभी भली भाँति समझ गये होंगे। क्योंकि आप सभी ने मेरा जीवन देखा है।

"मेरा आपका साथ उस पर्व के साथ था" जिसे हमने समझ न [illegible] उपेक्षा की है। लौकिक समर्पणार्थ मैं जीवन की अंजलि समर्पित करता हूँ। और "वह भी अपने शोणित से"। अतः मेरी चिन्ता न कर आप सर्वथा मुक्त रहिये।।

२

मैने अपने जीवन चरित्र छपवाने या श्रद्धान्जलि के लिए अथवा किसी को शोक निवारण अर्थ के लिए ऐसा नहीं की है, आप सभी का चिर आभारी हूँ। "बस यही कहना चाहूँगा कि अपने धर्म और सेवा की गतिविधियों में लगे रहने से स्वस्थ हूँ। ऐसी स्थिति में। सभी को धन्यवाद।

डा. [illegible]

(प्रेषक - पं० द्वारका प्रसाद पारोडिया - किशनगढ़)

श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य पंचशताब्दि प्राकट्य महोत्सव

पूज्यपाद श्री प्रथमेशजी महाराज का वक्तव्य

श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य पंचशताब्दी प्राकट्य महोत्सव के विषय में शास्त्रीय ग्रंथों का उल्लेख न होने के विषय में यह कहा कहा जाता है कि उत्सव मनाने का क्या प्रयोजन है । क्या यह कोई अन्तिम क्रिया है या पुष्टि मार्ग की समाप्ति की घोषणा । उक्त दोनों वातें गम्भीरता से सोचने पर आदरणीय नहीं हैं और अस्थाने हैं । क्योंकि सभी वातें हमारे समाज ग्रन्थों के आधार से करना हो यह नहीं कहा जा सकता । इस विषय में ऐसे अनेक प्रमाण प्रत्यक्ष है जिससे वह सिद्ध किया जा सकता है कि हमारा समाज सभी आचरण स्वधर्म के अनुरूप नहीं करता । साथ ही यदि शास्त्रीयता और ग्रंथों के आधार से पुष्टिमार्गीय समाज चलता होता तो आज जो भी खींचातान और व्यवहार में विसंगति है वह हमें दिखाई नहीं देती ।

इस विघटनात्मक परिस्थिति को देखते हुए वर्तमान में पुष्टिमार्गीय प्रतिष्ठा की हानि एवं जनता में निरंकुशता और स्वधर्म के प्रति उदासीनता से यह सहज में ही अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वधर्माचरण करने में हमारा समाज शिथिल हो गया है । उसका यह दुष्परिणाम हमारे सामने भयंकर रूप में प्रत्यक्ष हो रहा है जिसे स्वीकार करने में हमें हिचक अनुभव होती है । यहाँ यह प्रश्न नहीं है कि उत्सव नहीं मनाया जाय, क्योंकि प्रति वर्ष मनाया जाता है । फिर यह विशेष आयोजन का अभिप्राय क्या है ?

यह इस प्रश्न की उचित पद्धति है । इस प्रकार इसे सोचने से जनता में भ्रांत धारणा एवं विरोधाभास प्रतीत नहीं होगा और इस पर विचार करने हेतु सही दिशा खोजने का प्रयत्न आरम्भ होगा ।

जव हम किसी प्रश्न को सही स्वरूप में समझाते एवं देखने का प्रयास करेंगे तो उसका वास्तविक उत्तर भी हमें सहज ही मिल जाएगा । और वह उचित और यथार्थ उत्तर जिसे हम व्यर्थ के विवादों एवं थोथा बुद्धि प्रदर्शन करके कठिन बना देते हैं मूलतः बड़ा सरल, एवं सहज है कि यह विशेष उत्सव मनाने का आयोजन हमारे मार्ग की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के अभिप्राय से किया जा रहा है । जिससे समाज के समक्ष श्री मदाचार्य चरणों द्वारा प्रसारित सिद्धान्तों को वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत कर सकें । जब तक इन सिद्धान्तों को समक्ष रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता, तब तक हमारे द्वारा सम्प्रदाय की जो विकृत स्थिति बनाई है उसका आवरण दूर नहीं होगा एवं जनता में जो इसके प्रति गर्हित भावना उत्पन्न हुई है उसे दूर नहीं किया जा सकता ।

इस उत्सव मनाने का व्यापक स्तर पर यही समिति ने गठनात्मक लम्बा कार्यक्रम वनाया है । उसे समाप्ति या अन्तिम क्रिया के रूप में समझाना केवल भ्रान्त धारणा है ।

होना तो यही चाहिए कि हम सभी उस कार्यक्रम पर गम्भीरता से विचार करके उसे अखिल भारतीय स्तर पर पूर्ण करने का हृदय से सतत प्रयत्न करें और सहिष्णुता से उसके साकार होने की प्रतीक्षा करें । किन्तु इसके विपरीत थोड़ा-सा कार्य। करके उखड़ जाना और परिणाम से निराश हो जाना धैर्य और विवेक का परिचायक नहीं है । यह तो सभी जानते हैं कि रोग का निवारण, घर का जीर्णोद्धार, एवं विचारों के निर्माण में समय लगता है । फिर हम यदि शीघ्रता से धीरज खोकर कोई भी प्रयत्न करेंगे तो उससे आपसी टकराव एवं फिसलने का ही भय है कोई भी उचित कार्य इस दृष्टि से कभी सम्भव नहीं होगा वह सुदृढ़ तथ्य है जिसे हमें सच्चे रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए । यही वैष्णव समाज का वास्तविक कर्त्तव्य है । साथ ही कार्यक्रम पर विवाद हर समय होना और अपने-अपने सुझाव देना इस समय निरर्थक है ? क्योंकि ऐसी स्थिति में कोई कार्यक्रम हो ही नहीं सकता और केवल विवाद ही होते रहते हैं ।

मुझे इसके परिणाम का स्पष्टीकरण करना उचित प्रतीत नहीं होता इसे समझदार व्यक्ति स्वयं सोच सकता है । हाँ इतना अवश्य कहना चाहता हूँ कि व्यक्तिवाद को छोड़कर सभी को श्री वल्लभाचार्य का पवित्र स्मरण कर संगठित होना चाहिए । भगवान के आश्रय से किया गया कोई भी कार्य अपूर्ण नहीं रहता यह आत्म विश्वास हमें स्वयं आचार्य श्री कृपा करके प्रदान कर रहे हैं । इससे बढ़कर ग्रन्थ का आधार क्या होगा निरन्तर अपने स्वधर्माचरण और विधर्म के त्याग का आचार्य श्री वल्लभ हमें आदेश देते हैं । ये दोनों तभी हो सकते हैं जब हम अपनी इन्द्रियों पर रोक लगायें ।

आज की असहिष्णुता, अविश्वास-अहंकार उपेक्षा एवं विघटन सभी के मूल में यही कारण हैं । हम स्वधर्म का आचरण तो यथा शक्ति करने की चेष्टा करते हैं, किन्तु विधर्म से नहीं बचते और इन्द्रियों का निग्रह भी नहीं कर पाते । यही कारण है जो सभी अपनी अपनी चलाना चाहते हैं । अतीत में सम्प्रदाय की उन्नति के बहुत प्रयास हुए किन्तु उनका मूल स्थिर नहीं रह सका इसका कारण हमें आज भी सोचने को बाध्य करता है । क्या हम इस दिशा में सही रूप से सोचने के लिए तैयार है यह प्रश्न अपने आपसे ही हमको पूछना चाहिये । जव गोस्वामी परिषद् एवं वैष्णव परिषद के अध्यक्ष से संयुक्त रूप से विचार किया था उसे आज अधिक समय हो गया है, किन्तु उसके परिणाम हमारे सम्मुख आशा जनक नहीं आयेंगे इसका मूल कारण भी यही विचार दोष है ।

अंत में यह बात सभी समाज को ध्यान में रखनी है कि प्रस्तावित कार्यक्रम क्या है और हम उसे कैसे क्रियान्वित करें ? इसके लिए पहले जिस प्रकार की आवश्यकता है उसके विषय में मेरा यह सुझाव है कि हम चार पेज का श्री वल्लभ संदेश एक प्रचार पत्र हर पक्ष में निकालें । जिसमें हमारी प्रगति का उल्लेख हो और श्री वल्लभाचार्य के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालता हुआ एक लेख हो । इससे संगठन की प्रेरणा बढ़ेगी और साहित्य के क्षेत्र के द्वारा एक छोटा-सा ही काम सही हमारा कार्य प्रारम्भ भी हो जायेगा, जिससे हम

बोझ का अनुभव नहीं करेंगे । हो सकता है इसके लिए लेखक की व्यवस्था की चिन्ता की जाती हो परन्तु सबसे पहले श्री वल्लभाचार्य के षोड्श ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद करके क्रमशः उसे प्रकाशित किया जा सकता है । वाद में इसका विवेचन भी लिखा जा सकता है और वार्ता साहित्य के आधार पर कुछ लेख बनाकर प्रस्तुत किये जा सकते हैं । इसका वर्गीकरण परिषद की इन्दौर शाखा और वैष्णव मित्र मण्डल ने किया है, जिसका सम्पादन डॉ. गजानन शर्मा कर रहे हैं, और वो एक निखरा हुआ सत्य है । श्री हरिरायजी के साहित्य में वैष्णवों के कर्त्तव्य और ही वल्लभाचार्य का संक्षिप्त जीवन चरित्र तथा उनके ग्रन्थों की अनुक्रमणिका, समाज में उनके ग्रन्थों से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं । इस विषय के जो लेख है वे समाज में अधिक उपयोगी प्रभावशाली सिद्ध होंगे.। और उन लेखों के द्वारा जो समाज को बड़ी देन दी गई है उसे आधुनिक दृष्टि से समझना मुझे आवश्यक लगता है । दिल्ली में इसके लिए मैं उचित कार्य क्षेत्र तो नहीं पाता परन्तु एक व्यवस्थित कार्यालय परिषद् का और राष्ट्रीय समिति का यहां वनाया जाय। जिसके माधयम से पंजाब, हरियाणा और दिल्ली प्रदेश के विखरे हुए वैष्णवों को यह संदेश दिया जाय कि हम एक अपनी संस्था की छत्रछाया में कार्य नियमित रूप से आरम्भ कर रहे हैं । हरेक क्षेत्र में महीने में एक वार उत्सव का आयोजन होने से यह उत्सव की परम्परा साल भर तक चल सकती है, और साल भर तक एक चीज का प्रचार होने के बाद कोई रचनात्मक भूमिका स्वतः बन जाए और उसके लिए कार्य क्षेत्र हमें मिल जाय यह स्वाभाविक है । इसलिए प्रस्तावित कार्यक्रम बहुत बड़ा है और उसके उद्देश्य से समझा जा सकता है कि हम आत्महत्या करने नहीं जा रहे हैं किन्तु हम जीवन जीने का तरीका सीखने जा रहे हैं और उस तरीके में हमें अपने दुराग्रह छोड़ देने होंगे वाद विवाद छोड़कर घर का वातावरण बनाना होगा । हो सकता है लोग हमारी आलोचना करें ? मगर वह जरूरी नहीं है कि हम प्रत्येक आलोचना का जवाब दें, कारण कि इससे विघटन पैदा होता है । साथ ही यह समझ लेना चाहिये कि कार्यकर्त्ता जितना सहिष्णुता और विनम्रता से कार्य करेगा आलोचना कम करेगा, संगठन बढ़ जायेगा । श्री वल्लभाचार्य ने भी इस वात को सिद्धांत में समझाया कि कृष्णदास मेघन ने मुखरता दोष की निवृत्ति की प्रार्थना आचार्य श्री से ही, इसका मूल उद्देश्य यही है कि आज के युग में हम परस्पर मुखरना दोष की भाषा का प्रयोग करना वन्द करें, यही एक विघटन का मूल है । इसके बाद कार्यालय की अभी अगर कहीं व्यवस्था नहीं हैं तो क्षेत्रीय कार्यालय बनाना उचित हो । और उसकी सुन्दर व्यवस्था ऐसी की जाय जहाँ कार्यकर्त्ता और लोग आराम से आकर ठहर सकें और साथ ही जो कार्य हमारे शेष हैं अथवा वे कार्य जो हमने आरम्भ किये किन्तु वन्द कर देने पड़े उनको फिर से चालू करने का प्रयास किया जाना चाहिए । तो यह सहज में ही हमारा उद्देश्य पूरा हो सकता है । वैष्णव विहार की योजना केलिए हम आज से प्रयास करें तो एक आदर्श कार्य हम दिल्ली में प्रस्तुत कर सकते हैं । परन्तु जब तक हम आपसी कार्य के लिए

झगड़ते रहेंगे तो वे कार्य दिल्ली में सम्भव नहीं होंगे । और जैसे ही हम दिल्ली में हिन्दी का पत्र निकालें उसी प्रकार उसके अनुवाद सिंधी, पंजाबी और गुरुमुखी में भी होने चाहिए इस प्रकार हर भाषा में श्री वल्लभाचार्य के सिद्धांतों को घर-घर में पहुँचाने का यह पहला काम है । जिससे पाक्षिक दो हजार प्रतियाँ छपवाकर वितरण शुरु किया जा सकता है । इसका नाम जैसे हमने परिषद् संदेश रखा ऐसे पंचशताब्दी के अवसर पर श्री वल्लभ ज्योति या श्री वल्लभ संदेश भी रख सकते हैं । और इस प्रकार जब कार्यक्रम होने लगे तव क्षेत्रीय कार्यक्रम बनाने चाहिए और वे इस प्रकार के हों जिनके माध्यम में प्रचार के क्षेत्र में अधिक लाभ किया जा सके एवं सदस्य बन सकें । जिससे संगठन तैयार हो सके तथा उसके बाद हम जनहित का लक्ष्य रखकर किस प्रकार उपयोगी बने ।

यह बात मेरे यहाँ आने पर विवाद के समाधान के विषय में सोची है । जो आपके सामने रखता हूँ । वास्तव में मेरा यह उद्देश्य नहीं है कि मैं किसी व्यक्ति पर आक्षेप करुं।

अंत में बुद्धि प्रेरक श्री कृष्ण से निवेदन है कि हमें अपने कार्य हेतु अलौलिक सामर्थ प्रदान करें ।

मुझे आशा है आप सभी गम्भीरता से विचार कर ---- विचारों को कार्य रूप में परिणत करेंगे ।

धर्म से राजनेताओं का लगाव नहीं

धार्मिक संस्था में राजनेताओं का प्रवेश भी मैं उचित नहीं मानता, चाहे वे सत्ता पक्ष के हों या विरोध प्रक्ष के. यह स्पष्ट है कि धर्म के साथ इन लोगों का जरा भी लगाव नहीं होता है. धार्मिक संगठन के साथ भी इनका लगाव नहीं होता है.

— प्रथमेश

।। श्री मथुरेशो जयति ।।

श्री मदनन्तश्री विभिषित प्रथम पीठाधीश्वर वल्लभ संप्रदाय का अपने स्वजनों को हार्दिक अनुरोध

मेरे समस्त पुत्रवत् शिष्य एवं मेरे विचार तथा कार्यों के प्रति जिन वैष्णवों का हार्दिक विश्वास है तथा अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद में जिनकी निष्ठा है उन सभी को अपने इस अन्तिम संदेश द्वारा सूचित करता हूँ कि मेरा जीवन क्षणभंगुर है । और न जाने कब प्रभु के निर्देश से इहलोक छोड़ना पड़े । अतः कर्त्तव्य हेतु सभी को हार्दिक अनुरोध करता हूँ कि मैंने लगभग बीस वर्ष तक अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के माध्यम से यथाशक्ति स्वधर्म की निष्ठासे सेवा की है और संस्था को सच्चे मन से स्वधर्म के हेतु आवश्यक मानकर जैसा भी बन पड़ा तन मन धन सभी समर्पित करने का प्रभु एवं श्री गुरु के आदेशानुसार यत्न किया । अब इन अंतिम क्षणों में आपको यह अनुरोध करना चाहता हूँ या इसे मेरा इच्छा पत्र समझें कि आप सभी परिषद् के द्वारा संगठित होकर संप्रदाय की रक्षा करें । यही हमारा स्वधर्म है । अब यथा शीघ्र ही मेरा विचार निवृत्त होने का है । आप सभी को अपना मानकर मेरे जीवन के अधूरे कार्य बिना किसी परस्पर होने का है । आप सभी को अपना मानकर मेरे जीवन के अधूरे कार्य बिना किसी पारस्परिक कलह के दृढ़ निष्ठा से परिषद् द्वारा पूर्ण करने का पुनः आन्तरिक आग्रह करता हूँ । जिसमें श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य पंचशताब्दी का शेष प्रस्तावित कार्यक्रम भी है । मैं यह अन्तिम आपसे आशा करता हूँ कि मेरे अवसान के पश्चात् भी आप श्री महाप्रभु की सेवा परिषद् द्वारा करते रहने का प्रभु चरणों की साक्षी करके व्रत ग्रहण करेंगे । महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्य सभी पर अनुग्रह करके उनके आत्मीयजन शिष्यों को स्वधर्म सेवा की दृढ़ता प्रदान करें, इस प्रार्थना के साथ भगवत्स्मरण करता हूँ ।

यदि स्वधर्म सेवा में कोई त्रुटि हुई हो तो अपना मानकर क्षमा करे या दण्ड दें जैसी प्रभु इच्छा होगी वह स्वीकार्य है ।

भवदीय,
गो. र. प्रथमेश
अध्यक्ष प्रचार विभाग अखिल भारतीय
पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्

समस्त पुष्टिमार्गीय वैष्णवों से हार्दिक अनुरोध

आपकी धर्मनिष्ठा का आज तक जो अनुभव हुआ उसे देखकर यह मेरा अनुरोध है कि आप मेरे पादस्पर्श सर्वथा बन्द कर दें । यह आक्षेप नहीं है किन्तु वास्तविकता है कि शिष्य के पादस्पर्श से गुरु को उसके पाप में भाग लेना होता है यह तभी हमारी दृष्टि से

उचित होता जब आपकी हार्दिक निष्ठास्वधर्म में होती तथा वैसा कुछ आचरण में भी आप अपनाते किन्तु ऐसी हमें प्रतिति नहीं होती केवल बाहरी दिखावा या स्वार्थ साधन की ही दृष्टि से आप किसी भी प्रकार से धर्म-निर्वाह करते हैं, उसके हेतु कुछ भी त्याग करने की भावना आप में तनिक भी नहीं है । साथ ही कमजोरियों सहित धर्म स्वीकार करना ही आपको इष्ट है । धर्म से अपनी कमजोरी दूर करना आप नहीं चाहते यह तथ्य प्रतीत होता है । अतः जो भगवत्सेवा तथा सदाचार में अपना विश्वास रखना चाहते हैं और कुछ पालन करते हैं, वे ही पादस्पर्श करें, जिनको स्वधर्म सेवा में उपेक्षा है और निष्ठा नहीं है वह हमारे स्थान में आने का कष्ट न करें, यह उनका हम पर उपकार होगा । आशा है आप अन्यथा न समझ कर मेरे अनुरोध पर ह्रदय देने का कष्ट करेंगे । प्रभु आपको स्वधर्म पालन की प्रेरणा करें यही हमारी प्रार्थना है । शेष भगवत्कृपा ।

समेर्शा समेषु

मिति जेष्ठशुक्ला चतुर्थी अस्माकं यथोचितम् स्वीकर्तव्य

भौमवासरे. सम्वत् २०३५ गो. र. प्रथमेश

दिनांक २६ मई १९७६ प्रथमपीठाधीश्वर वल्लभ संप्रदायस्य

शुभाशिषः

: : श्री हरि : :

श्री पू. पा. वल्लभ संप्रदाय के प्रथम पीठाधीश्वर का आशीर्वाद

जिन व्यक्तियों को वल्लभ संप्रदाय पर निष्ठा है उन सभी कार्यकर्ताओं एवं वैष्णवों से मेरा यह अनुरोध है कि संप्रदाय की इस घौरतंद्रा से समाज को जाग्रत करो यही आज हमारा प्रथम कर्त्तव्य है । गूंगे और धकेले हुए पशुओं की भांति रहना यह स्वधर्म हमें नहीं सिखाता, उससे तो हमें निर्भयता एवं निश्चिन्तता प्राप्त होती है । खूंटे से बंधे पशु की भांति देह-रक्षा करना तो पशु भी जानता है । किन्तु मनुष्य को स्वधर्म रक्षा करके अपनी पशुता दूर करनी है तभी मनुष्यत्व की रक्षा होगी । आप आचार्य वल्लभ की ब्रहम विद्या प्राप्त संतान हो आपके साथ वैश्वानर का तेज पुंज और महान् सेवोपयोगी चेतना है ।. आत्मविश्वास से आगे बढ़ो यही शब्द प्रमाणवादी ब्रह्मवाद से आचार्य हमें शिक्षा प्रदान करते हैं । यही उनका अन्तःकरण प्रबोध एवं उपदेश है । उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य विरान्निवोधत। आज यही हमारा कर्त्तव्य है । इस गुरुपूर्णिमा के पावन दिवस पर हमारा आशीर्वाद के साथ यही संदेश एवं उपदेश है ।

श्री वल्लभाब्द ५०१ ९ जुलाई १९७९

गुरुपूर्णिमा २०३६.

श्रीहरि

समस्त वैष्णवों को विचारार्थ सूचना

प्रश्न छोटा है किन्तु महत्व पूर्ण है । संभवतः आप विचार करना पसन्द नहीं करेंगे। और यदि करना चाहें तो अवश्य विचार करें । नासिक कुम्भपर हजारों वैष्णव वल्लभ संप्रदाय के स्नान करने आये और कितने ही आचार्य के शिष्य होंगे । फिर भी आपके बिखरे हुए स्वरूप से क्या श्रीमद्वल्लभाचार्य चरणों की शोभा में आप वृद्धि कर सके या आपके द्वारा संप्रदाय सी सेवा हुई, जिस पर अस्तित्व निर्भर है । संप्रदाय की शोभा के स्थान पर पुण्य के प्रलोभन से त्रस्त क्या संप्रदाय की भावना को समझ पाये हैं ? इतनी संप्रदाय की अवज्ञा कराके आपने सुयश का भी समर्पण श्रीमदाचार्य को नहीं किया, क्या यही सेवा भावना का मूर्त रूप था । और जो अपनी टोलियाँ बनाकर स्नान कर जायेंगे । और उनकी शिष्य मंडली भेड बकरियों की तरह उनके पीछे रेंगती चलेगी और जो शास्त्रियों ने केवल स्वधर्म के मंच को आत्मकल्याण का साधन न मानकर विज्ञापन का साधन माना इससे हमारे द्वारा स्वधर्म एवं आचार्य के यश की वृद्धि हुई है ? या मनस्विता का ही प्रदर्शन किया है । आशा है आप सोच सकें तो सोचने का प्रथम कष्ट करें । सेवामार्ग और सेवक के धर्म में क्या यही शिक्षा निहित है । प्रभु आपको सत् प्रेरणा प्रदान करे । शेष भगवत् कृपा ।

श्रीवल्लभाचार्य नगर, नासिक
दिनांक ३०-८-७६

भवदीय
गो. र. प्रथमेश शुभाशीर्वाद सह

श्री हरिः

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के सभी कार्यालयों को सूचना दी जाती है कि आप के यहाँ पुष्टिमार्ग के सम्वन्ध में सैद्धान्तिक जानकारी वैष्णव समाज में अधिक से अधिक हो इसका प्रवन्ध करें । साथ ही नियमित साप्ताहिक सत्संग भी कराने की व्यवस्था करें जिसमें किसी प्रकार की अन्यचर्चा के अतिरिक्त केवल सिद्धान्त के क्रमशः ज्ञान तथा रागद्वेष से परे केवल सत्संग की चर्चा ही की जावे । यह कार्यक्रम एक घन्टे से अधिक का न हो तथा जानकारी के लिए अथवा परिषद् की उन्नति के या संप्रदाय के संगठन के विषय में १५ मिनिट अवश्य ही चर्चा की जावे । और संप्रदाय के विषय में जो भी प्रश्न हों उनको प्रचार विभाग के कार्यालय में भेजा जावे जिससे सेवा-परम्परा के विषय में हमारा विभाग आपको जानकारी दे सके । आधुनिक युग में भले ही लोग आचार-शिथिल हो गए हैं किन्तु संप्रदाय और स्वमार्ग की परम्परा की जानकारी अवश्य होनी चाहिये । जिससे भ्रामक स्थिति उत्पन्न न हो । और सुसंगत जानकारी मिलती रहे।

इन्दौर से द्वितीय पीठाधीश्वर ने कीर्तन की पुस्तकें तथा ताल के विषय में छपाई है उनका उपयोग भी कीर्तन की जानकारी के लिए किया जाय यह कार्य किसी संगीतज्ञ के द्वारा सम्पन्न साधारणरूप में किया जा सकता है । आपकी जानकारी के लिए यह सूचित करते हैं कि कलकत्ता में श्रीमती रवि वर्म्मन एवं श्रीमती वाजपेयी ने संगीत तथा कीर्तन का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया है । बम्वई में श्री लक्ष्मण जी के द्वारा इसका प्रारम्भ किया जावेगा । आपकी शाखा में यदि कोई वैष्णव लेख लिखकर नाम सेवा करना चाहें तो कार्यालय पर भेजने की सूचना करें जिसे हमारे हिन्दी, इंग्लिश, बंगाली, गुजराती, बुलेटिया में छपाये जावेंगे । हमारी संस्था के पत्र भारत से वाहर भी जाते हैं । आपके व्यक्तिगत धर्म के अनुभव तथा अन्य प्रकार के लेख देने का कष्ट करें जिसे हम उचित संशोधन करके छापने का प्रबन्ध कर सकें । लेख लिखने का भी इससे अभ्यास होगा । साथ ही स्वमार्गीय ज्ञान भी बढ़ेगा । वैष्णवों के सत्संग की चर्चा या रिव्यू भी आप दे सकते हैं या इन्टरव्यू भी दे सकते हैं । यदि लेख न भी छपें तो भी उदासीन न हों । अच्छे लेखों का स्वयं आदर होगा । साथ ही इस सेवा के वदले अभिमान न हो या स्मरण रखें अन्यथा आन्तर पतत की संभावना धार्मिक दृष्टि से हो सकती है ।

भवदीय
अध्यक्ष प्रचार विभाग
एच. एच. प्रथमेश
श्री वल्लभाचार्यनगर

उज्जैन २६-४-१९८०

वैष्णव बन्धुओं को सन्देश

आदरणीय वैष्णव बंधुओं

सादर आशीषः

मुझे मर्माहत पीड़ा हुई है कि हमारे कार्यकर्ताओं ने व्यवहार में शिष्टता की सीमा छोड़ दी है । यह महान खेद का विषय है कि हमारे जीवन में वैष्णवता का सच्चा संस्कार अपना उचित स्थान ग्रहण न कर सका । दीक्षा लेने पर भी हमारे व्यवहार और जीवन में एवं हृदय को स्वधर्मोपदेश स्पर्श तक नहीं कर सका । अव भविष्य में किसी भी प्रकार का आयोजन मेरे द्वारा करने की प्रेरणा नहीं दूंगा यह आज अंतःकरण से अनुभव हो रहा है । यह आत्मपीड़ा सहन करने की प्रभु मुझे सामर्थ्य प्रदान करेंगे । आप सभी के प्रचार विभाग की ओर से क्षमायाचना करता हूँ और यह विन्रम अनुरोध करता हूँ कि आप सभी सच्चे वैष्णव जीवन का महत्व समझने का प्रयास करें । मुझे खेद है कि निस्साधन शक्तिमार्ग का सही प्रतिनिधित्व एवं आचार्यश्री के मन्त्रवध की प्रस्तुत करने में सर्वथा विफल रहा

हूँ। आशा है मेरी अनेकों विफलताएँ आपको अन्तःप्रेरणा देगी जिससे आप भी अनुभव कर सकें कि हमारा स्वधर्म के प्रति निर्मल कर्तव्य क्या है और यह जीवन का एक भयंकर त्रुटिपूर्वपत्र भी कितना शिक्षाप्रद है । इस सरसभक्तिमार्ग का आप सभी हृदय से महत्व स्वीकार करेंगे । अच्छा होता कि हम सभी सच्चे वैष्णव होते शेष भगवत्-कृपा ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश
प्रथम पीठाधीश्वर वल्लभ सम्प्रदाय

समस्त पुष्टिमार्गीय वैष्णवों से श्रीमत्प्रथम पीठाधीश्वर जगदगुरु श्रीवल्लभ संप्रदाय का अनुरोध ।

वर्तमान समय में भगवत्सेवा के हेतु सेवा भावना वाले मुखिया आदि नहीं मिल रहे हैं अतः जो वैष्णव भगवत्सेवा करना चाहें और उसका प्रशिक्षण लेना चाहें वे हमारे संस्थान से सम्पर्क करें । इस कार्य के साथ यह आप सतत स्मरण रखें कि आप वैष्णव हैं आप स्वधर्म और प्रभु की सेवा कर रहे हैं । यह नौकरी नहीं है और न यह व्यवसाय है यह स्मरण रखेंगे तभी आप सेवा कर सकेंगे अन्यथा बुद्धि भी विकृत होने की सम्भावना है और जैसा पूर्व के सेवार्थियों का पतन हुआ है, ऐसा न हों, इस हेतु आप निवेदन का सतत स्मरण करें और सत्संग भावना पूर्वक करें यह सर्वदा स्मरणीय है । यह प्रशिक्षण विधिवत् दिया जायगा और अव इस आपातस्थिति के लिए वैष्णव जनों को तैयार होना पड़ेगा । यह हमारे धर्म की कसौटी का समय है और इस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना प्रभु के ही आश्रय से संभव है । खेद है कि आजतक हमने कार्यकर्ताओं का निर्माण और स्वधर्म की मौलिक समस्याओं को संगठित होकर नहीं सुलझाया । आशा है आप सभी विचार कर अपने सुझाव एवं इच्छुक व्यक्तियों के नाम भेजने का कष्ट करेंगे । शेष भगवत्कृपा ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

परिषद् के कार्यकर्ताओं से वल्लभसंप्रदाय के प्रथमपीठाधीश्वर का मननीय अनुरोध

हमारे परमवन्दनीय महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्य ने हमें जीवन में धैर्य रखने की आज्ञा प्रदान की है । धैर्य का स्वरूप का निर्देश करते हुए आचार्य श्री आज्ञा करते हैं कि त्रिदुःखसहवं धैर्य तीनों प्रकार के दुखों को सहन कराना और धैर्य रखना यही धैर्य का

स्वरूप है ।

मानव अपने स्वभाव से धैर्य को निभा नहीं सकता किन्तु जब वह सच्चे हृदय से किसी को स्नेह करता है तो सभी कुछ सहन करने की उसमें शक्ति आ जाती है । यह तभी होता है जब हमारे स्नेह में दैवीभावना हो । लौकिक स्तर से स्वार्थपर आधारित अनुराग से ऐसा संभव नहीं हो सकता । इसलिए आचार्यश्री ने भगवान् श्री हरि से अहैतुक प्रेम करने का आदेश दिया है । यह प्रभु प्रेम ही हमारे जीवन में भवताप से हमें मुक्त करता है इतना ही नहीं इससे बढ़कर उसी स्नेह से भगवदाश्रय भी हमें सहज ही प्राप्त हो जाता है । इस प्रणाली से यह सिद्धि भी सहज ही प्राप्त हो जाती है कि हम जिससे सच्चा स्नेह करते हैं उसमें दुर्गुण हमें दिखाई नहीं देते किन्तु लौकिक में तो उसके दुर्गुण भी गुणरूप में हमें प्रतीत होते हैं । यदि यही भावना हमारी स्वधर्म के प्रति हो और प्रभु से सच्चा स्नेह हो तो हमारे स्वधर्म की विशेषता और भगवत् प्रेम के कारण श्रीहरि की महती विशेषता का हमें सहज ही बोध हो सकता है और हमारी दोषदृष्टि इससे निवृत्त होगी ।

इस प्रकार हमारी दोषदृष्टि हटने से हमारा मन निर्मल होगा और हम आत्मीय भावना से अपने धर्म और भगवदाश्रय की विशेषता को समझने से और भी समर्थ बनेंगे । जब लौकिक स्नेह दूषण में भी भूषण दिखा देता है तो दिव्य प्रेम धर्म और श्री हरि में जो सर्वथा निर्दुष्ट हैं, महानता क्यों नहीं अनुभव करा सकता ? इस पर हमें विचार करना चाहिए । ऐसे ही हमारा समाज अपनी संस्था से स्नेह करे तो उसकी विशेषता को समझकर दूसरों को सदाचार और सद्विचार देने में समर्थ हो सकता है ।

हमारे कार्यकर्ताओं को, बुद्ध धर्म के प्रचारकों को भगवान् बुद्ध ने जो बातें पूछी, उनका सतत मनन विवेक धैर्याश्रय ग्रन्थ के आधार पर अवश्य करना चाहिए । श्री बुद्ध ने अपने धर्मप्रचारकों से पूछा कि जब तुम नगर में आओगे तो लोग तुमको गालियाँ देंगे। तब तुम क्या करोगे ? उन धर्म सेवकों ने उत्तर दिया कि हम यह समझेंगे कि हमें मारा नहीं जब यह उत्तर मिला तो उन्होंने फिर पूछा कि यदि कोई मारे तो क्या करोगे तब उन्होंने उत्तर दिया कि हम यह सोचेंगे कि हमें जान से नहीं मारा । इस पर फिर श्री बुद्ध ने प्रश्न किया कि यह भी हो सकता है कि कोई जान से भी मार डाले तो क्या होगा । तब उन शिष्यों ने धैर्य से यह उत्तर दिया कि ऐसा होने पर हम यह समझेंगे कि इससे हमारा धर्म तो उन्होंने नहीं छीना । इसी प्रकार प्रत्येक कार्यकर्ताओं और वैष्णवों को हमेशा सोचना चाहिए कि कहीं हमारा धर्म तो नहीं छिन रहा । आज के विषम वातावरण में हमारे प्रत्येक कार्यकर्ता को श्री हरिराय जी के बताए प्रातः स्मरण के साथ यह चिन्तन नित्य करना चाहिये और श्री यमुनाष्टक की फलश्रुति के अनुसार अपने स्वभावपर श्रीयमुना एवं श्री महाप्रभु के चिन्तन के साथ करना चाहिय । प्रत्येक परिस्थिति में कै भी समय हो पुष्टिमार्गीय भक्त कभी विचलित नहीं होता और महादुखदस्थिति में भी भगवदाश्रय से विवेक और धैर्य की सतत रक्षा करता है । हमें यह आत्म गौरव होना चाहिये कि हम समर्पितामा भक्त हैं,

जिसको प्रभु ने अपनाया है । जिस भक्त का भगवान् स्वयं वरण करें उसके आत्मबल और विश्वास को कौन हिला सकता है ?

जब भी हमारे सामने कठिन परिस्थिति आए हमें यह सबसे विचार करना चाहिए कि भगवान् हमारी किस भूल को सुधारने का वरदान दे रहे हैं । जैसे माता अपने बच्चे को दूध भी पिलाती है और साँप पकड़ने की जो जिद करता है तो उसे बलपूर्वक भी वहाँ से हटाती है भले ही बालक रोता रहे । ऐसे ही आचार्यश्री एवं भगवान हमें हमारे दोषों से बचाते और यथार्थ चिन्तन की प्रेरणा देते हैं । आशा है कि हमारे कार्यकर्ता धीरे-धीरे इस महान भावना का नित्य मनन करके जीवन की सभी समस्याओं का समाधान करके स्वधर्म सेवा करेंगे और कर्तव्य परायण बनेंगे । यही लौकिक और अलौकिक समस्या के समाधान और स्वधर्म सेवा की मूल भावना है जो हमें आचार्य चरणों की कृपा से प्राप्त हुई है और इसकी रक्षा करते हुए धर्म प्रचार भगवत्सेवा के साथ करें । अतः आशा है आप सभी इस पर विचार करेंगे । शेष भगवत् कृपा ।

समय आगया है

श्रीमान् अध्यक्ष जी. अ. भा. पु. वै. परिषद् आज यह समय आ गया है कि अ. भा. पु. वैष्णव परिषद् को अपने आचार्य कुल की रक्षा और उनके सन्मान के साथ जीवन जीने के साधन जुटाने होंगे ।

श्रीवल्लभाचार्य मन्दिर का निर्माण कराके वहाँ एक बालक रह सकें ऐसी व्यवस्था तथा दूसरे भी वहाँ प्रचारार्थ पधार सकें यह व्यवस्था करने से या किसी अन्यविधि द्वारा इस समस्या का समाधान किया जाय । यह आवश्यक है । इस समस्या को प्राथमिकता देना होगी । यह मूल की क्षति ही स्थूल को नष्ट कर रही है । इस विषय में परिषद् को क्या करना चाहिये यह सोचने के लिए एक वैष्णवों की सभा बुलाई जाय जिनकी निष्ठा संप्रदाय पर हो और इसका प्रवन्ध किया जाय आज जो भी समस्या है उसका मूल स्थान यहीं है । इस पर धर्माचार्यों को भी विचार करना चाहिये, साथ बैठकर सभी समस्याओं का समाधान करने से वैष्णवों को भी अपने भावनिवेदन का अवसर मिलेगा और इसका एक सही निराकरण हो सकेगा । आशा है इस पर विचार करेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

अपनों से आत्मीय अनुरोध

समस्त धर्मानुरागी वैष्णव वृन्द

आशीर्वाद

आज हमारे पुष्टिमार्ग (वल्लभ-सम्प्रदाय) को हमारी सेवा और संगठन की बहुत आवश्यकता है ।

स्थान स्थान पर कलह परस्पर राग द्वेष से समाज छिन्न-भिन्न हो रहा है । हम वैष्णव है और हमारा स्वधर्म क्या है और क्या करना चाहिए यह विचार गम्भीरता से नहीं किया जा रहा है ।

हमें महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य ने कृपा करके अदेय दान दिया है उसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है । यह तो सभी अनुभव करते होंगे कि धर्माचरण के बिना सुख, शांति एवं सामाजिक एकता नहीं आ सकती । राजनीति एवं अर्थ शास्त्र इस दिशा में विफल हो गये हैं । विज्ञान और शिक्षा का वर्तमान रूप भी चरित्र निर्माण तथा एकता नहीं ला सके ।

हिंसा, अनाचार से समाज में नियंत्रण समाप्त होता जा रहा है । आपसी विश्वास भी मानव खोता जा रहा है ।

इस परिस्थिति से आप सभी पूर्ण परिचित हैं । बहुत कुछ अनुभव भी किया होगा। इस लिये राजनीति के प्रपंच और अर्थ लोलुप बनने को अपेक्षा आप सभी वैष्णव अ. भा. पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद द्वारा संगठित होकर सेवा, समर्पण एवं अनुग्रह मार्ग का आचरण करके सदाचार से समाज को नई प्रेरणा और आत्म वल देने में समर्थ हैं ।

आपका त्याग स्नेह भावना और समर्पण का पथ ही आज समस्त विश्व का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हैं । हमें प्रभु का आश्रय एवं संवंध आचार्य कृपा से स्वतः प्राप्त है।

भगवान की शरणागति और उनकी सेवा तथा समर्पण से सभी प्राणी दोषमुक्त, पापमुक्त होकर भगवद भक्ति से यह लोक, परलोक सुधार सकते हैं ।

श्री हरि आपकी सेवा, स्नेह भावना, और संगठित धर्माचरण से प्रसन्न होंगे । श्री प्रभु आपकी प्रेम भरी दृष्टि से राह देख रहे हैं । सभी मिलकर उस भावात्मा भगवान की सेवार्थ तत्पर वने । उनका कार्य करें । यही श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य का दिव्य संदेश है।

राजकोट में अन्तर्राष्ट्रीय वैष्णव परिषद की स्थापना एवं सोमयज्ञ दिनांक २० से ३० अप्रेल ८१ तक होगा इस अवसर पर भारत तथा अन्य देशों का पुष्टिमार्गीय वैष्णव समाज एक होकर सेवा कार्य में तत्पर वने और अपने संगठन को त्याग और सेवा, समर्पण द्वारा

सशक्त बनाये यही एक मात्र मार्ग हमारे श्रेय एवं प्रेम का साधन है । मतभेदों को भुलाकर आप स्वधर्म की सेवा तन्मय बने यही अनुरोध एवं सदाग्रह है ।

जगद्गुरु श्रीमत्, प्रथम पीठाधीश्वर वल्लभ सम्प्रदाय

अ. भा. पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण करने पर आत्मीय निवेदन

श्रद्धेय आचार्यगण, आदरणीय विद्वत् मंडली एवं बन्धुओं

यह मेरा परम सौभाग्य है कि आज परिषद् के हीरक महोत्सव के अवसर पर हमारे संकल्प साकार होने जा रहे हैं । इस परिषद् का पुनःस्थापन परम भगवदीय अनन्याश्रयी श्री द्वारिकादास जी पारीख ने सप्तमपीठाधीश्वर श्री घनश्यामलाल जी महाराज की ब्रजयात्रा में किया था और उस समय पुष्टिमार्गीय वैष्णवपरिषद् को अखिलभारतीय स्वरूप प्रदान किया गया । भगवच्चरण प्राप्त मुन्तजिम वहादुर श्री गोपालदासजी झालानी के प्रधान मंत्री होने पर मुझे प्रचार विभाग का कार्य दिया गया और तव से आज तक यथाशक्ति इस पद पर रहकर उन्हीं की आत्मीयता का स्मरण करके यह कार्य श्रीआचार्यचरणों का स्मरण कर जैसा बन पड़ा यथामति करता रहा ।

आज जव यह संस्था अपना अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करने जा रही है इससे मन में अपार आनन्द का अनुभव होता है । मेरे जीवनकाल में ही यह शिशु अपनी सशक्त तरूणता प्राप्त कर रहा है । ऐसे आल्हाददायक समय में मैं मेरा कर्तव्य सार्थक हुआ, यह मानता हूँ जिन भक्त भगवदीयों ने इस संस्था की स्थापना की थी आज अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् द्वारा उन्हीं को यह संस्था पुनःसमर्पित हो रही है । श्रीमगनलालजी शास्त्री, श्री वाडीलाला एड्वोकेट एवं अन्य विद्वानों का पुनीत स्मरण करके मैं हार्दिक संतोष का अनुभव करता हूँ कि नित्यलीलास्थ भी पुरुषोत्तम लालजी महाराज कोटावाले तथा अन्य सन्निष्ठ कार्यकर्ताओं के वरदान का ही यह स्वरूप है, जिसका साक्षात्कार उनके अनुग्रह से हो रहा है ।

मुझे अपार प्रसन्नता है कि यह संस्था जिन भक्तों ने मुझे सेवार्थ दी थी आज उन्हीं को अर्पित की जा रही है । जैसे भावात्मा भगवान् ने अपने अनन्य सेवकों की वन्दना एवं सेवा स्वयं स्वीकार की थी ऐसे ही आज यह भक्तगण पुनःअपने कन्हैया को पूतना से बचाने सन्नद्ध हुए हैं । मेरा विश्वास है कि यह संस्था उत्तरोत्तर प्रगति करके अपने सत्यसंकल्प परिपूर्ण करेगी । आज जो दायित्व मुझे दिया गया था, उससे सानन्द सभी को समर्पित करके मैं स्वयं मुक्त एवं निश्चिन्त हो रहा हूँ । यह श्री वल्लभाचार्य और हमारे पूज्य चरणों का ही महान् आशीर्वाद का फल है । इस कार्यकाल में जो भी त्रुटियाँ हुई उनके हेतु क्षमा याचना करता हुआ सभी को भगवत्स्मरण करते हुए यही निवेदन करता हूँ कि आप के

द्वारा प्रदत्त सेवा के योग्य न होते हुए भी "अतुल प्रताप तनक तुलसीदल मानत सेवा भारी" यह भगवद् विवेक एवं आत्मीयता प्रदान की उसका चिरकाल तक ऋणी रहूँगा । आपकी वस्तु और यह आपका बालगोपाल पुनः आपके पास आ गया यही परमानन्द मेरे जीवन का आलोक रहेगा अन्त में इतना ही निवेदन है कि 'नीके राखि जसोदा मैया नारायण घर आयो' एवं 'तिहा रोधर सुबत सुनरी जसोदा या ढोटा को नातरूजिन बारखते' । यही कामना और आराधना है ।

हमारे जीवन में हमारा भाग्य फलीभूत हुआ है जो श्रीमहाप्रभु वल्लभ के प्रदर्शित अनुग्रह मार्ग के अनुसरण का शुभ अवसर हमें मिला और यह फल्योजन भाग्य पथ पुष्टि प्रगटन करने के रूप में आज सकल मर्यादा से मंडित अखण्ड भूमण्डलाचार्य व सेव के जन्ममहोत्सव एक पालन समय पर अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् की स्थापना हो रही है ।

ऐसे अलौकिक दर्शन करके हमारे नयन सफल हुए और जन्मकृतार्थ हुआ । आशा है, आप सभी अपनी इस अमूल्य निधि को सम्हाल के हमारा सौभाग्य बढाते रहेंगे सभी के प्रति विनम्र वन्दना करके मेरा वक्तव्य समाप्त करता हूँ और निश्चिन्तता का अनुभव करते हुए प्रभु से अनुग्रह का अनुनय करता हुआ विराम लेता हूँ । शेष भगवदनुग्रह ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश
प्रथमपीठ जतीपुरा, कोटा.

श्रीहरिः

श्रीमद् अनन्तश्री विभूषित प्रथम पीठाधीश्वर (वल्लभ संप्रदाय)
श्री प्रथमेश जी महाराज का समस्त वैष्णव बन्धुओं से अनुरोध

यह हमारा धर्म नहीं - धर्म का उपहास है ।

बम्बई, दिनांक १६-१२-८१

माटुंगा में धनिकों के वर्चस्व के आगे श्री वल्लभाचार्य के सिद्धान्त को तिलांजलि देकर वर्तमान तथाकथित आचार्य और बेटीजी महाराज धार्मिक क्षेत्र में व्यवसायि जैसी प्रतिस्पर्धा करने लगे हैं, यह धर्म की हानि है । सिद्धान्त के अनुसार यह धर्म नहीं है, न इसे आत्मसाधना का उपाय ही कहा जा सकता है ।

संपदा के आगे नतमस्तक होने के स्थान पर प्रभु और स्वधर्म के सामने माथा झुकाना कहीं श्रेष्ठ हैं । ऐसे धनिक बनकर प्रतिष्ठा जमाने की अपेक्षा तो वह मृत्यु श्रेष्ठ है जो श्री महाप्रभु के चरण चिन्हों पर चलते हुए उस दिव्य पथ उत्सर्ग से होती है ।

समझ में नहीं आता कि यह संस्पर्धा किसलिए है ? क्या उससे धर्म का प्रचार या वृद्धि होगी ? आचार्य श्री के सिद्धान्तानुसार तो धर्म का आचरण करने पर ही धर्म-प्रचार और स्वधर्म की वृद्धि होती है । श्री वल्लभाचार्य से लेकर आजतक के पूर्ववर्ती महापुरुषों ने ऐसा प्रदर्शन कभी नहीं किया । इतना ही नहीं धर्म के हेतु प्राणोत्सर्ग करने पर भी नहीं हिचके । श्री गिरिधर जी के चरित्र में तो यह बात प्रसिद्ध है कि एक रोज में जो भी आय होती थी वह सभी समर्पित कर देते थे । इस स्थिति में एक याचक अपनी पुत्री के विवाह हेतु पहुँचा तब श्री गोकुलनाथ जी ने आज्ञा की कि पहले हमारे बड़े भाई श्री गिरिधरजी के पास जाकर याचना करो फिर हम सहायता कर देगे । इस पर वह याचक गोकुल में बड़ी बैठक पर पहुँचा जहाँ श्री गिरिधर जी स्नान कर रहे थे और उसने याचना की उस वक्त आप श्री के पास कुछ देने को नहीं था तो अपना स्नान करने का तांवे का करवा उसको देने की आज्ञा की । इससे याचक हताश हुआ किन्तु सम्मान की दृष्टि से कपड़े में बांधकर श्री गोकुलनाथ जी के पास पहुँचा तब आपने आज्ञा करी कि श्री दादाभाई ने क्या दिया है ? यह बताओ । तब उसने उपेक्षा से उस करवे को कपड़ा खोलकर दिखाया । जब उसे देखा तो वह करवा स्वर्ण हो गया । यह देखकर याचक चुप रहा और श्री गोकुलनाथजी ने कहा कि अब इससे अधिक तुमको क्या चाहिये ?

ऐसा दिव्य जीवन इस मार्ग के आचार्यों का रहा है वहाँ उन्हीं के वंशज श्री प्रभु के लिए ऐसा खेल करके धनिकों को सच्चा मार्ग निर्देशन न दें इससे और क्या बुरा होगा ? भगवान के स्थान पर हुकुमत करने वाले इन धनपतियों के मुंह में खून लग गया है । इनका विनाश अवश्यम्भावी है और यदि धर्माचार्य इनके आगे संमर्पण करते हैं, तो उनका भी अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । यह श्री वल्लभाचार्य जी का वसीयतनामा या अन्तिम उपदेश है । यह सभी पर लागू होता है । ऐसे अनुचित कार्य की तो सपने में भी कल्पना नहीं की जा सकती ।

एक भगवान को हटाओ और दूसरे को बिठाओ क्योंकि उसके प्रतिष्ठापक उनको गुलाम बनाना चाहते थे और धन के वदले ईश्वर को खरीदना चाहते थे । धर्मशास्त्र के अनुसार किसी आचार्यविहीन देवालय को धार्मिक मान्यता नहीं है इसीलिए बड़े-बड़े राजाओं ने जो धर्मनिष्ठ थे, देवालयों को आचार्य और महन्तों को समर्पित किया था । यह कृष्णदेवराजा के इतिहास से भी स्पष्ट है । महाप्रभु ने वहां भी सात सोने की मोहरें लेकर सभी कुछ दान कर दिया । तव यह भगवान के नाम की भीख क्या शास्त्रसिद्ध है ? इस पर सेठों का कभी अधिकार होना ही नहीं चाहिये । यहाँ तक की इनकी व्यवस्था में भी धर्म की हानि होती है । मन्दिरों के स्थान पर श्री वल्लभाचार्य भवन, पुस्तकालय आदि वनाये जा सकते हैं जिससे धर्म ज्ञान में वृद्धि हो और वह भी आचार्यों के नियंत्रण से ही सफल हो सकेंगे ।

शवरस्वामी के मयूख, वैदिक धर्मशास्त्र तथा श्री वल्लभाचार्य के सदाचार एवं सिद्धान्त

से यह सर्वथा अनुचित है और ऐसे देवलक वृत्ति करने वाले आचार्य हो ही नहीं सकते, यह स्पष्ट हैं । इस प्रकार से तो गरीब रहकर जीवन बिताना ही श्रेष्ठ है । जहाँ वह परमप्रेमास्पद भगवान् अपना तो है । रूखा-सूखा खाकर भी प्रसन्न रहता है । यह वात पद्मनाभदास की वार्ता में भी प्रसिद्ध है । फिर यह कौन सी गरिमा है कि मन्दिर पर मन्दिर वनाये चले जाओ और चाहे वहाँ सेवा, सदाचार हो या न हो । धनपतियों को रुपयों से खेलने दो । चाहे वह अस्मत या ईश्वर और ईमान के साथ ही क्यों न खेला जा रहा हो ।

अतः इस तथ्य पर सभी से विचार करने का अनुरोध करता हुआ यह स्पष्ट करता हूँ कि इससे अनुचित अर्थ न निकालें । शब्द की कठिनता में द्वेष नहीं । अपनो से अपनी वात कहने की विवशता ही अभिव्यक्त हुई है।

आज्ञा है, सभी हृदय से सोचेंगे और निष्पक्ष निर्णय करेंगे ।

शेष भगवत्कृपा

भवदीय,
प्रथम पीठाधीश्वर श्री वल्लभ सम्प्रदाय प्रथमपीठ
कोटा (राजस्थान)

आवश्यक पत्र

श्रीमान् प. भ. वैष्णव जन,

आशीषः ।

आज यह स्पष्ट अनुभव किया जा रहा है कि वल्लभ संप्रदाय पर सुनियोजित आक्रमण हुआ है एवं हो रहा है ।

आप यदि परम्परा पर निष्ठा रखते हैं और यह चाहते हैं कि संप्रदाय सुरक्षित रहे तो आप इसमें सक्रिय सहयोग प्रदान करें ।

श्रीमद् वल्लभाचार्य के वालक जव तक अपनी गौरव गरिमा की सुरक्षा स्वयं नहीं करते और उनको संस्थाकीय रूप से प्रचारार्थ हम तैयार नहीं करते, यह साफ है कि यह पूरा ढांचा की समाप्त हो जाने की तैयारी में है ।

आप वैष्णव हैं तो इस पर विचार करके संगठन को वल पहुँचाने का स्वयं संकल्प करें ।

संप्रदाय के उत्कर्ष के हेतु हम चर्चा करना चाहते हैं अतः इनमें आप भाग लेने का कष्ट करें ।

आप यह हृदय से चाहते हैं कि श्री वल्लभकुल की परम्परा एवं सेवा मार्ग चिरस्थायी

रहे तो सक्रिय कार्य करना अत्यन्त आवश्यक है । आज इसका उच्छेद करने का व्यवस्थित योजना बद्ध काम किया जा रहा है ।

यह एक भयंकर षड्यंत्र है जो स्वधर्म का मूलोच्छेद करके वैष्णवों को भ्रांत दिशा में ले जाने की गहरी चाल है । अस्तु, हमें हमारे धर्म एवं धर्माचार्यों की गौरव-रक्षा करनी है तब हमें भी सुनियोजित कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करनी पड़ेगी ।

आशा है, आप इस विषय पर विचार कर हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे ।

नोट :---- अब यह आपको विचारना है कि आचार्य कुल की रक्षा करनी है कि नहीं ?

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्य प्रथमपीठाधीश्वर का सार्वजनिक अनुरोध

इस परिपत्र द्वारा सभी धर्मानुरागी जनों से यह अनुरोध किया जाता है कि आज तीस वर्ष हो गये स्वतंत्रता प्राप्ति को, किन्तु अभी तक गोवंश की हत्या पर प्रतिवन्ध नहीं लगा है । इस लिए भी विनोबा ने सौम्य सत्याग्रह प्रारम्भ किया है । यह सभी संप्रदायों द्वारा समर्थित है ।

वल्लभसंप्रदाय में तो गाय के विना हम भगवत्सेवा और अपने धार्मिक कार्य की कल्पना भी नहीं कर सकते । भगवान की यत्नप्रिय गाय और गोवंश के विना देश को वहुत हानि हो रही है । भगवान् श्रीनाथ जी का भी प्राकट्य गाय के विना नहीं हुआ और कीर्तन साहित्य तथा श्री वल्लभाचार्य से लेकर हरिराय जी के पश्चात् भी गाय की स्तुति और उनकी महत्ता अनेकों स्थानों पर प्रस्तुत की है ।

देश का कोई भी नागरिक जो भारतीय है और इस देश को पुण्यभूमि मानता है, गाय और गोवंश की हत्या सहन नहीं कर सकता। गाय भारत का जीवन है । कृषि संपदा और हमारे जीवन का गोवंश अभिन्न अंग हैं अतः इसके वध को तत्काल रोका जाय इस मांग को हमें पूर्ण समर्थन देना चाहिए ।

देवनार कतलखाने के पास सत्याग्रह नित्य हो रहा है और दिनांक २४ मार्च १९८२ को मौन जुलूस भी निकलेगा । इसमें समस्त वैष्णव जनता तन मन धन से सहयोग करे और सत्याग्रह में भी अधिकाधिक संख्या में लोग जुटें, यह हमारा दृढ़ अनुरोध है ।

जव तक गाय नहीं वचेगी देश में कभी भी सुख और समृद्धि नहीं होगी । जीव हिंसा का क्रूरकर्म अमानुषिक है । अतः आप सभी इस हिंसा को रोकने में अपना सहयोग देकर पुण्य लाभ प्राप्त करें । हमारे देश में प्रतिवर्ष एक करोड के लगभग गोहत्या हो रही

है । देश में खेती के लिए १४ करोड वैल चाहिए और आज उनकी संख्या केवल सात करोड रही है । अतः आप सभी मिल कर इसको रोकने में सहायता कर सकते हैं, और जुलूस में शामिल हो सकते हैं । साथ ही जो सौम्यसत्याग्रह करना चाहे वे हमारे परिषद् के कार्यालय में अपना नाम तथा पता देने का कष्ट करें । आशा है, वैष्णव जनता अपने कर्तव्य को पूरा करेगी और गोवंश की रक्षा में अग्रसर होगी ।

भवदीय,
गो. र. प्रथमेश
आचार्य परिषद्.

अ. रा. पु. वैष्णव परिषद् की शाखाओं को सूचनार्थ परिपत्र

इस परिपत्र के द्वारा यह सूचित किया जाता है कि आज हमारे आचार्य बालक परम्परा से बाहर जाकर सम्प्रदाय के लिए घातक षड्यंत्र करने का प्रयास कर रहे हैं और सम्प्रदाय पर वाहरी आक्रमण भी हो रहे हैं ।

उक्त सभी तथ्यों को देखकर परिषद् ने सम्प्रदाय के हित के लिए यह निर्णय किया है कि हमारी संस्था से आचार्य बालकों के प्रचार प्रवास कराये जावे । इसमें यह आवश्यक नहीं है कि सर्व आचार्य इससे सम्पन्न हो किन्तु आज अपूज्य पूजन को रोका नहीं गया तो सम्प्रदाय पर इसके घातक परिणाम होंगे ।

अतः आपसे यह अनुरोध है कि आप परिषद् की सम्मति से आचार्य बालकों के पधराना यह निर्णय करने का कष्ट करें और कौन बालक पधार रहे हैं इसकी सूचना कार्यालय को प्रेषित करें ।

आज इस नियंत्रण की आवश्यकता इसलिए भी है कि बहुत से बनावटी लोग गोस्वामी गायक वनकर घूमते हैं और अपप्रचार होता है । सम्प्रदाय की स्थिति हुए विषय में अत्यन्त करूणाजनक है । आज यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने स्वधर्म की रक्षा और सही प्रचार प्रसार की ओर ध्यान देकर संगठन के आधीन काम करे । हम आचार्यो पर नियंत्रण नहीं करना चाहते किन्तु उनकी गरिमा की रक्षा करने से सम्प्रदाय सुदृढ़ होगा। परम्परा से या मूल से हटकर किसी का अस्तित्व नहीं रहेगा । यही आज विषम स्थिति वैष्णव समाज में व्याप्त है इसका मूल कारण हमारी आचार्य परम्परा सशक्त नहीं है, यही है । हम उनके स्वरूप की रक्षा करके हो आत्मनियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं । संप्रदाय में अनुशासन की आवश्यकता का आप सभी अनुभव करते होंगे ।

आशा है हमारे इस परिपत्र पर ध्यान देकर अपना मत और पत्र प्राप्ति की स्वीकृति भेजने का कष्ट करेंगे ।

आज्ञानुसार
श्रीमत्प्रथमपीठाधीश्वर वल्लभ संप्रदाय
आचार्य परिषद् हेतु

आचार-विचार का लोप

वम्वई
दिनांक ८ अप्रेल १६८२

आज हमारे धर्माचार्य अपना और अपने संप्रदाय का गौरव संभालने में निष्फल रहे हैं । आचार, और संप्रदाय के सिद्धान्तों के ज्ञान की अपेक्षा वेश भूषा आदि सभी बातें तेजी से बदल रही है । माता-पिता और बड़ों का सम्मान अथवा उनकी परंपरा न लेकर मनमानी करने और अपने अज्ञान को संप्रदाय की जानकारी के रूप में प्रदर्शित करके उसे घर की परम्परा बताकर भ्रांति भी पैदा कर रहे हैं ।

अपने बड़ों को सम्मान से भोजन देने की अपेक्षा औरंगजेब की तरह उनसे व्यवहार करना और सामान्य गृहस्थ की तरह उनसे व्यवहार करना और सामान्य गृहस्थ की प्रणाली का अनुशासन भी उनमें नहीं रहा तब ऐसे बालक संप्रदाय का हित कैसे कर सकते हैं ।

सामान्य आधार की कमी और गौरव के स्थान पर एक अभिमान का आडम्बर ही शेष रह गया है । परस्पर निन्दा और अपने झूठे चाटुकार युवामित्रों से घिरे रहते हैं तथा प्राचीन वैष्णवों की और अन्य जनों की बात अनसुनी करके हंसी उड़ाते हैं । संप्रदाय में आज इनके द्वारा और वैष्णवों के द्वारा मनमाने सिद्धान्त भी चलाये जा रहे हैं और भावना का रूप लेकर संप्रदाय में हानि कर रहे हैं ।

छोटे वालकों के अध्ययन की व्यवस्था न करके उनका पूजन करना और उनका यज्ञोपवींत से पहले ही नहीं विवाह के पहले चरण स्पर्श देना आदि मार्ग की मर्यादा के विरूद्ध केवल भावना के आवेश में किया जाता है । साथ ही आचार्य पत्नियों को भी अपनी मर्यादा और नियम का ज्ञान नहीं है ।

आचार, विचार का लोप और धर्म शास्त्र की मर्यादा का विधिवत् पालन नहीं हो रहा है । सेवा स्मरण के स्थान पर वैष्णव हितकारी बनकर उनके सामने निन्दा और उपहास का ही वातावरण रखते हैं । स्वयं भी गो बालक समाज में किस प्रकार आ रहे हैं यह सभी को जानकारी है । ऐसी स्थिति में आचार्यों को मान्यता कहाँ तक दी जाय

यह प्रश्न विचारणीय है । मेरे विचार से आज हम लोगों को मानने की अपेक्षा हमको योग्य बनाने का कार्य और आचार्यों की गरिमा और गौरव की रक्षा कैसे हो इसके उपाय करना जरूरी है । मुझे वार-वार लिखने से भी संकोच होने लगा । सभी निरर्थक उल्टा अर्थ कर रहे हैं ।

मन्दिर या भागवत् और पवित्र धाम दुकानदारी हो गये हैं । धर्म की इनसे रक्षा कैसे संभव है यह विचारें । संप्रदाय का प्रशिक्षण और सिद्धान्त का ज्ञान नहीं के बराबर हैं । स्वयं वैष्णव समाज आचार के पालन की वात तो और है ज्ञान तक नहीं रखते । आचार्य भी आचार्य का उपहास करते हैं तव उनमें आचार्यत्व कैसे है । प्रचार और धर्मोपदेश के स्थान पर और ही प्रकार का वातावरण रहता है । आज के समय में उनसे अपेक्षा उनका ही धर्म रखता है उसकी पूर्ति नही कर पाते तो अन्य बातों की आशा ही क्या की जा सकती है क्या मर्यादा का उच्छेद ही आचार्यत्व है ।

समाज में भ्रम हो रहा है और सभी अपने अपने दल बनाकर अपने मतलब की चिन्ता कर रहे हैं । दलवन्दी एक ही धर्म में आचार्यों के पीछे हो रही है । यह भी दास्य भावना की अपेक्षा मित्रता के नाम पर यह सब होता है ।

अव समय आ गया है जव हम अपनी परम्परा पर विचार करके व्यवस्था करें । संपत्ति ही सव कुछ नहीं है जिसकी व्यवस्था में पूंजीवादी और आचार्य लगे हैं । रक्षा और व्यवस्था सेवा, सदाचार, सिद्धान्त की होनी चाहिए यह मेरा दृढ़मत है । आशा है समाज इस पर ध्यान देगा ।

वेनुराजा जैस स्थानच्युत आचार्य अपना आचार्यत्व दर्शा रहे है जव कि उनको हटा दिया गया था और परम्परानुसार वे आचार्य कभी रहे नहीं । वैष्णव वेद आदि शास्त्रों की वात करके पूछते हैं कि क्या यह पुष्टि है । तो मेरा यह प्रश्न है कि क्या आपका आचार और विचार पुष्टि है ? सोचने का कष्ट करें । और क्या श्री वल्लभाचार्य ने वेद विरोध किया है । गाय, देवता, आचार्य और पूज्यस्थानों पर हुकूमत करने वाले उस परम्परा को जानते हैं । पैसा पैदा करने के लिए सब कुछ करना क्या योग्य है ।

यदि आचार्य अपनी गरिमा और गौरव नहीं संभाल सकते और आप भी उनकी मर्यादा और आचार्य नहीं रख सकते तो यह दिखावा क्या है ।

बाबा बनते ही अभिमान और पूज्य जनों का अनादर और दलवन्दी करना तथा संप्रदाय और संगठन की उपेक्षा करना तथा दिनभर उनके बच्चे चड्डी "निकर" पहने फिरेंगे तो क्या ऐसे बालक संप्रदाय की रक्षा करने में समर्थ होंगे । पिपरमेंट चाकलेट आदि का उपयोग करके असमर्पित वस्तु का सेवन करना कितना ठीक है । फ्राक आदि वस्त्र का धारण और फैशन की तथा सिनेमा आदि की वंशावली जानकर अपनी वंश परम्परा भुलाकर कन्यायें और निन्दक दल क्या करना चाहता है यह बताने का कष्ट करें तो मार्ग पर उपकार

होगा ।

मैं नहीं चाहता कि वैष्णव समाज अपूज्य पूजन करे । हमारी पूजन करने की अपेक्षा आचार्य के आचार और सिद्धान्तों की अर्चना करिये । तभी संप्रदाय की रक्षा और लोककल्याण होगा । आज ऐसे अनेक पक्ष संप्रदाय के घातक हैं और धर्माचार्य चुप हैं । साथ ही वैष्णव भी स्वहित में निरत हैं । क्या यही कर्तव्य की ओर धर्म की परिभाषा है। विचार करें ।

गोस्वामी परिषद् या आचार्य परिषद् भी इसी विषय में कुछ न करे तो उसका संप्रदाय में क्या उपयोग है । जब कि यज्ञोपवीत के बिना आपके आचार्य बालक दीक्षा नहीं देखते तो वेद की निन्दा और आलोचना का क्या अर्थ है ? आचार्य ने तो वेद विरोधियों का मुख भी नहीं देखा । और उनसे शास्त्रर्थ किया तब वैष्णव पुष्टि से वेद निन्दा करने का कैसे अधिकारी है । यह आप सही वैष्णव या आचार्य रहे हैं अगर नहीं तो पदत्याग करके नई स्वस्थ परम्परा बनाइये । यही सच्ची सेवा होगी । भगवान् के आगे चाँदी या रुपये फैक कर कौन सी सद्‌गति की आशा करते हैं और वह कैसे प्रमाणित है । आशा है ध्यान देंगे।

भवदीय,
प्रथमेश

गो सेवा

श्रीहरिः

स्वस्ति श्री मदाचार्य वर्य्येषु

अपने भारत देश में गाय -बैल कट रहे यह सर्व-विदित है । देवनार बूचड़खाने में उपयोगी बैल कटने के लिए आते है, आपको पता है ।

इस प्रकार अपने देश में बैलों की कमी होती जा रही है ।

गोपाल -कृष्ण की इस भूमि में गौमाता का रक्त बहे, यह चिन्ता का विषय है । सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने ७-८ माह देवनार बूचड़खाने पर सत्याग्रह चालू कर रखा है । अभी-अभी जैन साध्वी प्राति सुधाजी ने देवनार बूचड़खाने पर १०,००० लोगों के प्रदर्शन का नेतृत्व किया ।

क्या गाय-बैल की हत्या रोकने के लिए हम लोग भी कुछ करेंगे ?यदि कुछ करना हो तो आगामी गोपाष्टमी पर ५० हजार वैष्णवों का एक प्रदर्शन हम लोग भी देवनार बूचड़खाने पर करे। इस कार्य के लिए आपको स्वयं समय देने होगा और आपकी शिष्य मंडली को इसमें जुटाना होगा ।

आशा है आप सबको यह विचार पसंद आयेगा । हमें इसे कार्यान्वित करना ही

चाहिए । गौमाता की रक्षा के लिए यह ऐतिहासिक प्रदर्शन भी भगवान की सेवा ही होगी।

आशा है परिस्थिति की गंभीरता को हम समझेंगे ।

कृपया आपके विचार हमें लौटती डाक से अवश्य ही लिख भेजें ।

भवदीय,

गोस्वामी रणछोडाचार्य "प्रथमेश"

अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद की शाखाओं को भ्रमणशील परिपत्र

इस पत्र के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद की सभी शाखाओं को सूचित किया जाता है कि आपके यहाँ होनेवाले कार्यक्रमों की सूचना जैसे केन्द्रीय कार्यालय में देते है ऐसे ही हमारे बुलैटिनों को भी देने का कष्ट करेंगे ।

कोई भी संप्रदाय से संबंधित समाचार हो उसके समाचार वैष्णव जगत में जाने से परस्पर संगठन की भावना के साथ धर्मकार्य में उत्साह बढेगा ।

साथ ही इससे वैष्णव जनता को परस्पर सहयोग करने में भी सफलता मिलेगी, जिससे किसी को कहीं जाना या ठहरना हो तो उसे स्थान या परिचय भी प्राप्त हो सकते।

यह आवश्यक है कि आचार की रक्षा करने के हेतु तथा वैष्णव को ठहरने के लिए जहाँ तक सुविधा हो उपलब्ध कराई जाय और हमारे सदस्य परस्पर मेलजोल बढायें । यह अभिमान काम का नहीं कि मैं किसी के क्यों जाऊँ ।

शाखाओं को वैष्णव आवास के लिए प्रबंध करना चाहिये । यह हमारा सबसे पहला सक्रिय काम है प्रशिक्षण शिविर भी लगाने चाहिये जिसमें सिद्धान्त , आचार और सेवा का प्रशिक्षण भी दिया जाय ऐसा आयोजन क्षेत्रीय स्तर पर शाखायें कर सकती है । यह काम स्कूल के अवकाश के समय अथवा अन्य सुविधाजनक अवसर पर किये जा सकते है । आशा है, आप अपना संपर्क सीधा कार्यालय से रखने का कष्ट करेंगें, जिससे सभी को निर्देश प्राप्त हो सकें । पूज्य श्री प्रथमपीठाधीश्वर को भी यदि परिषद के काम से पत्र लिखना हो तो ऐसा पत्रव्यवहार कार्यालय द्वारा किया जाना उचित है जिससे कागज और सुरक्षा के साथ ही विवरण भी सुरक्षित रहे ।

आचार्य श्री का भ्रमण इधर उधर होने से कभी कागज भी न मिल पाने से गडबड होने की संभावना है ।

व्यक्तिगत पत्रव्यवहार आप सीधे कर सकते है । कोई भी संस्था आज संगठन के विना नहीं टिक सकती । ऐसे ही संप्रदाय की स्थिति है । यह दुखः का विषय है कि आज संगठन तोडने का प्रयास किया जा रहा है और इसमें हमारे ही लोग सक्रिय है । इन सभी वातों को आप समझ कर निर्णय करने का कष्ट करें

धर्माचार्यों की परम्परा भी अव अस्तव्यस्त हो रही है और उनके अनुयायी दामोदर

दास या वल्लभाचार्य बनकर विचित्र वातावरण का सर्जन कर रहे है । इससे संप्रदाय की मर्यादा और परम्परा नष्ट होने के साथ अनुशासन समाप्त हो रहा है । अतः इस पत्र के द्वारा सूचना देने के साथ ही हम फिर संगठन की अपनी अपील की याद दिलाते है ।

प्रथम पीठाधीश्वर की आज्ञानुसार ,

कार्यालय सचिव के भगवत्स्मरण

जेष्ठाभिषेक के पुनीत अवसर पर विचारणीय परिपत्र

संप्रदाय की गंभीरतम स्थिति और अन्य पक्षों पर विचार करके इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हमको आचार्यों की समस्या और उनको जीवनस्तर पर गंभीरता एवं सावधानी से विचार करने का यह अंतिम निर्णायक समय है ।

वर्तमान स्वरूप को किस अंश और कहाँ तक निभाया जाये तथा इसका भावी पर क्या प्रभाव होगा यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है । यदि हम स्वयं इसका स्पष्टीकरण नहीं करेंगे तो समय की स्थाति बाधित होकर जो निर्णय आयेगा वह संप्रदाय के हित में महान ही घातक होगा । जो कुछ भी कल्पना आज आचार्य वंशज कर रहे है । एवं अपने स्वार्थों की टकराहट में जैसा जीवन वीता रहे और जिस मार्गों पर जा रहे उसको देखते हुए शुभ परिणाम और शुभदिन की आशा करना सर्वथा अस्थाने है ।

मकान गिरने पर उसमें से निकलना और एक सावधानी से हटाने का विचार करना इसमें बहुत अंतर है । आज आचार्य बालक यह विचारने की क्षमता नहीं रखते । यह एक सही हकीकत है कि इनके जीवन का संप्रदाय पर घातक प्रभाव पड रहा है । आचार्योचित गरिमा को बपौती की भांति विरासत में पाने के लिए विशिष्टता की आवश्यकता है । वाहरी प्रतिष्ठा भी जो नहीं संभाल सकते और तनिक भी जहाँ शिष्ट व्यवहार नहीं हैं। चाहे वह दिखावा ही क्यों न हो , जव उसकी यह स्थिति है, तब आचार्य की गरिमा और गौरव की बात तो दूर की है ।

मैं यह स्पष्टता चाहता हूँ कि यह कब तक और किस प्रकार निभाया जाये । इसके भावी परिणाम क्या होंगे? वैष्णव समाज के सामने भी यह विचारणीय प्रश्न संप्रदाय की दृष्टि से है किन्तु वह मौन है और उसका यह मौन सार्थक है । रहस्यमय है । क्या यह स्वधर्म और आचार्य के प्रति निष्ठा का परिचायक है ? इसे महत्वपूर्ण प्रश्न समझ कर विचारने में ही श्रेय है । जो कुछ समझा और दिखाया जा रहा है उससे वह सर्वथा भिन्न है ।

यह एक ऐसा प्रयास और भक्ति का प्रदर्शन है जिसमें मृत्यु एवं विनाश को भावना की आड़ में सहन करके स्वीकार किया जा रहा है ।कुछ आचार्य बालक यह समझते हैं कि जव तक ऐसा चलता है इससे लाभ लें । कुछ यह घोषणा स्वाभिमान करते हैं कि

हमको आचार्य नहीं रहना है ।

प्रश्न यह है कि क्या इसके विना अन्य उपाय है और उसे आप स्वीकार करते है तो क्या संप्रदाय की इस स्थान की गरिमा और भावी पर विचार कर कदम नहीं उठाना चाहिये ।

जहाँ ऐसा स्वाभिमान हुआ है और हो रहा है उसके क्या परिणाम निकले हैं ? यह सभी सोच सकते है और समझ सकते है कि वहीं आचार्योचित गौरव और गरिमा कहाँ रह सकी है । मुझे सभी से यह निर्णय चाहिये कि वल्लभाचार्य और उनके मार्ग का हित देखकर क्या व्यवस्था की जाये । यदि समय पर समाधान नहीं मिला तो दिशा -विहीन मार्ग के भटकाव से बहुत बुरे परिणाम आना असंभव नहीं हैं । इस पत्र के द्वारा में स्वधर्म के हित की दृष्टि से आपके विचार लिखित और व्यवस्थित रूप से आमंत्रित करता है । जिससे संप्रदाय के हित में यथासमय कदम बढाया जा सके । इसमें यह मानने का कोई कारण नहीं है कि मैं अच्छा हूँ अथवा यह प्रतिष्ठार्थ प्रश्न किया गया है । मैं सर्वथा उचित और संप्रदाय की निष्ठा के साथ सद्‌भावना पूर्वक समाधान चाहता हूँ ।

इसी प्रश्न पर हमारे धर्म एवं कर्म का भावी निहित है । आप अपने विचार निस्संकोच लिख सकते है । और यदि भय हो तो नाम नहीं देंगें तब भी चलेगा किन्तु संप्रदाय और उसकी परम्परा पर आपकी दृढ़ निष्ठा से विषैले वातावरण में विशेष विचार अपेक्षित है । सभी को आत्मीय मानकर ही यह प्रश्न किया है । यह हमारे धर्म और उसके अस्तित्व का प्रश्न है ।

न यह स्तुति है, न निंदा और न वनावट है । यह सहज और स्वाभाविक बात है । यदि आपमें कर्त्तव्य की भावना का अंशमात्र भी बचा है तो महाप्रभुजी की गरिमा का स्मरण करके मुझे अपना मानकर विचारों में सहायता करने का कष्ट करें ।

आचार्य मुख से आज्ञा करते है कि "अभयं तेन कर्त्तव्यं " यह ब्राह्मण और स्वधर्म के विचारक की एक मात्र गति है । आशा है, समप्रदाय को दुर्गति के गर्त से बचाने के लिए आप इस पर विवेक एवं गंभीरता से सोंचेंगे । यह प्रश्न सभी दृष्टि से हमारे मूल से जुड़ा है । अतः इस पर विचार करने का पुनः स्मरण दिलाता हूँ । इतना ही नहीं सक्रिय विचार और सहयोग की अपेक्षा भी करता हूं, जो अस्थाने नहीं है । आशा है, आप इसको सरलता से ग्रहण करके विचार में सहायक वनने का, स्वधर्म के लिए, कष्ट करेंगे। शेष भगवत्कृपा ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

समस्त विचारक वैष्णवजनों

आपको ही अब सोचना है कि संगठन करके शुध्दबुद्धि से धर्मरक्षा करनी है या नहीं ।

धार्मिक जीवन निष्कपट और सहज जीवन है इसीलिए श्रीमद वल्लभाचार्य ने 'वैष्णवत्वम् तु सहजै' ऐसा निर्देश किया है ।

हमारा समाज आज ईर्ष्या, द्वेष तथा कलिदोष से ग्रस्त है । धर्माचार्य शिखा भी रखने का आग्रह नहीं रखते न उनकी स्नान के बाद तिलक आदि धारण करने का आग्रह है ।

कुछ तो परम्परा का भी त्याग कर चुके है । ऐसा स्थिति में हमारे मूल पर ही कुठारा घात है ।

जहाँ तक संप्रदाय की स्थिति है उससे सभी परिचित हैं । हमारी यह मान्यता कि संप्रदाय पाँच सौ वर्ष ही रहेगा, इसका आचार्यवाणी में उल्लेख नहीं है । जैसे नदी के प्रवाह में परिवर्तन होता है ऐसे ही कुछ परिवर्तन बाह्य प्रकार में होता ही आया है अतः उससे यह कल्पना करके आत्महत्या नहीं की जा सकती है ।

संप्रदाय को व्यवस्थित करना ही आज हमारा सबसे पहला कर्तव्य है वह वैष्णव परिषद से ही संभव होगा । अन्य कल्पना निरर्थक सिद्ध होगी, यह सुनिश्चित है । इसका कारण स्पष्ट है कि यह युग बिना संगठन के काम करने का नहीं रहा ।

मेरे विचार से धर्म और धर्मी में भेद आचार्यश्री स्वीकार नहीं करते यह चतुश्लोकी की टीका से स्पष्ट हो जाता है । अतः परिषद् और संप्रदाय का काम भिन्न नहीं है । यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । जो लोग व्यवस्थित हित की दृष्टि से परिषद को हानि पहुँचा रहे हैं उनका कार्य आदरणीय नहीं हैं । धर्मनिंदा या अन्य आक्रमण का उनसे प्रतिकार भी संभव नहीं हुआ । केवल वासना को रस मानकर अपना स्वार्थ का पोषण करके संप्रदाय की बरबादी की जा रही है ।

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान आचार्य बालक संप्रदाय को व्यवस्थित संगठन प्रदान कर सकेंगे । साथ ही क्या वे अपना जीवन गौरवमय रखकर हमारा मस्तक सुशोभित करेंगे । यदि ऐसा नहीं होता तो यह गंभीर समस्या हैं ।धर्माचार्यों के बालकों की कुछ मान्यतायें विचित्र है । अब यह हमारा कर्तव्य है कि सभी स्थिर बुद्धि से शांतचित्त होकर अपने संगठन को दृढ करके श्री हरि, श्री गुरू, श्री वैष्णव सभी की सेवा के लिए तत्पर बनें ।

अब हमको अपने आचार्य परिवार के सदाचार और उनके गौरव की रक्षा भी भक्ति भावना से करनी होगी । यह हमारी भक्ति और धर्म की परीक्षा की घड़ी है। आज

उदासीनता किसी भी प्रकार से उचित नहीं हैं । जिससे जैसा बने संगठन के काम में जुट जाना चाहिए । परस्पर लौकिक बुद्धि से कलह करना और मत्सरता से चिंतन भी अशुद्ध होता है और जीवन भी बिगड़ता है ।

आज एक संस्था शुद्ध बुद्धि से काम करे तो हजारों वैष्णव लाभान्वित हो सकते है। लाखों परिवार सन्मार्ग पर चलकर उन्नति कर सकते हैं जिसमें वह लोक और पर लोक दोनों का साधन होता है । क्या आज की स्थिति में यह आचार्य बालकों का रहन सहन और व्यवहार धर्मानुकूल है ? और इस स्थिति में जो कुछ देखा जा रहा है इससे तटस्थ रहकर हमारा कर्तव्य पूरा हो जाता है मेरे विचार से यह धर्मघात है ।

हमको किसी निर्णय पर पहुँच कर व्यवस्थित करनी होगी । किसी भी स्थिति का सामना करना होगा यह काम अकिंचन जन ही कर सकते हैं जिसमें त्याग करने की शक्ति हैं ।मिथ्या प्रतिष्ठा से पीडित जन इस सेवा के योग नहीं है । उनकी तो धर्म में आस्था होने पर भी समय का अभाव और आलोचना से अवकाश नहीं हैं ।

जब हमारे आचार्य बालक ही अभिमान से पीडित और संदाचार से दूर होते जा रहे हैं तब औरों से क्या आशा की जा सकती है

आपके मन में भगवान प्रेरणा करें तो आप इस विषय में सोचें और सच्चे हृदय से यथा शक्ति संगठन की सेवा करें ।

यह सदा स्मरण रखें कि लौकिक बुद्धि और चालाकी करना धर्मद्रोह होगा और उसका कुफल आवश्य भोगना पडेगा ।

आज भी धर्म की उपेक्षा करके हम परिणाम भोग रहें हैं । लौकिक दृष्टि से काम करने पर हमारा मन और तन दोनों ही विगड़े हैं शुद्ध विधाय हृदय यह श्रीहरिरायजी का वाक्य केवल भगवान के अंतकरण में पधारने तक सीमित नहीं हैं संस्था में भी यही भावना होनी चाहिए ।

सर्वत्याग के उपदेश महाप्रभु के मार्ग की रक्षार्थ हम लोगों को भी त्याग करना चाहिए, संसार की व्यामोहक बुद्धि और चतुरता भले ही हमको बुद्धि मान साबित कर दे किन्तु उसका कोई महत्व इसलिए नहीं है कि हमारे समाज का निरंतर सभी दृष्टि से पतन होता जा रहा है । नैतिकता या परस्पर सौही देती कही दिखाई नहीं देता । बाहरी शिष्टाचार से अन्तर का कोई संवंध नहीं है और कृत्रिमता से सभी पीडित हैं ।

आपसी विश्वास की कमी भी हानि कारक है । अतः आप सभी अपना मन लगाकर भगवदाश्रय से संघटन करें और सहन भी करके परिस्थिति का सामना आश्रय से विवेक द्वारा करें । श्रीमहाप्रभु आपको सेवार्थ सामर्थ्य और शुद्ध भावना प्रदान करें, उस प्रार्थना के साथ विचार करके कार्य होने का अनुरोध है ।

प्रथमेश

कृष्ण वन्दे जगद्गुरुम्

श्रीहरिः शरणं मम श्रीहरिः शरणं मम

जय स्वधर्म, जय श्रीकृष्ण, जय श्री महाप्रभु

सत्याग्रह की रुपरेखा

सभी स्थानों से नामों की सूची तैयार करके उसको व्यवस्थित किया जाय तथा नित्य नाथद्वारा में एक मण्डप मोटर स्टेन्ड के पास लगाकर, वहाँ नारे और अपनी माँगे लिखकर, उसमें कार्यकर्ता बैठ कर श्रीकृष्णाश्रय का पाठ करें और धर्मरक्षार्थ स्तोत्र पाठ, नारायण कवच, पूतनामोक्ष और गजेन्द्रमोक्ष पढ़े । नित्य पाँच व्यक्ति प्रातः से सांय तक यह अनुष्ठान करेंगे ।

उनके रहने और प्रसाद का प्रवन्ध एक स्थान पर होगा । आने-जाने वालों को पर्चें दिये जायेंगे । उनको साइक्लोस्टाइल कराया जाय तथा टेम्पलबोर्ड को भंग कर नवगठन की माँग की जाय ।

बम्बई से जाने वाले सत्याग्रही यहाँ से जावेंगे । अन्य स्थानों से आने वालों की तिथियाँ निर्धारित करनी चाहिये । इस अवसर पर धर्म प्रचारार्थ मैं स्वयं दांडीकूच कर सकता हूँ । जिनको मेरे साथ चलना हो उनको यह समझा कर चलना है कि हर प्रकार का कष्ट सहने की उनमें भावना होनी चाहिये और ऐसा करना भी होगा ।

मैं उन शुभ चिन्तकों से, जो मेरे सहयोगी रहे हैं, उनको यह सूचित करना चाहता हूँ कि वो मेरा घर, जो कि संप्रदाय की सेवा का धाम है, संभालें और मैं व्यवस्था नहीं कर सकूँगा । इससे श्रीमहाप्रभु और प्रभु को सेवा में श्रम न हो, इसका ध्यान रखें ।

धर्म त्याग और उत्सर्ग चाहता है, हमारे निकम्मे जीवन की और इससे सार्थक, सुनहरी घड़ी हमको नहीं मिल सकती है । जो वैष्णव इसमें भाग लें उनके परिवार को भी वैष्णव मिलकर संभाले इससे भक्तिमार्गीय परिवार का निर्माण होगा ।

दूसरा हस्ताक्षर अभियान गुजरात सरकार के विरोध में भी श्रीनाथद्वारा से ही प्रारम्भ किया जाय, क्योंकि परिषद् का प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष उसी स्थान से प्रारम्भ हुआ था । आचार्य वालकों से भी आशीर्वचन मँगाने का कष्ट करें । गृहप्रवेश के बाद मैं सोमयज्ञ तक अपना समय समर्पित करुँगा । इसमें यदि कहीं उत्सर्ग हुआ तो वैष्णव जन जो भी हों वो मेरा संस्कार सामान्य रूप से श्रीमहाप्रभु और उनके प्रिय प्रभु को स्मरण करते हुए कर दें । यह केवल भावुकता के लिए नहीं, संभावना पर विचार करके लिखा है । विजया-दशमी के वाद जन-जागरण अभियान प्रारंभ किया जाय । जिसमें स्वधर्म का महात्म्य और उसकी उपयोगिता तथा संगठन के लिए लोगों को प्रेरित किया जाय । किस शाखा से कौन इस धर्म-सेवा में आने को तैयार है, उनकी सूची भिजवाने को लिखा जाय।

हमारा सत्याग्रह और प्रचार-अभियान धनिकों की थैली पर नहीं चलेगा । यह स्मरण रखें। इसमें बलिदान की भावना हो, यह आवश्यक है, जिससे दृढता आवेगी । शेष फिर स्पष्ट करुंगा ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

श्री हरिः

बम्बई,
२० सप्टेम्बर, १६८२

श्रीमद् वल्लभाचार्य वंशावतंसेषु श्रीमद् गो. महाराज्ञेषु । प्रणामांजलि-आशिषादि यथोचितम्

सेवा में निवेदन है कि आज संप्रदाय में आचार्य बालक जो उचित प्रणाली से नहीं रह रहे और जिनके द्वारा सभी समाज की आस्था उठ रही है । इस विषय में आपसे यही निवेदन करना है कि आप सेवा-परायण होकर प्रवचन, सत्संगादि द्वारा श्रीमहाप्रभु की धवलकीर्ति का विस्तार करें ।

संप्रदाय के विरूद्ध भावना भड़काई जा रही है और आचार्यों पर छींटाकशी हो रही है । इस विषय में आपको जाग्रत होने का निवेदन अस्थाने नहीं है । संप्रदाय की संस्था परिषद्, आपका यही आशीर्वाद चाहती है । विरोधियों को तभी सही उत्तर दिया जा सकेगा । युवाशक्ति को भड़काने और अधार्मिक बनाने में ये हथकन्डे काम में लाये जा रहे हैं । हमारा प्रतिकार आपके बल से ही होगा और जो सफलता है वह आपके अनुग्रह पर निर्भर है । आशा है आप सानन्द विराजते हैं । सेवा से सूचित करें । शेष आप के द्वारा भगवत्कृपा एवं इस मार्ग की रक्षार्थ सामर्थ्य की प्रार्थना है ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः
(नायमात्मा बलहीनेन समृ्यः)

श्रीमान् महामन्त्रीजी

अ. रा. पु. वैष्णव परिषद्

पत्र मिला । विशेष निमन्त्रण पत्र के उपरान्त भी यह उचित है कि वैष्णव समुदाय और कार्यकर्ता अपनी संस्था की उन्नति और संगठन के वारे में स्वयं विचार करके समाज को संगठित करे । मेरे विचार से आज तक विना गोस्वामियों के कुछ नहीं होने से ही यह समाज खण्डित होकर पिछड़ गया है ।

श्री द्वारिकाप्रसाद की पाटोदिया के इस सद् प्रयास से, पहली बार ही यह अवसर आया है, और इसका पूरा लाभ वैष्णवों को तभी मिलेगा जब वो अपनी संस्था के लिए स्वयं जाग्रत होंगे । मेरी वर्षों से यह साघ रही है कि ऐसा कार्यकर्ता वर्ग तैयार हो । यह वात श्रीमगनलालजी शास्त्री के समय में थी और वाद में इस प्रथा में क्रंमिक हानि आने लगी और आज सर्वथा समाप्त हो रही है । जव यह फिर से जाग्रत हो रही है तव आप इसमें हमारा अडंगा क्यों लगाते हैं ।

इस धर्म को अब तो पनपने दीजिये । आज तक इन आचार्यों ने इस संस्था को कुचल कर भी अपने धर्म की उन्नति की हो या आक्षेपों का जवाव दिया हो तथा जनता में आत्मविश्वास पैदा किया हो ऐसा दिखाई नहीं देता । स्वार्थ आता है तो संगठन की बात करते हैं और आप इनको प्रधान मानकर ही चलना चाहते हैं । यह निस्सन्देह है कि हमको आचार्य की आवश्यकता हमेशा परम्परानुसार और धर्म रक्षार्थ रहेगी किन्तु फिर भी क्या मिला है ?

भीतर कुछ और बाहर कुछ ऐसी इन गोस्वामी वालकों की नीति है । यह दोहरी चाल कब तक काम देगी ? क्या यह आचार्य वंश के लिए अच्छी बात है ? मुझसे यह सहन नहीं होगा और मेरे कारण संस्था को इनका ऊपरी सहयोग भी नहीं मिलेगा अतः आपको संस्था का हित देखना है । इसी में संप्रदाय का हित है और समाज का हित भी इसी में निहित है । नाम कमाने की लालसा में अलग-अलग काम करके संप्रदाय की प्रतिष्ठा चौपट करने वालों को कव तक सहन किया जाएगा ? हृदय चीत्कार करता है । अब अधिक व्यथा सहने की मेरी सामर्थ्य नहीं है । शरीर का कष्ट हो तो और बात है । कितना कपट करें और सावधान रहें ?, केवल इस संस्था और संप्रदाय को बचाने एक लिए यहाँ अध्यक्षाजी के विचार भी देखें और सुने । ऐसे ही अन्य धनिकों की भावना भी परखी है । अब गरीब समाज के लिए परिषद् क्या करती है यह सोचना चाहिये । आगाखान अपने समुदाय के लिए क्या कर रहा है यह देखिये । हमारे आचार्य क्या कर रहे हैं ?

आगाखान तो चरित्र को भी नहीं स्वीकार करता और अंग्रेज महिला से विवाह करके भी अपने समुदाय के लिए वहुत कुछ कर रहा है । यह समाज क्या करता है ? कार्यकर्ताओं की वात करने की पद्धति परिषद् की पराई माननें जैसी है । परिषद् वाले क्या करते हैं ? यह पूछते हैं खुदने तो कन्ठी पहनी नहीं है और शायद उनका धर्म भी अलग है ? मैं तो यह हृदय से यह अनुरोध करता हूँ कि इस परम्परा को बदलना ही होगा। अव मेरे जैसे का कोई काम शेष्र नहीं है । कुछ भी करने में इन धर्माचार्यों की वाधा और कुरेशी नीति से क्या संप्रदाय सुरक्षित रहेगा । मिथ्याचारी वैष्णव भी कम नहीं है । ऐसी स्थिति से क्या संप्रदाय सुरक्षरित रहेगा । मिथ्याचारी वैष्णव भी कम नहीं है। ऐसी स्थिति में नाम मात्र का यह जीवन कार्यकर्ताओं के द्वारा मिलता है तो इस संस्था को

मिलने दीजिये । मैं यह चाहता हूँ कि हमेशा के लिए आंख बंद करने से पहले संस्था का महान् रूप देखकर ही कूच करुं । यह सचाई से लिख रहा हूँ और प्रातःकाल ही लिखा है ।

आत्मसाधना और प्रभु दर्शन का यह पथ नहीं है जैसा कि समझा जा रहा है । तनिक अनुभव करके देखने का कष्ट करें । संस्था को मन से चाहने वाले पैदा करिये । परस्त्री की भाँति मनोरंजन करने वालों की यहाँ गुन्जाइश नहीं है । आत्मा को कहाँ तक धोखा दूँगा ? श्रीमहाप्रभु और श्री हरि ही जानते हैं और कौन जानेगा । किसी को क्या पड़ी है । मेरे विचार से श्री पाटोदिया को यह सेवा करने दीजिये और श्रीगजानन जी शर्मा को कहिये कि यह दैवऋृण उतारने का ब्राह्मण को अवसर मिला है । इसमें पितृऋृण, गुरुऋृण, देवऋृण आदि सभी आ जाते हैं ।

आप भी अपने पूज्य पिता का स्मरण करिए जिसने संप्रदाय को कुछ ही क्षणों में महान् देन दी है । वैष्णवता का साकार स्वरूप उनमें देखने का प्रयास करें । जिस वासना के पीछे यह समाज और धर्माचार्य दौड़ रहे हैं उससे कभी शान्ति नहीं मिलेगी और न इसका कहीं अन्त है । यह तो इन्हीं के अन्त का कारण बनेगी ऐसा साफ दिखाई दे रहा है ।

बात कड़वी लगती है किन्तु सचाई छिप नहीं सकेगी । कब तक यह आंख मिचौली होगी । समाज में अनास्था और अनुत्तर-दायित्व साफ झलक रहा है । आशा है कि सभी परिस्थितियों पर विचार करके गम्भीरता से आगे बढ़ने का सुदृढ़ प्रयास करने का कष्ट करेंगे। सेवा भावना और आत्मप्रदर्शन में अंतर है । प्रदर्शन सख्ती दिखाने का होता है और सेवा भक्ति सहित है । भक्तों ने निरर्थक शक्ति प्रदर्शन नहीं किया है । जब भी प्रभु के कार्य के लिए आवश्यकता पड़ी निरभिमान होकर शक्ति का प्रदर्शन करके लोगों को भक्ति पर आक्रमण करने से रोका है और भक्ति की सुरक्षा की है । सिद्धान्त और वार्ता साहित्य से दोनों ही वातें स्पष्ट होती है । वर्तमान् कुछ और हैं ।

भगवान् करे ऐसे अनेक सम्मेलन हों और उसकी पूर्ण सफलता सभी रूप में हो यही कामना है । आप सभी प्रयत्न कीजिये और सफलता तो प्रभु कृपा से सुनिश्चित है। सभी की भगवान् सुनता है और सुनेगा यह मेरा आत्मविश्वास है । यह समय आ गया है । सच्चे कार्यकर्ताओं का निर्माण कीजिये । गरीवों में आत्मवल जगाकर उनको संप्रदाय की सेवा में लगाइए । राजनीति से जनमानस को बचाइये यह प्राण नाशक प्रदूषण है । किमधिकम् । शेष भगवत्कृपा से परमानन्द है ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्य प्रथम पीठाधीश्वर का

सभी वैष्णव जनों से अनुरोध

भारतीय संस्कृति में गाय का महत्वपूर्ण स्थान है और श्रीवल्लभसम्प्रदाय में तो मानवसेवा गाय के बिना होती ही नहीं है । अतः गोवंश की रक्षा करना हमारा सभी का कर्तव्य है । आज हजारों गाय बैल नित्य काटे जाते हैं । देवनार में यह अमानवीय पशुहत्या आज भी हो रही है । इसे रोकने के लिए वहाँ सत्याग्रह हो रहा है । इसमें आप सभी सम्मिलित हों यह हमारा हार्दिक अनुरोध है । यह महान देश-सेवा और पुण्यकार्य है ।

अतः सभी इसमें तन-मन-धन से सहयोग करें । यह निर्देश है ।

गो . र. प्रथमेश

सुझाव

श्री अध्यक्षजी एवं पदाधिकारीगण

आज सभी को संप्रदाय के ज्ञान की आवश्यकता है । इस विषय में परिषद् को पण्डितों द्वारा संप्रदाय के सिद्धान्तों पर प्रवचन कराना चाहिए । जैसे कीर्तन की ओर लोगों की रुचि है वैसे ही शास्त्र एवं दर्शन पर भी प्रवचन का आयोजन करके पण्डितों को प्रोत्साहन देना चाहिये ।

यह खेद की बात है कि हमारे आचार्य सिद्धान्त पर प्रवचन नहीं करते और शास्त्रियों की घोर उपेक्षा से संप्रदाय का ज्ञानपक्ष समाप्त हो जायगा । इस विषय में संप्रदाय को सतर्क रहना चाहिये और परिषद् ऐसी चर्चा गोष्ठी या प्रवचन का आयोजन कर सकती है, जिसमें विद्वानों को ही पुरस्कृत किया जाय तथा संस्कृत के विद्वानों की सभा का आयोजन करके उन के ज्ञानार्जन का सत्कार किया जाय ।

आज के इस कठिन युग में जिन्होंने शास्त्र-रक्षा की है उनका हम पर सबसे अधिक उपकार है । श्रीवल्लभाचार्य ने भी शास्त्र के ज्ञान का अधिक आदर किया है और इस संवंध में "त हि सन्मार्ग रक्षकाः" ज्ञानीचेद भजते-कृष्णः तस्मात् न अधिकं परं और शास्त्रम् अवगत्य मनोवाक देहै श्री कृष्णःसेव्य आदि वाक्यों द्वारा पण्डित समाज का बहुत आदर किया है ।

उक्त वातों पर विचार करके हमको संस्कृत और सेवा तथा संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए । आचार की सुरक्षा भी तभी रह सकती है । इस विषय में यह आग्रह होना

चाहिये कि सम्मेलन में और क्षेत्रीय आयोजनों में विद्वान को बुलाकर एक समय सिद्धान्त पर प्रवचन अलग रखा जाय । श्री निरंजनशास्त्री या अन्य व्यक्ति को इसका संयोजक नियुक्त किया जाय और परिषद् संयोजक को भी द्रव्यादि सन्मानादि देकर आगे के लिए काम करने को प्रोत्साहित करे, वैष्णव जनता भी शास्त्रियों का सत्कार करे । वाल्लभवेदान्त की रक्षा के लिए यह आज सबसे अधिक आवश्यक और प्राथमिक बात है । संप्रदाय के विधिवत् अध्ययन की व्यवस्था शास्त्रीय पद्धति से होनी चाहिये । धर्माचार्य एकमान्त में बैठ रहें यह तो सेवा एवं साधनापक्ष की वात है किन्तु सिद्धान्त की रक्षा के लिए उनको भी धर्म प्रचार के हेतु पण्डितों को प्रोत्साहन देना चाहिए ।

प्रतिमास एक पण्डित के द्वारा प्रवचन का आयोजन किसी ग्रन्थ पर किया जाय तथा उसकी एक सहस्त्रमुद्रा या उचित सत्कार के साथ दुशाला आदि उढ़ाया जाय । विद्वानों को भी चाहिए कि वे इस दिशा में कार्य करें और अन्यथा न समझे । विद्वान् सत्कार का भूखा नहीं होता फिर भी मर्यादा के रक्षण के लिए यह आवश्यक है कि हम सत्कार का स्वीकार करें । अन्यथा यह परम्परा ही नष्ट हो जायगी । ऋषियों का जीवन भी ऐसी व्यवस्था देता है । प्रतिवर्ष में एक वार या दो बार यथाशक्ति विद्वानों का सत्कार किया जाय तथा जो जिस विषय की सेवा करता हो उसका सन्मान किया जाय । सन्मानकर्ता को विनीतभाव से ऐसा करना चाहिए और सन्मान ग्रहणकर्ता को भी स्वधर्म समझकर आदर रखना चाहिए । संप्रदाय के पण्डितों का सम्मेलन करना और उनकी एक समिति बनाना परिषद् के अंतर्गत आवश्यक है । यह कार्य श्री जितेन्द्रभाई, श्री प्रभाकरशास्त्री, श्री कमलाल शास्त्री, श्री निरंजनशास्त्री, श्री प्रद्युम्न शाल्त्री, श्री भगवतीप्रसाद पण्डया बडौदा, श्री रमणलालशास्त्री, उमरेठ तथा अहमदावाद श्री वल्लभकिशोर जी चतुर्वेदी मथुरा, श्री धीरजलालजी चतुर्वेदी, श्री मनहरजी शास्त्री, श्रीमंदनलालजी शास्त्री, और अन्य विद्वानों का भी इसमें समावेश किया जाय, मार्ग व्यय व्यवहारार्थ देना आवश्यक है ।

धर्मप्रचार वाहन में आचार्य के साथ विद्वान् का रहना अनिवार्य होना चाहिए । इसका व्यय परिश्रद् वहन करें । इसका पत्र व्यवहार अभी से होना चाहिए । विद्वानों की सूची तैयार करके उनसे सम्पर्क किया जाना चाहिए । श्री के. का. शास्त्री तथा श्री नवनीतप्रिय तथा अन्य विद्वानों का सम्पर्क करके ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे संप्रदाय का ज्ञानपक्ष समुज्ञवल बनें । आशा है आचार्यों और विद्वानों की गरिमा का संरक्षण परिषद् करेगी । मेरा स्वास्थ्य अब इस योग्य नहीं है तथा आगे संप्रदाय में व्यक्ति विशेष के आग्रह से ही आज हानि हुई है । अतः भविष्य में ऐसी पुनरावृत्ति न हो इसका विचार करके आप अन्य व्यवस्था करें ।

संप्रदाय के अस्तित्व के लिए सभी को त्याग करना होगा । इसमें मेरा और पराया नहीं करके 'त्रिदुखःसहनं थैर्यम् आमृतें सर्वतःसदा', इस वाक्य का नित्य स्मरण करके भगवदाश्रय के साथ श्री महाप्रभु का आराधन और अर्चना करें । यह मेरा अनुरोध है ।

सभी आचार्य मुझसे, प्रसन्न हों या अप्रसन्न किन्तु आचार्य हैं । मैं सेवक के नाते ही यह प्रार्थना परिषद् के समक्ष कर रहा हूँ,और यह मेरा धर्म है । आशा है अध्यक्षजी और पदाधिकारी इस पर संप्रदाय एक लिए कर्तव्य समझकर ध्यान देने का कष्ट करें । सुज्ञेषु किम् बहुना ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेशस्य शुभांशिषः

श्रीहरिः

आइये विचार करें.

प्रबन्ध के नाम पर सरकार द्वारा बड़े-वड़े धर्मस्थानों को हथियाने का सरकारी कुचक्र भविष्य में धर्म पर भारी कुठाराघात होगा । यह प्रभाव हिन्दूधर्म पर ही अधिक होगा यह आज की राजनीति से स्पष्ट है । नाथद्वारा और तिरुपति जैसे ही महाकाल के मन्दिर पर तथा अन्य ऐसे स्थानों पर सरकारी नियंत्रण से धर्म को कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता न प्रचार होता है यह तो मात्र सरकारी आमद के साधन है और उससे सरकारी अफसरों को या सरकार को लाभ है ।

यों तो सरकार सेक्यूलर है किन्तु धर्म में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप कर सकती है । व्यवस्था का बहाना भी मिल ही जाता है ।

धार्मिक स्थानों के आपसी विवाद और उनकी खींचतान धार्मिक जनों को समझा कर आपस से सुलझानी चाहिए और यह बन्दर न्याय की शरण में जाना उचित नहीं है । यदि ऐसा नहीं किया गया तो धर्म की शक्ति क्षीण होती चली जायगी । यह संपदा का प्रश्न नहीं । किन्तु आज धर्म के लिए त्यागी और उत्सर्ग करने वाले जीवन की कमी होने से यह संपदा धर्म के लिए चाहिए नहीं कि सरकारी प्रचार के लिए ।

सरकार के पास तो अनेक साधन है और वह उनसे मनमाना प्रचार रेडियो आदि साधनों से कर रही है किन्तु हिन्दू जनता के पास तो कोई चारा नहीं है उसका तो भविष्य अन्धकारमय होता जा रहा है ।

सिख भी हिन्दू ही है किन्तु उनका अस्तित्व टिकाने के लिए जो प्रयास किये जा रहे हैं वह देशद्रोह की सीमा को स्पर्श कर जायें तो आश्चर्य नहीं । भारतीय धर्म ने कभी ऐसे कुत्सित प्रयास स्वीकार नहीं किये और यह आज की राजनीति का वरदान है जिसका यह एक नमूना है श्री विनोबा का देहान्त तो गाय की रक्षा के लिए हुआ और उसको दूसरा

रूप देकर दबाया गया । इस पर भी हमको लोकमत बनाना है और वह बना नहीं सकते क्योंकि सरकारी तन्त्र के वह विपरीत होगा इससे सरकार ही दूसरों के द्वारा इसका विरोध करावेगी ।

राजस्थान में सरकारीकृत मन्दिरों में अन्नकूट का भी प्रावधान नहीं है जब कि उनकी करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति सरकारी अफसरशाही को भेंट हो गई हैं । वैष्णव या धार्मिक जन सामग्री देते हैं तब भी उसकी व्यवस्था नहीं होती । कर्मचारी को तो पांच आय सात सौ मिलते हैं और भगवान् को तोला दो तोला मिश्री पर निर्भर किया जा रहा है ।

अभी तक झालरपाटन के चोरी गये भगवान के स्वरूप का पता नहीं है । ऐसे ही मन्दिरों की सम्पदा बिककर सरकार के कब्जे में चली गई फिर भी उन मन्दिरों के जीर्णोद्धार या एन्यूटी वढाने की बात नहीं है । ऐसी स्थिति में धार्मिक एकता के बिना धर्मस्थलों की रक्षा नहीं हो सकती है ।

आज धर्म पर दुतरफा वार किया जा रहा है और अंगरेजियत बढ़ रही है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि धर्म के हेतु हमारा कर्तव्य हम दृढ़ता से पालन करें । संगठन को धर्म की रक्षा सशक्त बनाकर उसे राजनीति से दूर रखें । अन्यथा यह राजनीति का दानव जनता का जीवन नष्ट भ्रष्ट कर देगा । लोगों का यह कहना सही नहीं है कि राजनीति के बिना काम नहीं चलता । धर्म का काम तो आत्मविश्वास और त्याग से परस्पर सद्भावना के आधार पर चलता है इसमें छल कपट की आवश्यकता ही नहीं है ।

हमारे समाज को सच्ची शान्ति चाहिये तो यह अवश्य है कि वह धर्म के महत्व को समझे और उसका अनुसरण और रक्षा का पूरा प्रयास करें । इसमें दान सेवा और अध्ययन तथा समाज के सभी अंगों की निस्वार्थ सेवा आ जाती है ।

धर्माचार्य भी अपना अलग संगठन न करके एक ही संगठन के अंग बनें और एक ही संप्रदाय का एक संगठन आपसी विना किसी टकराहट के होना चाहिए । ऐसे अनेक संप्रदायों का फिर एक मंच सच्ची भावना से वनाया जाना चाहिए जिससे सभी एक दूसरे के पूरक बनें । शास्त्रार्थ और शास्त्र विचार की अनेक रीति हमारे यहाँ का गौरव है और इससे मस्तिष्क उज्ज्वल बनता है । यह साधना का अंग है, लड़ाई का स्थल नहीं है । वुद्धि से काट दिया जाना ही किसी की सचाई या आत्मलाभ का कारण नहीं होता । यह तर्क तो निष्ठा जमाने का साधन है उखड़ जाने का नहीं है न इससे किसी को उखाड़ा जा सकता है । वल्लभसंप्रदाय में अनेक मन वनाकर चलने वाले अपने ही धर्म की हानि कर रहे हैं, जिसको वे धर्मरक्षा या सेवा समझते हैं । एक पक्ष के विचार से यह ठीक है किन्तु व्यापक हित की दृष्टि से अहित ही अधिक होगा । इससे यह साफ हो जाता है कि धर्म में आत्मनियंत्रण करने की वात कहने मात्र की रह गई है । सभी आज के वातावरण में सन्देह की नजरों से सोच रहे हैं । यह घातक है । इसकी प्रतिक्रिया धर्माचार्यों के अनुयायियों में भयंकर रागद्वेष का निरर्थक कारण वन रही है । विनाश का सर्जन भविष्य

में यही प्रक्रिया करेगी । अतः धार्मिक जनों को इससे बचना चाहिए । साथ ही सभी के लिए हित का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए यह मेरी परिषद् के सदस्यों से और अपनों से अपील है ।

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

भ्रमणशील परिपत्र

पूज्यपाद जगद्गुरु प्रथमपीठाधीश्वर श्रीवल्लभसंप्रदाय की आज्ञानुसार सभी वैष्णवों से अनुरोध किया जाता है कि आज देश में करोड़ों गोवंश का नाश हो गया है और भी होने जा रहा है । महाकाल के ज्योतिर्लिंग को, आपसी कलह और पुजारियों के अव्यवस्थित होने पर अपने अधिकार में लेने का भी काम सरकार कर रही है । अन्य धर्मस्थान भी सरकार के कब्जे में व्यवस्था के नाम पर जा रहे हैं ।

हमारी भावना पर निरन्तर आघात किया जा रहा है और धर्म की हानि निरन्तर होती जा रही है । इस विषय को ध्यान में रखकर सभी का कर्तव्य है कि गोरक्षा और धर्मरक्षा का पूरा प्रयास करने के लिए सत्याग्रह आदि के लिए तत्पर बनें । आपका संगठन और त्याग संस्था को शक्ति प्रदान करेगा । सनातन धर्म की आस्थाओं को क्रमशः समाप्त करने वाले राजनेता कभी भी धर्म का उज्ज्वल पक्ष नहीं देख सके और हमेशा आय (आमदनी) वाले स्थान पर कब्जा कर के धार्मिक स्थलों पर धर्म प्रचार की हानि की है । इससे महान क्षति हुई है । हिंसा, क्रोध, बैर के साथ वासना बढ़ रही है, जिससे मनुष्य अविवेक हो रहा है । इसलिए धर्मसंगठन के द्वारा ही हम मानवता बचा सकते हैं ।

गाय के प्रश्न पर भी राजनीति ने अपना गन्दा प्रभाव दिखाकर देश में ८५% प्रतिशत जनता की भावना को आघात लगाया है । दुधमुहे बच्चे को दूध नहीं मिलता और न अच्छी खुराक खा सकते हैं इस पर दूध भी गाय का मँहगा है । किसान भी पैसे के लोभ में अपनी सन्तान को दूध नहीं पीने देते और बुरे व्यसन में पैसा बरबाद कर रहे हैं। जीवन का कोई मूल्य ही नहीं रहा । आप सभी इस विषय में बहुत कुछ कर सकते हैं ।

गाय बैलों को कतलखाने जाने से रोक सकते हैं । एक अच्छी गोशाला बनाने में सहायता कर सकते हैं । शान्तिपूर्ण सत्याग्रह में भाग लेकर जनमत लगा सकते हैं । धर्मरक्षक दल के सदस्य बिना पैसे के बनकर प्रचार करें, कि गाय की हत्या बंद हो । नाथद्वारा टेम्पलबोर्ड में प्रतिनिधित्व की मांग करें । हर स्थान पर सत्याग्रही तैयार करके सूचना दे सकते हैं । इन सभी बातों में और व्यवहार में निष्ठा, नम्रता और सचाई की आवश्यकता है । सत्पुरुषों को सिद्धि साधनों से नहीं किन्तु सत्यनिष्ठा से मिलती है ।

आप सभी से हमारा यह अनुरोध है कि आप अपने स्थानों पर इसके प्रचार प्रभुनाम के साथ करने का कष्ट करें । कीर्तन और अन्य प्रकार से आप मण्डलियाँ बनाकर भजन करते हुए इसका प्रचार करें ।

नाथद्वारा के लिए भी आज ऐतिहासिक त्याग की आवश्यकता है । जीवन तो बार-बार आता और जाता है किन्तु सफल जीवन तो कभी-कभी मिलता है । भगवान् ने गीता में यही बात कहकर मनुष्य के जीवन की महत्ता समझाई भी है । आप भी अपने भक्त-जीवन का महत्व जान कर सेवा में सहायक करें । हमारे दल की सदस्यता, सक्रिय कार्य करना और अपनी प्रगति की सूचना भेजना मात्र है । शेष भगवत्कृपा ।

भवदीय

सचिव धर्म रक्षकदल.

श्रीहरिः

सनातन - धर्मावलम्बी जाग्रत बने

हमारे धार्मिक स्थल सरकार धीरे-धीरे अपने आधीन कर रही है । यह सब व्यवस्था के नाम पर हो रहा है । हमारे सनातनधर्म में व्यवस्था करने वाले और विचारकों की कमी नहीं है । किन्तु आपसी समन्वय न होने से धर्म स्थानों पर सरकारी आक्रमण हो रहे है। हमारे धर्म के बड़े-बड़े स्थल सरकार सहज ही हथिया रही है । उज्जैन महाकालेश्वर का मन्दिर सरकार ने ले लिया । बालाजी आदि तो पहले ही सरकार में जा चुके हैं । ऐसे धर्म स्थानों पर आधिपत्य करके सरकार उसे धर्म कार्य के लिए उपयोगी नहीं बनायेगी । उसकी परिभाषा में धर्म प्रचार है ही नहीं इसलिए सुविधा और अन्यबातों से जनता को प्रसन्न करके धर्म प्रचार में क्षति पहुँचाना ही इसका परिणाम एवं हेतु है ।

आज सनातन मंच के लिए संघर्ष करने वाली संस्था बनाने की बहुत ही आवश्यकता है । इसको सभी मिलकर सोचेंगे तभी यह काम होगा । हमारे धर्म की कोई बुराई हो ही नहीं सकती । हमारी आपसी फूट और कमजोरी को दूर करना हमारा कर्तव्य है । जनता का सशक्त हो तभी हमारे आचार्य मार्गदर्शन कर सकते हैं । आज जो शिष्य गुरु को उपदेश राजनीतिज्ञों की भाँति दे रहे हैं । ऐसा न करके गुरुओं से मार्गदर्शन प्राप्त करें। यही सनातन परम्परा है । संगठन तभी होगा । साथ ही आचार्यगम अपने स्वरूप में उनकी गरिमानुसार रहें यह उचित है इसी से धार्मिक जनों का गर्व से मस्तक ऊँचा होगा। संगठन के लिए आज जोरदार प्रयास करना चाहिए । अपने मतभेद और अभियान का परित्याग करके ऐसा व्यवहार बनावें जिससे किसी को अपने मन में हीन भावना हमारे व्यवहार से नहीं हो । इसमें कभी भूल भी हो सकती है तो दूसरे व्यक्ति को उदारता रखनी

चाहिए । पिछड़े लोगों की समस्या का धर्म द्वारा विवेक से समाधान हो सकता है । इसमें राजनीति को प्रवेश धर्मकार्य में नहीं मिलना ही श्रेयस्कर है ।

यह आवश्यकता है कि सनातन धर्म का सम्मेलन और विचार गोष्ठी का यहाँ आयोजन हो और उसमें विचार करके सनातन धर्म के संगठन का प्रयास किया जाय । आप सभी इस कार्य को करे । यह अनुरोध है । यह जमाना औरंगजेब से भी खराब है । उससे जितनी हानि नहीं हुई उससे सौ गुनी अधिक हानि आज हो रही है । आशा है आप मिलकर सोचेंगे और यथा समय अपना निर्णय और अभिमत सूचित करेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

विद्यार्थियों से अपील

आप हमारे देश के भावी चरित्र निर्माता है । आपके हाथों में इस देश की बागडोर आने वाली है । आपका जीवन हमारी दृष्टि से देश में नव निर्माण को शक्ति दे सकता है।

आपके द्वारा ही इस देश से भ्रष्टाचार हटाया जा सकता है और हमारे देश की संस्कृति को फिर से नया जीवन मिल सकता है । इस देश में किसान का जीवन गाय के वंश पर ही निर्भर है । गोवंश का कत्ल अगर आप अपनी नजरों से देख लें तो आपको रोमांच हो जायगा कि इस तरह की हत्या से देश और मानवता कभी नहीं बच सकती । सरकार का यह काम था कि वह हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और महात्मागाँधी और लोकमान्य तिलक की बातों पर अमल करें और उनको दिया हुआ वचन सार्थक करे कि स्वतंत्रता के मिल जाने पर पहले गोवंश की हत्याबंद की जाएगी ।

आज सभी को पैसे ने पागल बना दिया है । इडमस्थिम की कल्पना का मनुष्य दिल और दिमाग विना का बन रहा है । जिसको रुपया ही चाहिए और वह भी किसी भी कीमत पर चाहे वह रास्ता गलत ही क्यों न हो । इतने वर्षों की सिद्धान्तहीन राजनीति ने जन जीवन के साथ खिलवाड़ किया है । धर्म की नैतिक भावना पर वासना प्रभाव डाल रही है । एक भिक्षुक के नाते मैं आपसे यह भीख चाहता हूँ कि आप देख की अमर संस्कृति और उसके चरित्र में आगे आकर कार्य करें । आपकी युवाशक्ति सही दिशा में चलकर सभी को सुख और शान्ति का अमूल्यदान दे सकती है । आप चाहे किसी भी वर्ग के हैं किन्तु विद्यार्थी जीवन का बहुत वड़ा मूल्य है । इसका एक क्षण भी अरबों रुपयों से अधिक है । आप चाहें तो आज देश का नक्शा ही बदल सकता है । याद

करिये बलिदानी जीवन को और गोवंश की रक्षा कराने आगे आइये '। यही आत्मीय अनुरोध है ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश
गोरक्षा-समीति
अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्
घाटकोपर - बम्बई.

Antarrashtriya Pushtimargiya Vaishnava Pavishad

RD 1 BOX 980

WORCESTER, VT 05682, U.S.A.

Tel. 802 229-5871

उठो ? जागो !

देश और धर्म की रक्षा करो.

आप हिन्दू हैं । भारतीय हैं । आपके देश की संस्कृति और विचार महान् है । आपकी गौरवगाथा और ज्ञान की गरिमा दुनिया में सबसे प्राचीन समय से उच्च शिखर को सुशोभित करती रही है । वेद का गौरवमय वाङ्मय विश्व का अनादिज्ञान का झरना है जिससे लोगों ने आज तक अपनी प्यास वुझायी है । इतना ही नहीं अनेक धर्म और जीवन-दर्शन तथा दुनिया की सभी भाषाओं की मातृभाषा संस्कृत भी हमारे देश की कीर्ति को बढ़ा रही है ।

इसी देश के राजा दिलीप ने गाय के लिए अपने प्राण देने के लिए एक शेर के सामने आत्मसमर्पण किया था । शिवाजी महाराज, गुरु गोविन्दसिंह, और महाराणा प्रताप ने गाय और धर्म की रक्षा के लिए बलिदान होना ही श्रेयस्कर समझा । कामधेनु से इच्छित फल की प्राप्ति हमारे ऋषि करते आये हैं । आज इस देश में गौवंश की क्रूरता से हत्या की जा रही है और भी नया कलखाना दिल्ली में बनाया जायेगा । स्वराज्य मिलने के पहले हमको यह वचन दिया गया था कि देश में सबसे पहले गाय की हत्या बन्द कर दी जायेगी । इसमें सभी गोवंश आ गया है । आज बरसों बाद भी इस बारे में ध्यान न देकर राजनेता हमारे ही देश में जनमत को वहकाते आये हैं । अनाज और दूध मंहगा है। गरीब कुपोषण से मर रहे हैं । क्या कारण है कि आपका दिल नहीं पिघलता ?

सभी के हित में अपना हित है, यह देश तो हमेशा से अपने धर्म और संस्कृति के मूल की रक्षा में सावधान रहा है । आज विदेशी संस्कृति झूठी चकाचौंध ने हमारा नैतिक जीवन और गौरवशाली चरित्र हमसे खरीद लिया है । आओ, हम सभी मिल के इसकी

रक्षा करें, देश और समाज को खुशहाल बनायें । गोवंश की रक्षा के लिए, संसिद्ध प्राप्त करने के लिए संगठित बनकर भारत को सही भारत बनायें । जागो ! आपको संस्कृति और माँ पुकार रही है । दूध के स्थान पर उसका खून मत पियो । यह मानवता नहीं है।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश
सभापति

श्रीहरिः

धर्मस्थानों को खुला पत्र

श्रीमान समस्त धर्माधिकारी वृन्द

आशीर्वाद

आप धर्म स्थान में जाकर भगवान की आराधना करते हैं । आपके यहाँ बहुत से नर नारी दर्शनार्थ आते हैं । धर्म के द्वारा शान्ति प्राप्त करने और अपना कर्त्तव्यबोध करके जीवन सफल बनाने का केन्द्र आपके पास है ।

आप यह भलीभाँति जानते हैं कि गोरक्षार्थ देवनार पर सत्याग्रह हो रहा है । आप उसमें किसी भी प्रकार की सहायता करना कर्त्तव्य समझते हैं तो उसके लिए आपको अपने आप संपर्क करना चाहिए और उस विषय की सूचना या अन्य प्रकार से सहायता करने का प्रयत्न हो । उसमें सहयोग करना चाहिए, यह स्वधर्म है, आप इससे परिचित हैं । आप इस विषय में प्रयत्न करें । यह हमारा अनुरोध है । केवल दर्शन करके घर जाना और मन्दिर समय पर खोलकर भेंट पूजा गिनना ही धर्म नहीं है । आचार्यों ने ऐसे केन्द्र पवित्र प्रेरणा और उच्चतम जीवन बिताने के निर्देशन हेतु स्थापित किये थे ।

इनका आज उपयोग धर्म और उसकी रक्षा के लिए क्या हो रहा है ? इस विषय में आप सभी ध्यान देने का कष्ट करें । यदि हमारे धर्मस्थान ही ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों पर ध्यान देकर उनका समाधान नहीं करेंगे तो यह स्वाभाविक है कि धर्म की आस्था और नैतिकता समाप्त हो जायगी ।

अपने हित में सभी का हित हो यह सोचना चाहिए । आप गोवंश की रक्षा का कुछ तो प्रयत्न कर सकते हैं । ऐसा प्रयास कीजिए । सफलता और विफलता भगवान के आधीन है, फिर भी हम अन्तिम श्वास तक जीवन जीने का प्रयास तो करते ही हैं ।

गाय और धर्म के नाम पर भी यदि संगठन नहीं और त्याग की भावना नहीं है तो फिर किस समय त्याग का उपदेश काम आयेगा । आशा है कि आप संस्थान को स्वधर्म और गोवंश की रक्षा में सक्रिय करके उसे गौरवान्वित करेंगे ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

Akhil Bharatiya Vaishnava Parishad
RD 1 BOX 980
WORCESTER, VT 05682

Tel. 802 229-9871

आवश्यक सूचना

मेरा स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है अतःअधिक सेवा तो कर नहीं सकता । फिर भी संप्रदाय के हेतु बनेगा वह करुँगा । मेरी निष्ठा तथा कथित समाज पर नहीं है और दुरंगी नीति नहीं अपना सकता । आचार्यों का जीवन भी विचित्र देखता हूँ । अतः मैं संस्था के लिए उतना उपयोगी नहीं हो सकता । मेरा यथोचित उपयोग श्रीपाटोदिया के द्वारा ही आप करा सकते हैं ।

परिषद् में मार्ग दर्शक मण्डल बनाया जाय जिसमें आचार्य बालकों को पधरा कर उनका अभिमत जानकर ही विनिष्ट पहलुओं पर मार्ग दर्शन प्राप्त करें ऐसा सम्मेलन करना उचित है । आचार्य परिषद् का आग्रह नहीं रखा जाय क्योंकि आज आचार्यों को अपनी गोस्वामी परिषद् का बिना समझे व्यामोह है । साथ ही मुझे घसीटने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं । उनका जन संपर्क परिषद् के माध्यम से होना आवश्यक है इससे उनको यथार्थ का परिचय मिलेगा । उनको रहन सहन और व्यवहार सभा के योग्य होना चाहिये ऐसा देवनार में प्रतीत नहीं हुआ । छिछलापन आ जाता है ।

श्री पाटोदिया जी को विदेश में भेजकर गल्फ के देशों में संगठन कराया जाय । इसका व्यय परिषद कोई आयोजन करके वहन करें । श्रीमती गिरिजाव्यास को जो कि उदयपुर शाखा की उपाध्यक्षा हैं उनको अमेरिका प्रचारार्थ भेजा जाना चाहिए । उनको संप्रदाय पर आस्था है और ज्ञान भी है जिसकी अपेक्षा होगी वह जानकारी मैं भी दूँगा श्री पाटोदिया और श्रीमती व्यास इसके लिए उपयुक्त हैं । अमेरिका के क्षेत्र में वे काम भी करेंगी और उनकी जानकारी भी है साथ ही अपनी संस्था के उपाध्यक्ष श्री श्यामदास उनकी व्यवस्था रखेंगे ऐसा विचार विनिमय हो गया है । दिल्ली में मैंने बात करली है । संगठन शक्ति का प्रथम फल हमारी गुजरात में विजय के रूप में मिला है और इसका प्रचार किया

जाना उचित है । श्री चिमनभाई सेठ को धर्म प्रहरी के सम्मान से सन्मानित करना चाहिए। इस पदवीदान का काम प्रथम पीठ से कराना उचित है क्योंकि मैंने तार भेजा है । ऐसे बहुमान के हेतु पत्र छपाने की आवश्यकता है और ऐसी उपाधियों की व्यवस्था परिषद् में होनी चाहिए जिसका वितरण आर्य परम्परानुसार आचार्य बालकों के हाथ से हो और आयोजन के साथ हो ।

नाथद्वारा में सत्याग्रह कब से करना इसका कार्यक्रम निश्चित किया जाय । श्रीमान संगठन मन्त्री जी का दौरा उदयपुर भी और डूँगरपुर होना आवश्यक है । किसी भी शाखा के क्षेत्र में कोई भी आचार्य बालक पधारे तब उनका उस क्षेत्र में स्वागत कराना चाहिए इसका निर्देश कार्यालय से जाना चाहिए । इससे आचार्यों में आत्मविश्वास की जाग्रति होगी । परिषद् को समर्थन भी मिलेगा ।

परिषद् में स्वयं सेवकदल का शीघ्र गठन हो और उसका अलग मन्त्री वैतनिक रखा जाय जिसका भ्रमण कराना और संस्था को सुदृढ़ बनाना काम होना चाहिए । उसका व्यवहारिक मानदेय मैं स्वयं निवेदित कर सकता हूँ । जितना संभव हो उतने आजीवन सदस्य बनाये जावें । कार्यालय की व्यवस्था चतुर हाथों से होनी चाहिए ।

आचार्यों को लेकर के परिषद् में अथवा वैष्णव समाज में प्रपंच सर्जित होता है उसको दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए । इससे आचार्य और संप्रदाय का अहित होता है और समझदार व्यक्ति की अपेक्षा चाटुकार अधिक होने से भ्रम ही फैलाते हैं । साथ ही परिषद् को मेहनतकश जनता में पर धार्मिक प्रभाव बनाना चाहिए मजदूरों में कृषकों में इसका प्रभाव बढ़े और हम उनके लिए काम करें । इससे धार्मिक क्षेत्र के द्वारा चरित्र निर्मिती का काम सरलता से हो सकता है । परिषद् का प्रभाव भी बढ़ेगा । यह कार्य सेवादल कर सकता है किन्तु नैतिक दृष्टि से करना चाहिए इसमें राजनैतिक बात लाने से महान हानि होगी । कलकत्ता में श्री पाटोदिया जी का कार्यक्रम रखवाने के लिए तारदेना तथा व्यवस्था करानी चाहिए । नाथद्वारा में कब से कार्य आरम्भ किया ज़ाय और जागृति कैसे लाई जाय इसका विचार करना चाहिए, वहाँ पूँजीपतियों की नीति चल रही है और इससे धर्म स्थान भी बरबाद हो रहा है । धनिकों की धाँधली अधिक है और तिलकायत जी की प्रणाली इसका कोई नियंत्रण नहीं कर सकती । जैसे इन्द्र को यह भान होता है कि हमारा इन्द्रासन छिन रहा है ऐसे ही तिलकायत और उनके चाटुकारों को आभास होता है, कतिपय आचार्यों की सन्निष्ठा परिषद् के प्रति नहीं है ।

सभी से सन्नेह रखना है विचार के नाते आलोचना हो यह बात अलग है । इससे विश्लेषण किया जाता है वैर द्वेष के लिए नहीं है । फिर भी मानवोचित दुर्बलता आ जाती है । हमारे सदस्यों को बोधपत्र-कार्यालय की ओर से जाना चाहिए कि कैसे सोचें तथा उनकी भी सभायें बौद्धिक प्रयोगार्थ करनी चाहिए । इस प्रकार शाखाओं में समन्वय और गतिविधियों को बल मिलेगा । कार्यकर्ताओं को आश्वासन एवं मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा।

उनमें सक्रियता रहेगी । ऐसा सदस्यों का गेट टू गेदर आवश्यक है । अलग-अलग स्थानों पर ऐसा प्रति शाखा आयोजन किया जाय । प्रथम कार्यकारिणी और बाद में सदस्यों का आव्हान किया जाय ।

निरंजनशास्त्री उमरेठवालों को सोमयज्ञ की तारीख की सूचना भिजवाने का कष्ट करें। उनका भी सामुहिक परिचय मिल जायगा । प्रवचन पुरी में होंगे । कीर्तन के कार्यक्रम भवन की भांति श्री राधेश्याम जी पाटोदिया के रखना उचित है । इससे वे प्रचार और सिद्धान्त दोनों ही समझा सकते हैं । यह भाई भतीजावाद के नाते नहीं कार्य एवं निष्ठा के नाते कह रहा हूँ । धनिकों को कभी हावी होने नहीं दिया जायगा तभी धर्म बचेगा। अन्यथा यों अपने हित में इसका इनके द्वारा बलिदान हो सकने की पूरी संभावना है । ऐसा प्रच्छन्न राजनीति से सम्बद्ध पुष्टिमार्ग के पूँजी पतियों का रवैय्या रहा है । उनमें वैष्णवता का अभाव है । पहले ऐसा नहीं था ।

भवदीय
गो. र. प्रथमेश

नोट :--- श्रीमान् आचार्य मार्तण्ड श्री श्याममनोहरजी का प्रवचन देवनार में सर्वश्रेष्ठ रहा । जानकारी हेतु ।

श्रीहरिः

देखो यह अवगत की गति कैसो रूप धर्यो है ?

धर्म जीवन निर्माण के लिए है । जिससे प्रेरणा लेकर मानव अपने विचार एवं आचरण को पवित्र बनाता है ऐसा करने से परस्पर सम्वन्धों में मधुरता आती है । यह राजनीति से बिलकुल अलग वात है । नीति का उपयोग सिद्धान्त की रक्षा के लिए है । इससे विचार और आचार मैले नहीं होने चाहिए ।

सिक्खों का यह कहना निराधार है कि यहाँ उनकी स्थिति लंका के तमिलों जैसी है। यह अधिकार का संघर्ष है । धर्म एकता सिखाता है । इसमें भाषा, प्रान्त, देश और अन्य विचार नहीं है । इन प्रश्नों को लेकर धर्म की बात नहीं कही जाती ।

आज यह प्रश्न गम्भीर है कि प्रान्तों को स्वायत्तता दी जावे । किन्तु इसका परिणाम विचार कर ही ऐसा करना चाहिए । भारतीय एकता की बात ही इसमें सबसे ऊपर है । हमारे देश की यह परिस्थिति नहीं है कि वह प्रान्तीय एकता का अनुभन कर सके । यह वात आपसी दुश्मनी तक पहुँच जाती है । इसका अनुभव भी करना चाहिए । स्वार्थ की वात देश की एकता में वाधक वने, तो यह ठीक नहीं है । हमेशा स्वार्थ को सीमित करके

उससे ऊपर उठने का प्रयास ही धर्म ने बताया है । इसका यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य दरिद्र हो जाय । फिर भी यह तो हमें समझना ही होगा कि इससे पृथकता की भावना हमारे समाज का विनाश न कर दे । सिख एक पन्थ है । उसमें भारतीय धर्म के लिए त्याग और समर्पण की भावना ही निहित है । उसको देश, काल की सीमा में जगड़ना उचित नहीं है ।

विचारकों के वर्ग में समन्वय के लिए होते हैं और उनको इसी दृष्टि से बनाया गया है । इनमें विश्लेषण करने की बात जो समझने के लिए होती है । इसका उपयोग तोड़-फोड़ के लिए नहीं किया जाता । यही इसकी गरिमा है । मशीन को खोलना उसको ठीक करने के लिए है, किन्तु उसका विनाश करना उसका उद्देश्य नहीं होता । ऐसी ही यह बात है। मनुष्य स्वभाव की कमजोरी को धर्म से दूर करना चाहिए । यही धर्म का सही उपयोग है । यदि कमजोरी धर्म बने तो रोग को ही दवा मानना पड़ेगा ।

सिक्खों पर वैदिक और पौराणिक दोनों ही, ग्रन्थों का प्रभाव स्पष्ट है । ऐसे ही भारत के सभी पन्थ और सम्प्रदाय हैं । इससे एकता ही झलकती है और उनमें स्वतंत्रता भी है । फिर भी श्रीलंका की स्थिति तो क्या भारतीय क्षेत्र में प्रान्तीयता और भाषावाद को लेकर कभी तीर्थ या किसी भी देव के विषय में विवाद नहीं हुआ था । हमारे यहाँ विचार के प्रवाह को पुष्ट करने के लिए ही शास्त्रार्थ किए जातें थे । इससे हमारी धर्म भावना और विकारों में आधुनिकता से समन्वय के साथ ही मार्ग दर्शन की प्रणाली विशाल होती थी । धर्म की सुरक्षा के लिए बलिदानों सिख, वैष्णव और अन्य सभी विचारों को अपने में संजोए हुए हैं यह अपने आप में महत्वपूर्ण बात है । हमारे देश में प्रत्येक विचारक को स्वागत योग्य माना है । उसके विचारों पर विचार और विश्लेषण किया है । भले ही उसके मौलिक पहलू को हम स्वीकार न करें फिर भी उनको भगवान् की विभूति ही मानते हैं या फिर भगवान के अवतार ।

ऐसी स्थिति में भारतीय राजनीति से हमारे मन में किसी पर हुकूमत करने की या अलगाव की भावना कैसे पैदा हो सकती है यह आश्चर्य की बात है । धार्मिक दृढ़ता का यह अर्थ तो नहीं हो सकता । राजनीति की मांगों के साथ धर्म कैसे जुड़ जाता है , और यह भी सोचना चाहिए कि ऐसी बात का मानस पर क्या प्रभाव पड़ेगा । राजनीति और अधिकार मन को जुदा कर सकते हैं, किन्तु उनको मिला नहीं सकते । समझ में नहीं आता कि पशुओं के लिए प्राण देने वाला मनुष्य धर्म के नाम पर प्राण कैसे ले सकता है। गाय और उपवीत की सुरक्षा करने वाले देश की सुरक्षा के लिए विचार क्यों नहीं करते। क्या हम पर राजनीति अधिकार इतना प्रभावी हो गया है ? यह विचारणीय है और हर एक को इसके लिए सोचना चाहिए । धर्म आत्म कल्याण का मार्ग है । इसमें जाति की बात ही कहां है ? यह साफ बात है कि सिक्ख किसी भी प्रकार से हिन्दुओं और हिन्दुस्तानियों में अलग नहीं है ।

यह राजनीति की बातें तो धर्म से अलग होने में ही श्रेय है । इस पर सरकार से विचार करना और बात है और धर्म के जरिये अलगाव पैदा करना दूसरी बात है । भाषा के आधार पर विभाजन सुविधा के लिए है न कि अलग होने के लिए है । फिर भी यह समझ कर चलना चाहिए कि प्रेम और धर्म इससे बिलकुल अछूते हैं । उसके लिए मारकाट करना शोभा नहीं देता । यह तो एक चाल है कि सनातन धर्म और सिख अलग है और वे हिन्दू कहलाने वाले मन्दिरों पर हमले करें । क्या यह वास्तविक धर्म प्रेरणा है ? प्रणाली में अंतर तो कुछ न कुछ सभी स्थानों पर होता है । इससे धर्म की विशाल परिभाषा में क्यों फर्क समझा जाता है ? "थाप्या न थाप्य कीता न होई आपै आप निरंजन सोई" की इस परिभाषा से कोई जाति और धर्म की पृथकता वाली बात सोच सकता है?

आज यह छिपे रूप में प्रयत्न है कि कुछ बीच के राज स्वतंत्र हों और यह षडयंत्र चल रहा है । पैसा होने पर भी इसमें किसी भी धर्म को फंसना नहीं चाहिए, ऐसा हमारा मत है । अगर भारतीय धर्म वाले इन से विचार करे तो वो आज हर समस्या का समाधान मिलकर कर सकते हैं । इससे मानव मन को शान्ति के साथ जीवन के साधन और प्रेरणा व्यापक रूप में उपलब्ध होंगे । धर्म का मूलरूप तो सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत रहा है । यही इसकी उज्ज्वलता है । धर्म किसी देश प्रान्त और क्षेत्र की सीमा में निबद्ध नहीं होता वह तो स्वयं सर्वोद्धारक है । यही हमारे सभी धर्म का हृदय है । सब में घुलमिल जाने से ही उसमें विविधता की झलक देखने को मिलती है । यह धर्म को विशेषता है कि वह उसे अपनाने वाले का होकर उसी का बन जाता है और किसीं भी दलील की बात नहीं है। क्योंकि वह दिल में बस जाता है । हर व्यक्ति में वह अपनापन पैदा कर देता है ।

यह एक दूसरे के लिए जीवन का आधार बनता है इसलिए इससे जुदाई तो कभी भी नहीं आ सकती । आज मानसरोवर कहीं क्यों नहीं, फिर भी उसकी राजहंस की पंक्ति और सफेद पानी हमारे दिलों में बसा हुआ है । वेदों में बस गया है । हम वहाँ भी जाते हैं, मगर अधिकार की बात नहीं । प्रेम और पवित्रता की बात करते हैं । यह बात सभी को सोचनी है । नीति एकता का साधन है, जुदाई का नहीं । सेवा में प्रतियोगिता होती है, दुश्मनी नहीं होती । न इसमें अफसोस की बात है । हम सभी मिलकर चिन्तन की दिशा को वदलने का प्रयत्न करेंगे ।

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरि:

धन-धन धन की महिमा न्यारी,

तो हू न बिके गोवर्धनधारी ।

यह दुर्भाग्य की बात कही जायेगी कि नाथद्वारा टेम्पल बोर्ड में फिर से घिसी पिटी नियुक्ति की गई है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सरकारी मशीनरी की एक राजनैतिक कड़ी मात्र है, जिसका औपचारिक रूप हमारे सामने स्पष्ट होता है । यह स्पष्ट सत्य है कि बोर्ड के कार्यकाल में आज तक भी वहाँ सम्प्रदाय की उन्नति और सिद्धान्त की बात कभी नहीं हुई । आगे भी इसकी भावना दिखाई नहीं देती । शायद भाष्य को छापकर यह समझ लिया गया कि इससे वैष्णवों का मुख बन्द हो जायेगा । किन्हीं अंशों में यह सही भी है कि वैष्णव जनता इतनी बेखबर है कि वह धर्म के लिए मुंह खोलना नहीं जानती और हमेशा मुंह बन्द रखती है । यह सभी जानते हैं कि कितना भी अत्याचार हो वह कभी मुंह नहीं खोलेगी । इस विवशता का ही यह प्रमाण है कि ऐसे सदस्य जो केवल धनाढ्य हैं या उनके पक्षपाती हैं, उनकी नियुक्ति दिखाने को की गई है । किन्तु उनमें धर्म, संप्रदाय के प्रति न तो संवेदना है, न उनको ज्ञान ही है ।

इस विवशता का यह जीता जागता प्रमाण है । श्रीमान् तिलकायत जी, जिनका अपना सम्मान है, वस्तुतः एक कठपुतली से बढ़कर कुछ भी नहीं रहते । साथ ही वैष्णव प्रतिनिधि की जो यहाँ आवश्यकता है, उसको नजरन्दाज किया गया है ।

पार्टी की थैली भरने वाले तो वैसे भी दान करते ही रहेंगे । इससे किसी की धर्म क्षेत्र में नियुक्ति करना उचित नहीं है । अपने आपको संप्रदाय के संरक्षक अथवा संरक्षित मानने वाली इस समिति या बोर्ड ने इतिहास में कभी आज तक आदेश काम नहीं किया है ।

दूसरों के बलिदान की वेदी पर अपना वर्चस्व स्थापित करने मात्र से वैष्णवता का जामा पहनने वाले आज बहुत से लोग हैं, जिनके द्वारा सम्प्रदाय और धर्म का कभी हित नहीं हुआ है ।

दूसरो के बलिदान की वेदी पर अपना वर्चस्व स्थापित करने मात्र से वैष्णवता का जामा पहनने वाले आज वहुत से लोग हैं, जिनके द्वारा संप्रदाय और धर्म का कभी हित नहीं हुआ है ।

यह धर्म की कमजोरी है कि वह विवश होकर ऐसे ही लोगों के हाथों में पड़ जाता है । क्योंकि गरीबों में त्याग और ईमानदारी आजकल नहीं समझी जाती । यह राजनीति की देन है कि कोई भी धर्म अपना प्रतिनिधित्व या अपनी सुरक्षा बिना आन्दोलन के सरकार से स्वीकृत नहीं करा सकता । यह वात सिखों ने स्पष्ट कर दी है । राजनेता भी उन्हीं

को आदर देते हैं । शायद टेम्पल बोर्ड और सरकार के लिए यही कुछ करना होगा । पूंजी पर निहित धर्म अपने आप में ऐसे ही निहित होता है । कितनी विवशता है यह धर्म और उसके आचार्यों की । धर्म के सर्वस्व के ये लुटेरे कितनी शान से जी रहे हैं ? जबकि धर्म इनके हाथों एक पक्षी की भांति छटपटा रहा है । वह दिन कब आयेगा जब हम गरीबों को त्यागी, ईमानदार जीवन का महत्व समझा सकेंगे । वह यह जान पायेगा कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता । जिससे धर्म की खरीदा जा रहा है । धनिकों का जीवन कितना और कैसा धार्मिक होता है यह तो भगवान ही जानें । किन्तु इनकी धार्मिक कहना पड़ता है भगवान की अनोखी ठेकेदारी के ये महान कर्मठ भगवदीयजन हैं । इस स्तर पर धार्मिक समता की बात कभी नहीं हो सकती । प्रेम से एकता की अनुभव और है । सत्ता के दबाव से किसी भी धनिक के आगे झुकना और बात है ।

वाह ! आज का परवंश धर्म, प्रभु और आचार्य जिनके घुटने धनिकों के आगे टिक गये । आह रे अकिंचनों के आराध्य ? तुझे इससे कौन बचायेगा ? एक समय था जब ब्रज भक्तों ने पूतना के जहर से तुझे मुक्त किया था । किन्तु आज कौन होगा, ऐसा तेरा अपना ? आखिर तुझे तेरे अकिंचन नहीं पा सके । यह कितनी पीड़ा दायक बात है, जिसका दर्द पहलू भी नहीं बदलने देता । शायद आज ऐसे बलिदानी नहीं हैं । फिर से इस समाज को गुरु गोविन्दसिंह और उनके पुत्रों की या वासुदेवदास और श्रीवल्लभ के उन तेजस्वी शिष्यों की जरूरत है, जिन्होंने धर्मान्तरण रोकने हेतु दिल्लीपति को भी विवश कर दिया । अथवा ऐसा व्यक्तित्व चाहिए जिसमें कन्हैया और भीम के एक साथ दर्शन होते हों ।

यह मार्ग, जो कभी भगवान के आगे भी प्रेम से समर्पण सीखा था, आज उससे ही उसके जन बिक रहे हैं । धर्म में भी हुकूमत का नशा होने लगा है । वह सेवा नहीं है। जो समर्पित और निर्मत्सर सन्त किया करते थे । जब सत्याग्रह भी पैसों से चलता हो तब क्या कहा जाय ? यह ब्रजपति के भक्तों की पूर्ण विवशता । फिर भी यह तो हकीकत है कि द्वारिकाधीश इतने विशाल वैभव में भी अपने उन अकिंचनों को भुला नहीं पाया और उसको उनका प्यार, विवश करता रहा । आखिर वह अपनों के ही दुर्दान्त आचार से व्यथित होकर परम वैभवशालिनी द्वारिका को हमेशा के लिए जलमग्न करने पर विवश हो गया । शायद ऐसी ही स्थिति जा सकती है । उन धर्म संस्थानों की जहाँ सर्वहारी सरकार और सम्पत्ति शास्त्रियों का मंजुल सामंजस्य हो ।

वाहरी राजनीति और धन की विवशता । तुझे शत शत धन्यवाद है । यद्यपि तू प्रणम्य नहीं है फिर भी तुझे लोग प्रणाम करते हैं, नहीं नहीं सलाम ही करते हैं तेरा सजूदा किया जाता है चिरते हुए वीतराग परवश वो धन में बचे त्याग का नमूना यह आधुनिक दान है । है न कहीं अपना कोई मन से नहीं धर्म करे । बेचता खरीदता जो सबका सम्मान है ।

सेवा का यह व्रत और वह विवेक कहां है ? कहां हो ब्रजनाथ ? आज इस अलका के इन्द्र से बचालो डूबते ब्रज को । कहना तो नहीं चाहता तुम को क्योंकि तुम्हारी कोमल ऊंगलियों पर गिरि का भार नहीं चढ़ाना चाहते प्रेमीजन । किन्तु हमें बल दो । कि हम उसे उठा सकें । उत्सर्ग कर सके । ब्रज के प्रहार को अपने वक्ष पर सहन कर सकें ।

हमसे तो यह ब्रज ही श्रेष्ठ है कि जिसने ठुकरा दिया था स्वर्ग की । समझा दिया था अपनी मौत से देवराज इन्द्र को कि अवसरवादिता में देवत्व कैसा होता है । फिर भी वह देव होते हुए भी दैवी नहीं हैं । उस का अभिमान विजयी होकर भी पराजित हो गया। किन्तु वह मरा नहीं अमर हो गया । ऋषि की हड्डियों के ढांचे से मार कर । आखिर वह फिर भी त्याग को ही सम्मान दे गया था ! पूरा हुआ उसका अपना लक्ष्य । किन्तु सभी ने कुछ और ही कहा था क्योंकि वह तो सम्पदा के उपासक सैद्धान्तिक जीवन से अनजान मदमाते थे । उनकी आंखें पहचानने में असमर्थ थीं उस दिव्य सत्य को । मरने के बाद भी आकाश में गूंजती रही वह आवाज आकाशवाणी बनकर । 'समन्जत्वा विरहैमूथ कांक्ष ।' उस वेदना में भी अपार आनन्द का निर्झर झरने लगा । यह एक सत्य की मौन कथा थी । जिसको समझने के लिए अलौकिक मन की प्रेम भरी आंखें ही पहचान सकती थीं । क्या अब भी ऐसा ही होगा या हो रहा है और होने जा रहा हैं ?

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

बम्बई २९ जनवरी १९८४

आज वैष्णव समाज के उत्थान के लिए एक व्यवस्थित योजना क्रियान्वित करने की आवश्यकता थी, किन्तु इसकी उपेक्षा की गई, जिस समय अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् का कार्य होता था उस समय श्री वल्लभाचार्य वेदमंदिर योजना भी प्रस्तुत की गई थी जिसको श्री मधुरेश्वर जी तात्कालिक उपाध्यक्ष तथा श्री श्याम मनोहर जी महाराज के समक्ष प्रस्तुत किया गया था ।

खेद है कि उसके लिए स्थान लेने पर भी परिषद् के द्वारा इसे सक्रिय करने की कोई कोशिश नहीं की गई । आज भी गोवा में तथा कोल्हापुर एवं इचलकरंजी में स्थान है । फिर भी आज तक इसमें कोई कार्य करने की चेष्टा भी नहीं की गई । आज बहुत सा वैष्णव समाज निराधार है जिसको स्थान मिलता है और इसके साकार होने पर वेद की प्रतिष्ठा के साथ ही परिषद को सक्रिय कार्यकर्ता मिलते । संप्रदाय की उन्नति होती ।

इस योजना को नित्यलीलास्थ श्री गोकुलनाथ जी महाराज, श्री बदरीनाथ जी शास्त्री, श्री नटवरलाल ह. शाह, श्री निरंजन शास्त्री, कुम्भनदास जी झालानी, श्री प्रभाकर जी शास्त्री, श्री जितेन्द्र भाई सास्त्री, श्री जयवल्लभ शास्त्री, श्री मधुभाई पटेल, श्री दादु भाई

(हरिशरण) श्री ब्रजदास दावड़ा, श्री हंसराज गोकुलदास (कोल्हापुर), श्री ब्रजमोहन दास जी गोयदानी, श्री ब्रजमोहन दासजी विजयवर्गीय, श्री विष्णुभाई पणजी, श्री एम. जी. भाटिया, श्री के. का. शास्त्री, श्री आर. जे. पटेल तथा श्री डॉ. मणियार आदि सभी का समर्थन प्राप्त था ।

आज भी बैठक की जमीन विद्यमान है और अन्य स्थानों की बैठकों का विकास इस पद्धति से किया जा सकता है । वेद वर्धिनी वाहन का यही लक्ष्य है कि वह इस कार्य का प्रचार एवं वैदिक साहित्य का प्रचार करें।

योजना निम्नाकिंत है

श्री वल्लभाचार्य वेद मन्दिर योजना जिसमें श्री वल्लभाचार्य का स्वरूप तथा अन्य आचार्यों के समन्वयात्मक ग्रन्थ एवं स्वरूपों की प्रतिष्ठा की जाए । और वहाँ सत्संग का आरम्भ किया जावे, जिससे भारतीय संस्कृति पर होने वाले अनुचित प्रहारों को रोका जा सके । इन मंदिरों के साथ गौशाला एवं पद्धति से जनमानस को भारतीय संस्कृति की प्रेरणा दी जाने की योजना है ।

जिसमें अनाथाश्रम, महिला प्रशिक्षण केन्द्र, बालमंदिर, वाचनालय तथा औषधालय प्रारंभ किया जावें । गोवा में इस स्थान को विश्व कल्याण केन्द्र के रूप में बैठक जी के साथ विकसित किया जावें । इसके द्वारा लोक जागरण धर्म द्वारा किया जाए ।

आवास के हेतु इसमें व्यवस्था होनी चाहिए । जिससे यह आश्रम के रूप में विकसित हो । इसमें नियमित वैश्वानर हवन तथा सत्संग हो । यहाँ लोग आधिदैविक प्रेरणा प्राप्त कर सकें ऐसा प्रयास होना चाहिए । रहने के आवास छोटे सुविधाजनक हों । जो व्यक्ति आवास संस्था को अर्पित करे उसका नाम पट्ट पर लिखा जावे । वेद मंदिर में षोडश स्तंभों पर ग्रंथ उत्कीर्ण किए जावें । बोध वचनों तथा वैदिक वाक्यों का भी समावेश हो। आवास के नाम, मधुवन, तालवन, कुमुदवन आदि ब्रज के स्थलों के नाम से रहें । आश्रमवासी नियमित जीवन वितावें । बैठक चरित्र के शिल्प उद्यान में उत्कीर्ण हो । भारतीय कला, साहित्य संगीत आदि के प्रशिक्षण की व्यवस्था के साथ ही कुटीरोद्योग चलाये जावें । श्री वल्लभाचार्य के सिद्धान्त और दर्शन का भारतीय विविध भाषाओं में तथा विदेशी भाषाओं में प्रकाशन कराना । आश्रमवासी प्रार्थना करके कार्य करें । नित्य प्रवचन श्रवण करें । प्रसाद लेकर क्षणिक विश्राम के बाद वाचांनालय आदि में कार्यरत हो । अपंगों के लिए अलग व्यवस्था हो । इस केन्द्र में प्रभु सेवा का प्रशिक्षण तथा लोकसेवा का प्रशिक्षण धर्म कार्य मानकर दिया जावे । मानव जीवन के आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक निर्माण के लिए प्रयत्न किए जावें । इसमें सिलाई आदि की शिक्षा के साथ ही गीता, रामायण, महांभारत तथा अन्य ग्रन्थों का अध्ययन कराया जावे । पुरुषों के लिए भी प्रशिक्षण वर्ग चलाने चाहिए । सेवा धर्म की प्रेरणा, महत्व तथा विविध ज्ञान, की प्रवृत्तियां प्रारंभ की जावें । इसमें व्यायाम, प्राणायाम एवं सूर्य-नमस्कार आदि विषयों

का समावेश होना आवश्यक है । अभावग्रस्त मानव जीवन को स्वावलंबी और उच्च बनाने के लिए प्रत्येक प्रकार की प्रवृति की जानी चाहिए । वैदिक ऋषियों के द्वारा प्रतिपादित वैदिक ज्ञान एवं भागवत आदि के संरक्षण हेतु कार्य किया जावे । इसी प्रकार श्री महाप्रभु की बैठकों के साथ भी कुछ विकास कार्य होने चाहिए ।

वेद वर्धिनी वाहन की योजना इसका प्रथम सोपान (सीढ़ी) है । स्थान तो इचलकरंजी, कोल्हापुर एवं गोवा में श्री बैठक जी के लिए परिषद के पास है । कुछ इचलकरंजी में निर्माण भी हुआ है । शेष स्थानों पर जमीनें हैं । बैठक जी के लिए श्री नाथ जी सत्संग मण्डल द्वारा दान की गई धनराशि भी गोवा में पड़ी है । यह रकम लगभग बारह हजार जितनी है ।

इचलकरंजी में स्वरूप की प्रतिष्ठा होती है तथा कुछ आवास का निर्माण एवं व्यवस्था करनी है । यहाँ से पण्ढरपुर आदि स्थानों में महाराष्ट्र में प्रचार किया जा सकता है । वेदाध्ययन और प्रवचन तथा मराठी साहित्य का मुद्रण अनुवाद से कराना है । सम्पूर्ण स्थान को सुरम्य बनाकर एक उत्तम प्रकल्प स्थापित किया जा सकता है । खेद है कि अस्वस्थता एवं अन्य कारणों से यह भी साकार नहीं हो सका । भगवत्कृपा और वैष्णव तथा धर्मानुरागी जनों के सहयोग एवं आचार्यों के श्री वरदहस्त से साकार होकर कृतकार्य होगा । आप से भी सहयोग की अपील है ।

आज्ञानुसार

भवदीय

धर्माधिकारी प्रथमपीठ,

श्री वल्लभसंप्रदाय के भगवतस्मरण

सेवाफल प्रकल्प चल-चिकित्सालय योजना

इस योजना में एक वाहन रखकर गांवों में एक डॉक्टर का दल भेजना है । जो गरीबों की सेवा करे तथा उस वर्ग के लोगों का निदान करके दवाई का वितरण करें ।

इस काम के लिए डॉक्टर गोस्वामी तथा डॉक्टर मोक्षदा जी को तैयार किया है जो अपनी निशुल्क सेवा देंगे तथा इस योजना के साथ ही खाने का सामान पाउडर का दूध तथा वस्त्रों के साथ बंगला में अनुवादित श्री वल्लभाचार्य का साहित्य लोगों में वितरित किया जाएगा । दवाइयां और वस्तु दान में प्राप्त करेंगे । तथा कुछ समय बाद इसका एक स्थाई कोष बनाया जाएगा, जिससे यह योजना क्रियान्वित होती रहें ।

फिर एक ऐसा नर्सिंग होम वनाना है जिसमें अनाथ अथवा अवैध बच्चे जिनको अमेरिका वाले या विदेशी ले जाते हैं, उनका पोषण करके उनको जीवन बिताने योग्य

बनाया जाये । आज या तो भ्रूण हत्या होती है अथवा श्रीमती टेरेसा उन्हें गोद दिलाकर वाहर भिजवा देती है ।

साथ ही इससे संप्रदाय को कार्यकर्ता भी प्राप्त होंगे । यह आशा करना कि हमारे समाज में त्यागी लोग निकल कर सेवा करने आए, यह कम संभव है । इससे एक धर्म को भी बचाया जा सकता है तथा यह स्वदेश सेवा भी होती है जिससे हमारे बच्चे हम पर ही विदेशी बनकर प्रहार न करें ।

परिषद की कार्यकारिणी समिति इसका समर्थन और स्वीकृति मात्र प्रदान करे तो यह योजना साकार हम स्वयं कर सकते हैं । साधन भी मेरे पास हैं । श्री वल्लभाचार्य का नाम इससे पूर्वाचंल में प्रचारित होगा और पुष्टिमार्ग की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट होगा पूर्वाचंल में इससे प्रचार होगा । क्रमशः हम इसके बंगाल और उड़ीसा के क्षेत्र में क्रियान्वित करेंगे । मोटर पर परिषद का चिन्ह और श्री वल्लभाचार्य के बोधवाक्य रहेंगे। अंदर तथा दवा के पर्चों पर परिषद् का नाम तथा जनकल्याण प्रन्यास द्वारा प्रदत्त ऐसा उल्लेख रहेगा । श्री महाप्रभु का एक चित्र आशीर्वाद की मुद्रा में रहेगा, जिसके आगे "स्वधर्माचरण् श्वत्य।आ विधर्गाच्चनिवंर्तनर्म" का श्लोक लिखा होगा । एक और "एवं नित्याभियुक्तानाम योगक्षेमम वहाम्यहम्" यह वाक्य लिखा होगा तथा भगवान के लिए जीवन जीने का संदेश होगा । इससे लोगों को प्रेरणा मिलेगी ।

छोटे सुबोध ग्रन्थों का वितरण किया जाएगा । हिन्दी और बंगाली, उड़ीसा में उड़िया अनुवाद होगा । चित्र के साथ के बोधवाक्य प्रान्त की भाषा में होंगे और वह पट्ट प्रान्त में बदल किया जाएगा । रात्रि में उतार कर रख दिया जाएगा । यह सावधानी और कम खर्च करने के लिए ही लिखा है । साथ ही लोहे पर अक्षरों में अंकित रेल की भाँति ही पट्ट लगाये जावें ।

दानपात्र और रसीद बुक भी साथ रहेगी । फिर पेथोलोजी और कार्डियोग्राम की व्यवस्था समय पर साथ ही की जायगी । कार्डियोग्राम तो कुछ समय बाद ही रखा जाएगा और एक फ्रीज मोटर में रहेगा । यह योजना दूसरे चरण में होगी । जिसमें यह गाड़ी अपेक्षित होगी । अतः अभी छोटे साधनों से काम होगा । अन्दाजन इसे ढाई लाख रुपयों से प्रारंभ किया जाएगा । इसमें प्रथम खर्च तो गाड़ी का है फिर दवा आदि का होगा और साधन यथा सुविधा बताए जायेंगे । विहार में टाटा नगर (जमशेदपुर) के पास पटना के पास मेरा मंदिर है वहाँ से तथा आसाम को अभी छोड़ना होगा उड़ीसा में पुरी और कटक के समीप काम होगा । कटक में अपनी शाखा और परिचय है और टाटा नगर में भी है। आशा है आप इसको सम्मति प्रदान करेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

समाज सेवार्थ श्री कृष्णाश्रय की निर्माण योजना

आज समाज में बहुत से बालक एवं स्त्रियां उत्पीड़न की शिकार हो रही है, ऐसे निस्साधनजनों को श्री वल्लभाचार्य भगवदाश्रय प्रदान करके सेवा, सदाचार से उनको उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं ।

श्री विट्ठलेश्वर प्रभुचरण ने ऐसे अनेक जीवों को जीवनदान देकर सन्मार्ग पर लाने का उत्तम प्रयास किया है । भक्तिमार्ग में भगवान् का सर्वोद्धारक स्वरूप इसी हेतु से स्पष्ट किया गया है ।

समाज में ठुकराई और पीड़ित जनों की कमी नहीं है और ऐसे भी लोग हैं जिनको अपने घर में ही अशांति उनके पारिवारिक जनों से होती है । आधुनिक समाज में शिक्षा का उद्देश्य ही दूसरा हो गया है । पश्चिमी वातावरण से प्रभावित होकर आज यह एक समस्या का गंभीर पहलू बन गया है ।

श्री वल्लभाचार्य जन-कल्याण प्रन्यास की स्थापना वैष्णव परिषद् द्वारा इसी उद्देश्य को साकार करने के लिए हुई थी, उसे फिर से गतिमान करने के लिए पिछले जन-जीवन को उन्नत बनाने का कार्य प्रारंभ करना है । श्रीमान् विनोद जी गुप्ता ने जो इस समय "सावधान" संस्था का संचालन करते हैं और अनेक जन-सेवा के महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं और कर चुके हैं, यह आश्वासन दिया है कि तलासरी के पास इस विषय में योजना को साकार करने में उनके द्वारा भूमि की व्यवस्था करने का प्रयास किया जायगा ।

यह खेद का विषय है कि हमारे समाज में नारी जीवन के साथ बलात्कार और भ्रूण हत्या आदि अनेक पाप किए जा रहे हैं, उनको हम आश्रम पद्धति से ही रोक सकते हैं, इसको लक्ष्य में रखकर तथा वृद्धाश्रम आदि का विचार करके अ. भा. पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद ने श्री वल्लभाचार्य वद मंदिर योजना बनाई थी । इसी योजना का रूपान्तरम करके स्व. सेठ गोविन्ददासजी ने श्री कृष्णधाम विद्यापीठ की योजना रखी जिसको बहुत वर्ष बीत गए और अभी उसके लिए भूखंड जतीपुर (मथुरा के पास] पड़ा है । इचलकरंजी (महाराष्ट्र) में स्थान प्रचारार्थ अर्धनिर्मित है और उसका उद्‌घाटन होना भी शेष है ।

गोवा महाराष्ट्र के समीप ही श्रीवल्लभाचार्य की बैठक निर्माण के लिए श्रीनाथ जी सत्संग मंडल ने कुछ धनराशि दान की है जो जमा है ।

अब आदिवासी विस्तार में झाबुवा में काम हो रहा है तथा यहां बम्बई के पास कार्य करना आवश्यक है जिससे ठुकराए जन अशरण-शरण श्री हरि का आश्रय प्राप्त करके

अपना इहलोक, परलोक संवार सकें । इसमें आप सभी प्रबुद्ध धार्मिकजन हमको सहयोग प्रदान करके इस कार्य को सफल बनाने में सहयोग देंगे, ऐसी आशा एवं अनुरोध है ।

आज्ञानुसार
श्री प्रथमपीठाधीश्वर वल्लभसंप्रदाय
कोटा के धर्माधिकारी के भगवत्वभरण

आवश्यक सूचना कार्यकर्ताओं के हेतु

इस परिपत्र के द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को यह सूचित किया जाता है कि आपका व्यवहार और वाणी संयत होनी चाहिए । तभी परिषद् की गरिमा सुरक्षित रहेगी । किसी को यह कहना कि आप क्या समझते हैं इसके स्थान पर यह करना चाहिए अथवा ऐसे किया जाये तो कैसा रहेगा, ऐसी सौहार्द, पूर्ण वाणी एवं आदरणीय भाषा का प्रयोग करना आपकी गरिमा के अनुरुप रहेगा ।

व्यवस्था में बाहर से आने वाले व्यक्ति को स्थान दिखाना या उपयुक्त व्यक्ति से मिलना यह काम करना हैं । केवल किसी का नाम बताने से अपरिचित व्यक्ति असमंजस में पड सकता है ।

यह स्मरण रहे कि हम समर्पणसे आत्मनिवेदन की आहुति देकर धर्म के संगठनात्मक यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं । यह स्थान तो सेवा का है, अधिकार एवं हुकूमत का नहीं है । मृदुभाषण और नम्र व्यवहार ही सबको सांत्वना देता है । यह श्री वल्लभाचार्य का सिद्धान्त है । दैन्यभाव से भगवान् भी प्रसन्न होते है और सेवा हमारा मुख्य धर्म है । अतः समझ और सहिष्णुता से काम लेंगे ऐसा हमारा अनुरोध है ।

आदेश - प्रदाता
गो.र. प्रथमेश श्रीमद् वल्लभाचार्य
प्रथमपीठ (कोटा)

श्रीहरिः

सिख समुदाय एवम् उनके धर्मगुरूओं से आवश्यक अनुरोध

आपके द्वारा बहुत दिनों से आन्दोलन कुछ बातों को लेकर चलाया जा रहा है । आपकी कुछ कठिनाइयां हो सकती हैं , जिनको दूर करने में कितना और किस प्रकार सहयोग दे सकते है यह हमें जानकारी देने का कष्ट करें ।

यद्यपि आपके आदरणीय तथा श्रद्धेय धर्मगुरूओं की परमपरा मूलतः हिन्दू है और उनके द्वारा धर्मरक्षार्थ महत्वपूर्ण कार्य हुआ है । अतः हम आपको अपने से अलग नहीं मानते ,किन्तु आप कैसा अनुभव करतें हैं यह बात दूसरी ओर है । फिर भी आप भारत के ही नागरिक हैं । जब गुरूद्वारों का कानून बना तब हम अज्ञात रहे आपके उपकार का बदला नहीं दे सके किन्तु अब आपकी कठिनाइयों को दूर करके हम अपने ही धर्म का पालन करेंगे । संविधान में संशोधन का प्रश्न गौण है, किन्तु उसके बिना भी समस्याओं का समाधान हो सकता है । उसमें समाज आपके साथ रह सकता है ।तथा धार्मिक दृष्टि से समाज एवं देश की एकता भी अखंड रह सकती है । उद्वेग और आतंक फैलाने से समाज का सदभाव आप प्राप्त नहीं कर सकते , यह एक तथ्य है तथा यह उचित भी है। आपकी बातों का पूरा ज्ञान भी समाज को नहीं है । आशा है आप इस पर गंभीरता से विचार करके हमें अपने प्रतिनिधि के द्वारा जानकारी देना पसंद करेंगे । इससे हम तक आपके लिए उपयोगी सिंद्ध हो सकते हैं यह सोचने का अवसर हम सभी को मिलेगा । राजनीति ही सभी बातों का समाधान नहीं है और न सत्ता से ही किसी समस्या का हल होगा । सदगुरू का मार्ग तो विशाल और उदार है । भारत अब पाकिस्तान के विभाजन जैसा मूल पुनः नहीं दोहरा सकता ।

यथासमय आप उत्तर देने का श्रम करें, यही अनुरोध है । आशा है आप हम सभी को अपना समझ कर यथार्थ से अवगत करायेगें । यह एक स्पष्ट तथ्य है कि हम राजनीति से अलग हैं और उसी दृष्टि से आत्मीयता से खुला विचार करने में सक्षम हैं । शेष कुशल है । आप सभी सानंद होंगें ।

आज्ञानुसार
जगतगुरू श्रीमद् वल्लभाचार्य
भगवत् स्मरण पूर्वक सत् श्रीअकाल

श्रीहरि :

आवश्यक सूचना-परिपत्र

इस परिपत्र में हम सभी वैष्णव कार्यकर्ताओं से यब अनुरोध करना चाहते हैं कि परिषद को पुष्टिमार्ग एक शक्तिशाली संस्था सेवा के लिए बनाना बहुत आवश्यक है ।

आज हम इसका महत्व नहीं समझ रहे हैं ,यह खेद का विषय है । संप्रदाय की रक्षा और आचार्यों की गौरव -गरिमा के साथ ही सेवार्थ संगठन अनिवार्य है । इसका विधिवत् संचालन होना चाहिए और इस विषय में आप सभी वैष्णवों से संपर्क करके इसका महत्व समझाने का यथाशक्ति परिश्रम करें ।

आज हमारा समाज दुराग्रहों में फंसा हुआ है ।आपसी तनावों से धर्म की निरर्थक हानि हो रही है । धार्मिक श्रद्धा का एक पक्ष केवल कुछ नियमित प्रकारको ही धर्म समझ कर आपना कर्तव्य पूरा कर रहा है । उसके सामने कार्यक्रम नहीं है । प्राचीन कार्य करने वाले अब बिछड़ रहे हैं । अवस्था का धर्म उनकी कार्यशक्ति में बाधक बनरहा है । उनसे हमको प्रेरणा लेनी चाहिए । उनका सन्मान करके उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना है ।

धर्माचार्यों के कार्यक्रम बनाकर प्रचार-प्रसार करना है । हमारे सामने संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी है । हमारे सामने धर्म की गति को समाज की ओर घुमाने का प्रश्न है । इसके लिए धीरज से हमको विवेक के साथ काम करना है । चाहे कुछ भी सहन करना पड़े ,इसके लिए तैयार रहने वाले व्यक्ति चाहिए । कार्यक्रम मिलजुल कर करने होंगे, तभी संगठन हो सकता है । क्यों कि समाज में मान्यतायें दृढ हो चुकी हैं, इसलिए संगठन में बहुत सी बाधायें आने की संभावना है ।

आपके सामने भी समस्यायें हैं, यह जानते हुए भी हम अपनों से ही यह आग्रह कर सकते हैं । स्थायी काम करने के लिए हमको अपनी शक्ति का नियमित प्रयोग करना होगा, श्रद्धा का सही उपयोग और उसकी दृढ़ता रहे इसके लिए आप और हम मिलकर त्याग और तप करें । आपसी झगड़े की बातों को महत्व न देकर उनकी कभी चर्चा भी न करें । इससे अनुभव लेना है, आलोचना नहीं करनी चाहिए ।

आज धर्म के कार्य और सेवा के लिए आपको सच्चा सेवक और ऋषि बनना होगा। किसी भी स्थान पर नियमित रूप से मिलकर संस्था की प्रगति के बारे में सोचें । यह न समझें कि इससे कुछ नहीं होता । नित्य -नियम से विचार करने पर ही सफलता मिलती है एवं वातावरण बदलता है । नियमित धर्मरक्षा के लिए कुछ दान अपनी ओर से अवश्य करें ।हमारे यहाँ गाय आदि का भाग जैसे निकाला जाता है और हम सभी का भाग निकाल कर ही भोजन करते हैं । यह हमारी परम्परा और संस्कृति रही है । इसी प्रकार हमको आज भी धर्मरक्षा का भाग निकलना होगा ।

आपकी श्रद्धा और लगन हमारे आचार्यों को प्रेरित करेगी और उनको इस संगठन की महत्ता का उपयोग प्रतीत होगा । हमारी सेवा का उपयोग हमारे पूज्यजन समझें और हमारी नियोजन उस कार्य में करें यही उनका आशीर्वाद होगा । संकट हमेशा नहीं रहता। कोटा में नये कार्यकर्ता होने पर भी कार्य सफलता से संपन्न हुआ

यह बात प्रमाणित करती है कि आपसी सहयोग और सदभावना काम को सरल कर देती है । हमको आत्मीयता से मिलकर रहना है । इसकी शिक्षा ही व्यवहार का परम महामंत्र है । यही सफलता की पहली सीढ़ी है । यह शिकायत ठीक नहीं कि हमको काम नहीं बताया जाता । हमको उनसे काम लेने की भूमिका और विश्वास प्रेम से प्राप्त करना है ।

ध्यान रहे कि भाषा में शिष्टाचार कभी नहीं भूलना चाहिए । यही स्नेह और क्लेश का मूल है । हँसी करने की सीमा होती है और वह शिष्टाचार की परिधि का उल्लंघन न करे, यह स्मरण रखें । मातायें आज बहुत काम कर रही है । यह हमको पाठ सिखाती है । इससे शिक्षा लेने का कष्ट करें और उनका आदर करें ।

आज यह सही है कि लोग मिलकर रहना नहीं चाहते । यह बात परिवार और समाज में भी है । इसलिए हमको उन्हें इसका महत्व समझाना पड़ेगा । जैसे हिन्दुओं पर आपत्ति आयी और धर्म का नाश होने लगा तब यह नियम बनाया गया था कि प्रत्येक परिवार का बड़ा पुत्र सिख बनकर धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष करें । आज उल्टी बात हो रही है । हमको इससे शिक्षा लेनी है । बुराइयों पर ध्यान नहीं देना है ।

लोगों का यह मानना भी ठीक नहीं है कि हमारे देश में अनेक प्रकार की धार्मिक व्याख्यायें होना बुरी बात है । यह हमारे लिए वरदान हैं । इससे हर प्रकार से हमारे सामने धार्मिक महत्व की स्थापना हुई है । मानवीय विचारों को बहुत विस्तार इसके माध्यम से मिला है वेदों का भी ऐसा ही स्वरूप है धार्मिक विकास में उनकी विशिष्ट प्रणालियों ने हमारे समाज में हर तरह के वृक्ष लगाये हैं इनको सींचकर उपवन बनाया है, जिसकी छाया और फल हर तरह की रुचिवाले लोगों ने खाये हैं और शान्ति प्राप्त की है । इनको काटकर हम गुलदस्ता बना सकते हैं किन्तु उद्यान नहीं लगा सकते । यह व्यवस्था धार्मिक परिवार की विशालता को संभाले हुए हैं ।

इन बातों पर ध्यान देकर हमको भी अपने परिवार और समाज को सम्भालना है। इसके लिए हर व्यक्ति को परिषद् बनने की साधना करनी है । यहाँ जो भिन्नता दिखायी पड़ रही है, वह हमारी सेवाओं की कमी का कारण है । इसलिए हमें और अधिक त्याग करना होगा । उनको विश्वास दिलाना है कि हम हर हालत में आपके ही अपने हैं। ऐसा करने की जरूरत इसलिए पड़ती है कि आज का वातावरण ही अविश्वास का बन गया है। इसकी छाया में सभी ऐसा ही सोचने के अभ्यस्त हो गए हैं । यह दोष राजनैतिक चिन्तन की अधिकता का परिणाम है । इसलिए श्रीवल्लभाचार्य हमको चिन्तन की दिशा

बदलने की सलाह देते हैं जैसे श्री सूरदास को उन्होंने प्रदान की थी ।

मनुष्य के स्वभाव में भूलें हो जाती है और उनको स्वीकार करके ही जीवन में कमियों को दूर कर सकते हैं । दोष को दबाना या छिपाना उसको बढ़ाना है । मिटाने के लिए तो उसे स्वीकार करके दूर करना होगा । ऐसे ही अपने जीवन को सुधारो और भगवान् का आश्रय लेकर दोषों को मिटाकर दृढ़ बनकर सेवा करने का व्रत ग्रहण करो । यही बात आचार्यश्री ने ब्रम्ह-संबन्ध से सिखायी है । हमें एक समर्पित समाज का निर्माण करना है ।

प्रत्येक शाखा अपने आप में एक प्रचार केन्द्र तैयार करे और समीप के गाँवों में जाकर टेप के द्वारा या किसी अन्य साधन से धर्म प्रचार करने का संकल्प करें । इसके लिए वहाँ कार्यकर्ता तैयार होने आवश्यक हैं । उनको बहुत ही सहन करना पड़ेगा । यह समझ-सोचकर ही उनको सेवा का व्रत धारण करना चाहिए । अपने खाने, पीने का जो संभव हो वह सामान साथ रखें । शाखा के बन्धुओं को इसकी व्यवस्था की चिन्ता करनी है । उनको यह समझना है कि हमारा आत्मीय घूमने जा रहा है । उसकी व्यवस्था हमको करनी है । भगवान की लीला से भी यह प्रेरणा हमको गोचारण आदि के प्रसंगों में मिल जाती है ।

लीलाओं के प्रेरक प्रसंग हमारे आत्मकल्याण के साथ ही धर्म को समाजोन्मुख करने की प्रेरणा देते हैं । इसीलिए श्रीवल्लभाचार्य लीलागान को विशेषता प्रदान करते हैं । यदि धर्म समाजोन्मुख नहीं रहा तो वह लुप्त हो जायेगा । इसलिए न धर्म को असंभव ही बनाओ और उसका बहाना करो । उसके आधार से प्रेरणा लेकर प्रभु के लिए, समाज के लिए और भी कुछ बढ़कर कहना हो तो विश्व के लिए जीना-सीखो । हमारे गुरु-गृह और हवेलियों की परम्परा पहले इसी पर प्रतिष्ठित थी । आज जो कुछ भी हो उसका हमें ध्यान नहीं करना है । हमें वही सोचना है जो हमारे लिए उज्ज्वल प्रेरणादायी हो ।

सेवा और श्रम का उपयोग करके हम अपने जीवन में मंहगाई आदि की बढ़ती अनेक समस्याओं का मिलकर सामना कर सकते हैं । केवल साधन ही इसके लिए उपयोगी नहीं है । यह सोचो कि पत्नी को पति सभी साधन देता है और उसे प्रेम नहीं मिलता तब आत्मीयता के अभाव में उसे सभी निरर्थक लगते हैं और उनको उपयोगी दृष्टि के स्थान पर घृणा की दृष्टि से देखा जाता है । ऐसे ही समर्पण के सेवा और दान के साथ भी ऐसी ही क्रियायें धर्म में सिखायी जाती है । दवा के साथ ही बच्चे को प्यार से अधिक आराम मिलता है । ऐसा आश्वासन आचार्य श्रीवल्लभ प्रभु के द्वारा सभी को प्रदान कराते हैं । आप भी उसके इस महादान को वितरित करना सीखिए तो यही एक सहकारी संस्था या 'कम्यून' बन जायेगा । इसमें दूसरों के उधार लिये हुए विचार और माल पर गुजारा क्यों करते हो ? स्वयं के श्रम का समर्पण करो, यही सेवा है । उसी से अर्जित जो कुछ हो सके वह धर्म को देने की मन में सच्ची लगन रखो । वह पैसा ही करोड़ों रुपया बन

जायेगा। जैसे एक तुलसी का पत्ता भगवान् के लिए बहुत कुछ बन गया है । स्नेह का उपहार तो सब से महान है । यही तो प्रेमलक्षणा भक्ति की विलक्षणता है, जिसको मन में बसाना है । जब यह मन में आयी तो जीवन में अपने आप आने लगेगी । यही प्रेम का प्रभाव है ।

यदि घर में नियमित सत्संग पुस्तकों से करते हो तो इस बात पर भी विचार अवश्य करके देखना । संगठन का महत्व द्वारा ग्रह में नहीं, एकात में ही निहित है । जैसे हाथ-पैर अलग-अलग हैं और एक ही शरीर से जुड़े हुए रहकर ही काम करने में समर्थ हो सकते हैं । ऐसे ही हमारा भी अस्तित्व और जीवन है । धर्म की रक्षा भी इसी प्रकार से होगी। इसलिए आपस में समन्वय करो । लगत बातों पर ध्यान सर्वथा मत दो । आपका कोई बिगाड़ना चाहता है तब भी कुछ नहीं कर सकता । यह हमको श्रीवल्लभाचार्य के विश्वास प्रदान किया है । इसको सद्भावना से आजमा कर देखो । नित्य कुछ न कुछ सेवा और संगठन के लिए करो फिर भोजन या प्रसाद ग्रहण करने का नियम बनाओ । आप मेरी इन बातों पर आत्मीयता से विचार करके इनको स्वीकार करेंगे तो श्रीमहाप्रभु की कृपा से आप हर क्षेत्र में सफल होकर स्वधर्म के साथ सभी प्रकार की उन्नति करने में सक्षम होंगे। आशा है मेरे स्वजन इस आत्मनिवेदन पर विचार करके परिषद् की महत्ता को समझ कर मुझे कृतार्थ करेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

आवश्यक परिपत्र

आदरणीय बन्धुगण,

आशीर्वाद.

आज संगठन के बिना हमारा धर्म और समाज सुरक्षित नहीं है, साथ ही संगठन में कार्यकर्ताओं के समर्पित जीवन की आवश्यकता है । हमारा समाज इस बात को हृदय से अनुभव नहीं करता । वैष्णवता की आधारशिला दृढ़ नहीं है । केवल प्रदर्शनात्मक है । इसलिए आप अपने समाज और धर्म को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो इसके लिए यह बहुत आवश्यक है कि संस्था में समय देने का कष्ट करें ।

कार्यकर्ता और शाखाओं को केन्द्रीय सम्पर्क कार्यालय सतत सम्पर्क रखना चाहिए। तभी केन्द्रीय संस्था सक्रिय और जागरूक रहेगी । जहाँ तक हमारा अनुभव है गुजरात में या अन्य स्थानों पर परिषद् का कार्यकर्ता जावे तो वह अपनी व्यवस्था करके ही जावे,

अन्यथा उसको कष्ट हो सकता है । वैसे तो यह साधना है और सेवा का महान् तप है कभी भूख, प्यास, अपमान और उदासीनता का वातावरण भी सहन करना होता है । वैष्णव मंदिरों में भी जल पिलाने तक की व्यवस्था और कार्यकर्ता अथवा साधारण व्यक्ति को रहने और विश्राम करने की भी व्यवस्था नहीं है । हमारा समाज अतिथि सत्कार और अन्य साधारण मानवता को भी भुला चुका है तब विशिष्ट स्थिति में वैष्णवता कहाँ पल्लवित हो सकती है ? इसलिए गुजरात की सभा में हमको अपना सामान और व्यवस्था मिलकर ही करनी होगी । पुष्टिमार्गीय मंदिर भी आज अन्य प्रकार के हैं और धर्म रक्षा में वहाँ के व्यवस्थापक उदासीन हैं, अतः उन पर भार बनना भी उचित नहीं है ।

कठिनाइयां आने के बाद भी हम स्वधर्म की रक्षा का उत्तरदायित्व छोड़ नहीं सकते। जिनको इस मार्ग में रुचि है उनका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह स्वधर्म की सेवा और प्रचार के लिए जन, धन की व्यवस्था करने हेतु साधन जुटाये । आप संप्रदाय में त्याग की भावना का स्थान भोग की भावना ने ले लिया है । साथ ही रुपया देकर काम कराया जावे तब भी ऐसे व्यक्ति अपने काम के प्रति निष्ठावान् नहीं होंगे । यह युगानुरूप वैचारिक विकार आ गया है । सेवा की भावना के स्थान पर अधिकारी की भावना से इस प्रवृत्ति की अधिकता हो गयी है । इसलिए धर्म की सेवा में वह भावना आ नहीं सकती और न हमने ऐसा आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । हमारा पूरा लक्ष्य भी उस तरफ नहीं जा सकता । अथवा हम जानकर उपेक्षा करते हैं । इन सभी बातों पर विचार करके आप स्वधर्म रक्षा में कहां तक सहयोग कर सकते हैं यह विचारने का कष्ट करें । संस्था में आज धर्म प्रचार राशि [फंड] अलग से बनाना पड़ेगा, जहाँ गोलख योजना का स्वरूप भी व्यवस्थित और साकार नहीं हो सकता है ।

हमारे समाज में क्लेश और अधिकार के अहं ने बहुत ही आघात पहुंचाया है । यह अनुभव होता है कि स्वार्थ के बिना कोई कार्य करना भी नहीं चाहता और जो कार्य करते हैं उनके पास जीविका के साधन नहीं है । इनका सुमेल तभी संभव होगा जब हम एकमात्रा में धनराशि एकत्र करके निष्ठावान् और त्यागियों को संस्था में अपना सम्मान करें।

हमारे समाज में कार्यकर्ता या वैष्णव अथवा अन्यजन एक-दूसरे को घर पर ठहराने की सुविधा तो नहीं देते पर अनजाने में उनको अकेला छोड़ देते हैं, यहाँ आत्मीयता भाई नहीं है । यह काम सम्पन्न समाज नहीं कर सकता । एकता और सहयोग गरीबों में ही फलित हो सकता है । संभवतः इसीलिए यह अकिंचन मार्ग बतलाया है ।

आचार्यों का यह आदेश भावना में भी स्थान नहीं रखता तो क्रिया में इसकी परिकल्पना भी नहीं कर सकते । तब किस प्रकार कार्य चलाया जाय यह समस्या है, अकिंचन और ईमानदार समाज को दोहरी मार सहन करनी पड़ती है । ऐसा समाज आत्मोत्सर्ग भी कर सकता है किन्तु उसकी भावना के लिए आश्रय एवं संस्कारों की दृढ़ता

की आवश्यकता है । यहाँ प्रदर्शन अधिक है इसलिए विश्वास भी नहीं किया जा सकता। सचाई की कमी और स्पष्ट मन से बात करने की सोचना भी अस्थाने हैं । इन सभी बातों को ध्यान में रखकर आपसे यह अनुरोध किया जा रहा है कि धर्म प्रचार निधि को यथा संभव सुदृढ़ता से बढ़ायें जिससे परिपत्र, धर्म प्रचार वाहन और अन्य कार्य में एक सीमित निश्चितता रहे । यह प्रयास समाज की उदासीनता को दूर करने में सार्थक हो सकता है। यही मार्ग अवशिष्ट है । गुजरात के कुछ भागों को छोड़कर सौराष्ट्र में यह कठिनाई कार्यकर्ता के समक्ष नहीं आयेगी किन्तु उत्तर प्रदेश, बंगाल, आदि में ऐसे वैष्णव नहीं है जो निष्ठा से संस्था के कार्य को पहचान सकते हों । इसका कारण धर्म की रुचि कम होना है और वैष्णव आदि अनेक कारण हैं, अतः तपस्वी जीवन का अभ्यास तो कार्यकर्ता को रखना ही चाहिए । भूख, प्यास आदि सहन करना और आत्म-सम्मान के साथ नम्रता से कार्य करना है । धर्म की इस स्थिति को देखते हुए आचार्य पीठ पर बैठकर पादपूजन कराना केवल आत्मग्लानि का कारण है । अतः आप यदि हमें सहयोग प्रदान करें तो कोटा तथा हमारे आत्मीयजन को लिखकर साथ्य करें कि हमको अपने घर के सभी दायित्वों से मुक्त करा दें । अन्तिम जीवन धर्म के लिए संघर्ष में लगे तो हमारा यही सौभाग्य होगा और आपका यह वरदान होगा ।

यह खेद है कि हमारे स्वजन और व्यवस्थापक वैष्णव तथा सम्पर्क में आनेवाले भक्तगण हमारे लक्ष्य में सहायक नहीं हो सकते । अतः यह त्याग ही श्रेयष्कर है । दायित्व के साथ रहने में ऐसा एक सीमा तक ही संभव है । यह वातावरण चिन्तन और सेवा में भी बाधक है । जिन सज्जनों को हमारा साथ देना हो वह भी कृपया सूचित करें । निकट भविष्य में हम वेदवर्धिनी वाहन की व्यवस्था कर रहे हैं जिससे समाज में सेवा और संस्कारों की रक्षा हो और संस्कृत के अध्ययन और वेदों की महिमा को लोग जान सकें। महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य वेदों के अलौकिक स्वरूप को स्वीकार करते हैं यह उनके भाष्य में स्पष्ट निर्देश है । सामान्य संस्कारों की कमी के कारण समाज का पतन हो रहा है । जिनको त्याग करना है और स्वधर्म सेवा अनुशासित होकर करनी हो ऐसे सज्जन हमको पत्र से जानकारी देने का कष्ट करें । यह बात सही होनी चाहिए । केवल उत्साह और अन्य बातों से प्रेरित होकर ऐसा पत्राचार न करें । हमको सीमित साधन में कठिनाइयां सहकर धर्म स्थापना और प्रचार करना है । वैदिक साहित्य से अनुप्राणित हमारा पुष्टिमार्ग त्वयं वेदात्मक ऐह अतः वेद वर्धिनी वाहन से हम संस्कार और वेद प्रचार करेंगे ।

भवदीय

प्रथमेश

श्रीहरिः

आशीर्वाद एवं अनुरोध

स्वस्तिश्री वेदव्यास विष्णुस्वामि संप्रदाय संमृत सर्वाम्नाय संचार है वैष्णवाम्माय प्राचुर्य प्रकार श्री विल्वमंमलाचार्यार्पित साम्राज्यासन विभुवदन और वैश्वानरावतार अखण्ड भूमंडलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्री वल्लभाचाराय प्रथमपीठाधीश्वराणाम् गुस्पूर्णिमाया अवसरे शुभाशीर्वादाः प्रदीयते अनन्त श्रीमद् प्रथमेश श्रीमद् रणछोड़ाचार्य महाभागाः

विशेष अनुरोध जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्य प्रथम पीठाधीश्वर

समस्त वैष्णवजनों को सूचित किया जाता है कि आज भारत में गोरक्षा का प्रश्न कई वर्षों से प्राण-प्रश्न बन गया है । सर्वोदय समाज का सतत् आन्दोलन चल ही रहा है। अन्य गोभक्त महात्मा जन भी इसके लिए सक्रिय कार्य करके बहुत श्रम ले रहे हैं ।

अनेक संस्थाओं ने सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) के समक्ष इस प्रसंग में याचिका प्रस्तुत की है, और इनके द्वारा संपूर्ण गोरक्षा के विषय में अपने मांगे रखी है । सर्वोच्च न्यायालय के कानूनों की विविधता और उनकी उलझनों के कारण ऐसे कानून को निरस्त करके नये सिरे से, गोरक्षा के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनों के निर्माण की मांग सर्वथा उचित एवं सब दृष्टि से योग्य है ।

हमने वैष्णव गोरक्षा - याचिका प्रस्तुत करने का निश्चय करके उसकी तैयारी करायी है । यह याचिका तैयार हो गयी है ।

विगत दिसम्बर में आचार्य परिषद् के निर्णय के पश्चात् समस्त वैष्णवों को आदेश भी दिया गया था । उस सन्देश को सुव्यवस्थित ढंग से पहुँचाने का प्रयास भी किया गया था । अब हमारी तरफ से यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है, और याचिका तैयार होकर प्रस्तुत हो गयी है । जिन लोगों को इस पुण्यकार्य में यथाशक्ति आर्थिक अथवा अन्य प्रकार की सहायता करने की इच्छा हो वे वैष्णव अपने नाम के साथ गोरक्षा पेटीशन एकाउन्ट में ड्राफ्ट भेज सकते हैं ।

आचार्यों और समस्त वैष्णव जनों से इस विषय में निवेदन किया गया है । इस संवंध में किसी भी बैंन्क की दिल्ली शाखा के नाम से ड्राफ्ट भेजा जा सकता है । पांच हजार की राशि देने वाले दो व्यक्तियों के नाम प्रतिनिधि के रुप याचिका में दिये जायेंगे । ग्यारह व्यक्ति मिलकर रुपये ११,०००-०० का योग अथवा यथाशक्ति सहयोग दे सकते हैं । इस गोरक्षा के वक्रालतनामें में हस्ताक्षर करना चाहिए, जिसकी व्यवस्था यहाँ से की जायेगी ।

सर्वोच्च न्यायालय का ग्रीष्मावकाश पूरा हो गया है । इस मामले में काफी छानबीन करके इस कार्यक्रम को वेग दिया गया है । अतः सबसे आदर अनुरोध है कि इस कार्य

में अपना पूर्ण सहयोग दें और आचार्यों एवं विद्वानों के आशीर्वचन और सहयोग की अपेक्षा है ।

आशा है समस्त धर्मानुरागी जन इस कार्य में संपूर्ण सहयोग देकर पुण्य लाभ लेंगे।

श्रीहरिः

यत्र गावो भूरिश्रंगा आयास

श्रीमद् प्रथमपीठाधीश्वर का अनुरोध

समस्त जनता को यह हार्दिक अनुरोध है कि आप सभी गाय के दूध का प्रयोग करें और यह मन से निश्चय करें कि गाय का दूध ही सेवन करेंगे ।

यह प्रसन्नता की बात है कि महाराष्ट्र सरकार ने गाय का दूध सस्ते मूल्य पर सभी के लिये उपलब्ध कराया है।

गाय का दूध सबसे उत्तम है और विश्व में प्रायः सभी देश गाय का ही दूध पीते हैं । आशा है सभी भारत वासी ऐसा नियम लेने का पूर्ण प्रयास करेंगे ।

भवदीय

गो. र. प्रथमेश

प्रथमपीठाधीश्वर

वल्लभ संप्रदाय (कोटा)

(अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के सदस्य बनकर अपना संगठन बल बढाइये)

श्रीहरिः

अखण्डभू मंडलाचार्यवर्य श्रीमदनंतश्री विभूषित वल्लभाचार्य प्रथमपीठाधीश्वर पू. पा श्री प्रथमेशजी की समस्त वैष्णव समाज से अपील

सभी धर्मानुरागी वैष्णवों से मेरा यह हार्दिक अनुरोध है कि हम अपने संप्रदाय की स्थिति पर गम्भीरता से अवश्य विचार करके एक अखिल भारतीय स्तर का सामाजिक संगठन अपनी संपूर्ण निष्ठा से बनाने में कार्यरत हों । मैं यह समझ सकता हूं कि गोस्वामी वालकों की विसंगतियों से आपका हृदय अवश्य विक्षुब्ध हुआ होगा और वर्तमान युग के परिवर्तन एवं भौतिक कार्यों के व्यवधान से आपको मन में उदासीनता आना स्वाभाविक है । फिर भी हमें एक अन्तिम प्रयास अपने धर्म के लिये अवश्य करना चाहिये, ऐसा आपसे आत्मीय अनुरोध करने का मैं अधिकार समझता हूँ । यदि आपका मन इस में साक्षी दें और मन के किसी कोने में धर्म के प्रति तनिक भी श्रद्धा शेष रह गई हो, तो आप इस पर अवश्य विचार करेंगे । जिस से वर्तमान युग में धार्मिक विशृंखलन रोका

जा सके । यह महत्वपूर्ण बात है कि यदि हमने धार्मिक शृंखला को सशक्त बना कर अगर युवक समाज को एक संगठित रूप में धार्मिक क्षेत्र में सक्रिय किया, तो राष्ट्र की युवा शक्ति पश्चिमी देशों की भांति भ्रान्त होने से बच जायगी और समाज में एक नई दिशा शान्ति और सुख के लिये प्रशस्त होगी । हमारे पास दर्शन, साहित्य, कला, संगीत, सेवा एवं सदाचार का मंजुल सामंजस्य है । इसका उपयोग व्यवस्थित रूप में संगठन के अभाव से हम नहीं कर सके, और सक्षम वैष्णव समाज उदासीन होकर ऐसी सुषुप्त अवस्था में पहुँच गया है कि जिसे उसकी स्थिति का बोध करने का भी अवकाश नहीं है । ऐसी गंभीर स्थिति में पुनः स्मरण दिलाता हूँ कि यदि सभी वैष्णव समय एवं मूल देखें कुछ त्याग करके संप्रदाय का एक व्यवस्थित संगठन नहीं बनायेंगे तो श्रीमद् वल्लभ के आदर्श के प्रति हमारा उचित कर्त्तव्य हमने नहीं निभाया ऐसा ऐतिहासिक उल्लेख शेष रहेगा और भारत के हमारे महान् आचार्य को अभी तक हम बदनामी के अतिरिक्त कुछ भी समर्पित नहीं कर सके । आशा है आप मेरे वक्तव्य पर ध्यान देकर अखिल भारतीय संगठन को बल प्रदान करेंगे । मुझे खेद है कि आज गोस्वामी बालक इस संप्रदाय के प्रति कर्तव्य पालन में नितान्त असफल रहे हैं । अतः हम से आशा करना कर्तव्य की दृष्टि से ठीक नहीं है । आप स्वयं ही महाप्रभु का स्मरण कर त्याग से परम्परा की रक्षा में तत्पर बनेंगे यही एक मात्र उपाय शेष है ।

अन्त में भगवान सभी को सत्प्रेरणा प्रदान करें इस प्रार्थना के साथ विराम करता हूँ।

शुभाशीर्वाद सहित,

गो. र. प्रथमेश

श्रीहरिः

श्री वल्लभ संप्रदाय के प्रथम पीठाधीश्वर का अनुरोध

प्रभु-भक्त कृषक एवं श्रमिक जनो !

आशीर्वाद

आपके पास असीम श्रमशक्ति और अदम्य उत्साह श्री महाप्रभु के वरदान से अपने आप सिद्ध है । यह सौभाग्य है हमारे प्रभु आपके साथ खेलकर, हंस, बोलकर और वनों में घूम कर परब्रम्ह के मूल स्वरूप को संपूर्ण अभिव्यक्त करते हैं ।

छछिया भर छाछ पर प्रेम से नाचा है वह भगवान जिसने सारे ब्रम्हाण्ड या विश्व को नचाया है । आज आपके उस पवित्र प्रेम और श्रम की महान समर्पण शक्ति के पास आपको अपना मानकर यह वर मांगने आया हूं कि आप धर्म को धन का आश्रित होने से बचायेंगे । मुझे आशा है कि इस याचना पर आप विचार करके स्वधर्म और ईश्वर को

अपना प्यार से पराधीन होता बचा लेंगे । आपका धर्माचरण और श्रम ही भक्त जीवन की प्रेरणा और प्रतिष्ठा है । तभी तो श्रीराम भीलनी के बेर और श्रीकृष्ण छाछ की मधुरता को कभी भी नहीं भूल सके । इसी आधार से आपके सहयोग की कामना करता हूँ कि आप धर्म और उस प्रेमी प्रभु को अपना आश्रय और प्यार भरा अंचल प्रदान कर समर्पण और सेवा के सिद्धान्त को साकार करेंगे ।

मेरे आत्मबन्धुओं अभी समय है जब आप उस धन कुबेर और केस के बाल गोपाल श्रीकृष्ण और धर्म को बचा सकते हैं । नहीं तो यह देश, संस्कृति, सभ्यता सभी कुछ बर्बाद हो जायेगा । मैं यह अनुरोध करते हुए विश्वास व्यक्त करता हूँ कि आप इस याचना को अपना कर हमें सहयोग प्रदान करेंगे ।

भवदीय

गोस्वामी प्रथमेश

श्रीहरिः

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्य-प्रथमपीठ गृहाधीश्वर श्री मदनन्त विभूषित श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज का अनुरोध

आदरणीय वनचारी बन्धुओं,

भगवान् आपका सर्वदा कल्याण करें, इस शुभकामना के साथ आपको यह अनुरोध करते हैं कि आपके पास श्रमशक्ति और वन की सम्पत्ति है, जिसका विकास करके आप अपना जीवन स्तर ऊँचा बना सकते हैं ।

आपके समाज की उन्नति और विकास के लिए हम आपकी सेवा एवं सहायता करने की कामना करते हैं अगर आपका प्रेम पूर्ण सहयोग मिलता रहा तो एक दिन आपका समाज अपने ही साधनों से उन्नति करके सभी का हित करने के लिए समर्थ होकर भारतीयजनों का मार्ग दर्शक और प्रेरक बन सकता है ।

आप अपने समय और शक्ति का अच्छा उपयोग करे और सुखी बने, इसलिये हमारा यह प्रयास है हमें अपना सहयोग देकर आप पढ़ लिखकर आगे बढ़ सकते हैं । खेती और अन्य बातों में अपनी उन्नति कर सकते हैं।

आशा है आप हमें अपना समझ कर आपके समाज की सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे । आपका जीवन हजारों वर्षों से भगवान श्री कृष्ण के साथ सम्बन्धित है आप हमारे हिन्दू समाज के अभिन्न अंग है और श्री राम भक्त हनुमान के आराधक है । अपनी मूल परम्परा के अनुसार आप अपने देश व समाज की उन्नति करने में समर्थ है ।

हम फिर से आपके सहयोग की कामना करते हुए अनुरोध करते हैं कि हमें अपनी सेवा का अवसर देवें ।

कार्यालय भवदीय

ग्रामीण एवं अरण्य सेवा संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्

बसन्त कालोनी, नेहरु मार्ग, गोवर्धन नाथजी मन्दिर,

झाबुआ (म. प्र.)

श्रीहरिः

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद श्री वल्लभाचार्य वेदमन्दिर योजना

श्रीमद् वल्लभाचार्य वेदमन्दिर योजना कोल्हापुर इचलकरंजी, बड़ोदा एवं गोवा में लोहगढ़ (हरवण) से आरंभ करने के लिये हमें स्थान प्राप्त हुए है । उसमें श्री वल्लभाचार्य का स्वरूप तथा अन्य आचार्यों के समन्वयात्मक ग्रन्थ एवं स्वरूपों की प्रतिष्ठा की जावेगी और वहाँ सत्संग का प्रचार आरंभ किया जावेगा जिससे हिन्दू संस्कृति पर होने वाले अनुचित प्रहारों को रोका जा सके । इन मन्दिरों के साथ गोशाला एवं आश्रम पद्धति से जन मानस को भारतीय संस्कृति की प्रेरणा दी जाने की योजना है । जिसमें अनाथाश्रम, महिला प्रशिक्षण केन्द्र, बाल मन्दिर, वाचनालय तथा औषधालय प्रारंभ किये जावेंगे । गोवा में इस स्थान को हिन्दू विश्व कल्याण केन्द्र के रूप में एवं इचलकरंजी में शान्ति शिविर के रूप में विकसित किया जावेगा । जिसके द्वारा लोक जागरण की जावेगी । जिसमें नियमित जीवन व्यतीत करके जनता अतिशय सुन्दर आधिदैविक प्रेरणा प्राप्त कर सके ऐसा प्रयास किया जावेगा । रहने को छोटे-छोटे मकान प्रत्येक सुविधा युक्त हो इस पर ध्यान दिया जावेगा और आश्रम के जीवन का स्वरूप इसे प्रदान किया जावेगा । इस वेद मन्दिर में १६ स्तंभो पर षोडश ग्रंथ उत्कीर्ण किये जावेंगे और बोध वचनों तथा वैदिक वाक्यों का भी इसमें समावेश है । नियमित वैश्वानर हवन तथा सत्संग का भी आयोजन किया जावेगा। मकान झोपड़ी के रूप में होंगे सुविधा युक्त साधा जीवन व्यतीत करने वालों को उनमें आश्रम दिया जावेगा । जो व्यक्ति मकान आश्रम में बननाना चाहेंगे उनके नाम अर्पण पट्ट पर लिखे जावेंगे । मकान के नाम नीचे के नाम पर रखे जावेंगे जैसे मधुवन, तालबन, कुमुदवन आदि वहाँ बैठकजी के चरित्र तथा छोटे-छोटे उद्यान बनाये जावेंगे जिसमें भारतीय ऋषि परंपरा के चित्र भी होंगे । आश्रम वाले प्रातः उठकर स्नान के बाद प्रार्थना करेंगे बाद में प्रवचन सुनेंगे । फिर प्रसाद लेकर क्षणिक विश्राम कर वाचनालय आदि में कार्यरत होंगे फिर भारतीय कला, साहित्य, संगीत आदिवर्गों में यथारूचि प्रशिक्षण ग्रहण करेंगे । अशक्त व्यक्ति की सेवा का भी प्रबंध रहेगा । और जो व्यक्ति जो कला जानता है उसका विनियोग राष्ट्रहित में करेगा । इस केन्द्र से प्रभु सेवा करने का प्रकार तथा लोकसेवा को

प्रभुसेवा मानकर करने का प्रशिक्षण और प्रेरणा दी जावेगी । मानवजीवन के आध्यात्मिक, भौतिक और चारित्रिक निर्माण के लिए प्रत्येक प्रकार के प्रयत्न किये जावेंगे । माताओं और बहनों को सिलाई की शिक्षा के साथ-साथ रामायण, गीता, महाभारत आदि भी पढ़ाये जावेंगे । इसी प्रकार पुरुषों के लिए भी ग्रंथ प्रशिक्षण वर्ग चलाये जायेंगे । साथ ही सेवा धर्म की प्रेरणा, महत्व तथा विविध ज्ञान की प्रवृत्ति प्रारंभ की जावेगी । व्यायाम तथा सूर्य नमस्कार प्राणायाम आदि विषयों का इसमें समावेश होगा । अस्वस्थ एवं अपंग लोगों की सेवा एवं उन लोगों से काम लेने की योजना भी इसमें बनायी जायेगी अभावग्रस्त मानव जीवन को स्वावलंबी और उच्च बनाने के लिये प्रत्येक प्रकार की प्रवृत्ति की जावेगी वैदिक ऋषियों एवं वैदिक ज्ञान एवं भागवत् आदि के संरक्षण हेतु पुस्तकालय आदि की योजना इसके साथ रहेगी यह सूक्ष्म रुपरेखा हमने आपके आगे प्रस्तुत की है जो धार्मिक जनों के आशीर्वाद से साकार होगी । शेष भागवत् कृपा ।

निवेदक :---

गो. श्री गोकुलनाथजी महोदय, जुहु स्कीप विलेपार्ले, बम्बई
एच. एच. प्रथमेश, गिरधर निवास, जतीपुरा, बम्बई
नटवरलाल हरगोविन्द, कोषाध्यक्ष अ. भा. पु. वै. प.,
२०, दादी शेठ अगारीलेन, बम्बई
बद्रीनाथजी शास्त्री नृसिंहपोल, बड़ोदा
निरंजन शास्त्री उमरठेवाला मंत्री उऋहन्मुवापुरी संस्कृत विद्वत् सभा, बम्बई
कुमनदासजी झालानी प्रधानमंत्रीय, अ. भा. पु. वै. परिषद्, न्यूपलासिया, इन्दौर
प्रभारी शास्त्री गट्टूलालजी संस्था, बम्बई
जितेन्द्र भाई शास्त्री, बम्बई
जयवल्लभ शास्त्री, बम्बई
दादू भाई पी अमोन, ३८, अलकापुरी, बड़ौदा
मधुभाई पटेल, बड़ौदा
बृजदासजी दावडा, हरिवल्लभ एंड कंपनी इचलकरंजी फोन २३१४
मोरारजी खेमजी शाखा अध्यक्ष, कोल्हापुर
शेठ हपराज गोकुलदास मंत्री, कोल्हापुर शाखा, फोन २३०६
बृजमोहनदासजी दलाल एंड कंपनी जूनी हनुमान गली भोपाल
बृज मोहनदासजी विजय विजयवाटिका वृजालपुर मंडी
कृष्ण वल्लभजी मुखिया श्री मदनमोहन हवेली, उज्जैन

श्रीहरिः

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् की धर्मानुरागी जनता से अपील

बन्धुओं

आज भारत के जंगली भागों में रहने वाली महिलाओं को अपनी लज्ञा ढंकने के लिये वस्त्र भी प्राप्त नहीं है और न बच्चों को दवा देने को प्राप्त है न कपड़े । ऐसी स्थिति में हमारे सेवा विभाग पीपल्स प्रोयेसिव सर्विस ने उस क्षेत्र में सेवा कार्य आरंभ करने का निश्चय किया है । यदि आपके पास ऐसी वस्तुएं हों जिनसे हमारे देश के अनाथ बालक, असहाय महिलाओं को वस्त्र प्राप्त हो सकें, कृपया इस पते पर संस्था को प्रदान करने का कष्ट करें ।

दवाइयों, कपड़े, कम्बल, बिस्कुट के पैकेट या टाफियों तथा अन्य सहायता रसीद प्राप्त करके ही प्रदान करें ।

निवेदक

गो. र. प्रथमेश

अध्यक्ष : पी. पी एस. सेवा विभाग

श्रीहरिः

श्री गिरधरजी के उत्सव पर

पू. पा. गो. १०८ श्री प्रथमपीठाधीश्वर का शुभ-संदेश

समस्त पुष्टिमार्गीय एवं धर्मानुरागी जनता को आदि प्रथम पीठाधीश्वर श्रीमदन्त श्री विभूषित गिरिधरजी के प्रादुर्भाव महोत्सव पर हार्दिक आशीर्वाद के साथ यह सन्देश प्रेषित करता हूँ कि जिस प्रकार दीपावलि की दीपशिखा एक छोटे से दीप का तेलपुंज होते हुए भी निरंतर अंधकार पर विजय प्राप्त करने का अनवरत प्रयास करती है उसी प्रकार आप सभी महाप्रभु के नसचंद्र की दिव्य ज्योति से प्रकाश पाकर अज्ञानरूपी अंधकार पर विजय प्राप्त करके स्वधर्म सेवा के हेतु संगठित बनें, इसी संदर्भ में देवप्रबोधिनी एकादशी के पर्व पर हमारे मार्ग में जगजीवन जगनायकों जगाया और मंगलमीनी सरसनिशा का रात्रि जागरण कर निरंतर जागरुक रहने की भावना प्रदर्शित की और अपने धर्मस्वरूप रक्षावेष्टित श्रीप्रथमपीठाधीश्वर श्री गिरिधरजी के महोत्सव पर उनके त्यागमय संदेश को स्वागत एवं स्नेहपूरित दृष्टि से अपने जीवन का अंग बनाया जिससे आज तक हमारा जीवन अनवरत धर्मप्राण की प्रेरणा से अनुप्राणित रहा । आज उसी पावन महोत्सव पर सभी समवेत हो कर स्वधर्म जागरण में तत्पर बनें और आचार्य चरणों में प्रतिपात होकर सेवा करने की

शक्ति का वरदान प्राप्त करें यही हमारे जीवन की सफलता का सच्चा सोपान है । आशा है आप मनन करके आत्मप्रबोध प्राप्त करेंगे । इस संदेश के साथ पवित्र श्रीचरणों में यह विनती है ।

गो. प्रथमेश, कोटा, जतीपुरा, प्रथमपीठ ।

आज की धार्मिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में प्रथमेश

जब से भारत स्वतंत्र हुआ है, तब से भारतीय-धर्म को राजनीति ने अपने आक्षेपों का निशाना रक्खा है । बिना सोचे समझे राजनेता धर्म को बदनाम करने पर तुले हैं । बुद्धिजीवियों ने भी आंखें मूंद कर उनका साथ दिया है । पश्चिमी प्रभाव और निहित स्वार्थों ने भी इस स्थिति को बद्तर बनाया है ।

पर दुःख की बात है कि, हमारा धार्मिक समाज सजग नहीं हो सका । आपसी राग-द्वेष में उलझा रहा । इस कारण पत्र-पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों ने मौका मिलते ही धर्म को नीचा दिखाने की कोशिशें की । आधुनिक राजनीतिक प्रणालियां (चाहे फिर वह प्रजातंत्र हो या समाजवाद अथवा साम्यवाद) मूल रूप में धर्मविरोधी ही नहीं है, धर्म को नीचा दिखाने में भी अपना गौरव समझती है । अंग्रेजों ने तो यह सिलसिला अपने साम्राज्य की लिप्सा और उसकी जड़े मजबूत करने के लिये शुरु किया । हमारे देश में धर्म और संस्कृति अलग-अलग नहीं माना जाती । अंग्रेजों ने हमें संस्कृतिहीन बनाने के लिये ईसाइयत का प्रचार किया । उसकी आड़ में साम्राज्य प्रसार किया ।

मगर अंग्रेजों के जाने के बाद, उनके छोड़े हुये अफसरों ने इस क्रम का घेरा बढ़ा दिया । और धर्म को औद्योगिक और सामाजिक विकास में बाधक मानकर, उस पर चारों और से प्रहार शुरु कर दिया । इस जिस धर्म को विदेशी न मिटा सके, उसे देशी सत्ताधीशों ने विकास के नाम पर कानून और विधानों के जरिये नष्ट करना शुरु कर दिया ।

धर्माचार्यों की सजगता और चेतना सम्पन्न बनाने के लिये श्री हलवासियाजी ने कलकत्ता से एक ज्ञापन छापा था । पर धर्माचार्यों के मिथ्याभिमान और द्वेष की वजह से इस पर ध्यान नहीं दिया गया । वरन् अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये राजनेताओं की चाटुकारी की और उनका साथ दिया । इसमें कहीं व्यक्तिगत स्तर पर राज्य-संरक्षण पाने की क्षुद्र लालसा भी थी, परिणाम यह हुआ कि, धर्मस्थानों पर राजनैतिक लोगों और सत्ता का दवाव बढ़ता गया । अपनी स्वार्थसाधना के लिये धर्माचार्यों और साधु-सन्तों को, कुछ अपने साधु-महात्माओं के जरिये बदनाम करवाया गया । और इन्हीं लोगों की आड़ में धर्मस्थानों पर अपना अधिकार जमाना शुरु किया गया । जिसमें श्रीमंतों से और कानून बनाकर इस काम को सरल बना दिया गया । इन श्रीमंतों और साधुओं ने अपने धर्म के साथ जयचंदों की भूमिका अदा की ।

दूसरी और श्रीमंतों की युवा पीढ़ी और नये पढ़े लिखों पर पश्चिमी रंग चढ़ता गया। धर्म-विरोधी होना, आधुनिक और सभ्य होने की निशानी बन गया । यह प्रवृत्ति हमारी संस्कृति को समूल नाश करने पर उतारू हो गई । जिस पीढ़ी से उत्थान और पुर्नजागरण की आशा थी, वह सहारा ही टूट गया ।

मगर हमारी युवा पीढ़ी यह नहीं समझ पाई की, इस रुझान ने पश्चिमी को आस्थाहीन बनाया है । वहाँ की युवापीढ़ी दिग्भ्रमित घुमक्कड़ और आवारा हो चुकी है । चरस गांजे और जादू टोने में दो घड़ी का आध्यात्मिक चैन ढूंढ रही है । ढोंगियों से ध्यान की दीक्षा ले रही है इसने समूचे जगत की युवा पीढ़ी को एक मरीचिका दी है । धर्म की मानसिक कस्तूरी भूल, जन-जन को पागल की तरह रेगिस्तान में भटका रहा है । इसके लक्षण कई रूपों में दिखाई देते हैं । पर धर्म की कस्तूरी को कोई पहचानना नहीं चाहता । दिग्भ्रमित रहने में आचारहीनता का व्यामोह और भ्रमानन्द तो हैं । सदाचार का अनुशासन और मर्यादा तो नहीं है । इसी प्रणाली में संन्यासवाद आदि आचारहीन धार्मिकता का जन्म हुआ । जिसका प्रारंभ थियोसोफिस्टों ने किया था । इसका आज का रूप रजनीशजी और जे. कृष्ण मूर्ति के विचार हैं, जो भारतीयता की मौलिकता को ही समाप्त करने पर तुले हैं ।

यह न कोई क्रांतिकारिता है, न प्रगति । यह नैतिक शिष्टाचार का हनन है । गांधीजी पर वैष्णव संस्कार थे । उनमें उदारता थी, तो नैतिक आस्था भी थी । उन्होंने भारतीय राजनीति और स्वतंत्रता आन्दोलन को यह नैतिक आस्था दी । पर उसकी हत्या उनके अनुयायीयों ने कर दी । उन्होंने अपने इस आग्रह को कभी नहीं छोड़ा कि, मैं एक हिन्दू हूँ । पर आज उनकी वह वैष्णव भावना, जो सच में ईश्वर देखती थी कहाँ है ? आज तो ईश्वर का नाम पुराणपंथी होने की निशानी बना दिया गया । शायद हमें अब कहीं गांधीजी की उदारता भी आयात न करना पड़े । पर आयातित या इम्पोर्टेड उदारता और धार्मिकता नकली होगी । जो हमें विघटन दे रहा , चाहे हमारा धर्म हो, या दर्शन या महापुरुष, उन्हें हमें अपने ढङ्ग या ढंग से समझाना होगा । पश्चिमी राजनीतिक प्रणालियाँ और विचार धाराएँ उन्हें हमें नहीं समझा सकती । वे तो हमें सर्वग्रासी अधिनायकवाद की ओर ले जा रही है, जो सब कुछ जो भारतीय है उसका साथ हमारे धर्म को भी निगल जाना चाहता है ।

हमें इस ह्रास से बचना है, तो धार्मिक मर्यादाओं की रक्षा करनी होगी । दृढ़ आश्रय से, धैर्य से, विवेक से कदम बढ़ाना होगा । पर यह कैसे हो ?

मन्दिर राज्य-सत्ता नहीं सम्भाल सकती । वह अनास्था और अनाचार फैलाती है। पवित्रता और मर्यादा को छुआछूत मानती है । हमारे यहाँ भक्ति का अधिकार वेदों और शास्त्रों के अनुसार सब को है । पर हर भक्त को अपनी भक्ति मर्यादा तो निभानी होगी। राजनैतिक स्वार्थों के लिये धार्मिक मर्यादाओं के मनमाने अर्थ नहीं लगाये जा सकते ।

भक्ति में सब बराबर है । ठीक है । पर भक्ति सिक्यूलर या धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकती। वह धर्म सापेक्ष है । ये बातें बहुत महत्वपूर्ण है । राज्य के लिये जो मूर्ति है वह भक्त का सर्वस्व है । यह अंतर समझ पाना सहज नहीं ।

अगर यह अंतर हम राज्य को नहीं समझा पाये, या अपने प्रभु को सर्वस्व मानने के अधिकार को प्रस्थापित नहीं कर पाये तो राज्य हमारे सर्वस्व स्वरूपों को ऐन्टिक बना देगा । भक्त जहाँ भक्ति करता है, वह जगह वैकुण्ठ है । म्यूजियम भूतों का डेरा है । भक्त सजीव वृन्दावन में रहता है । म्यूजियम प्रेमी श्मशानवासी है । इन मरघट के पहरेदारों से हमें अपने प्रिय प्रभु की रक्षा करनी है । प्रभु सब समर्थ है । पर हमारा प्रेम कितना है, इसकी गवाही हम न दे सकें, तो हम धार्मिक कहलाने योग्य नहीं ।

हमें हमारे देश के हर मठ और मन्दिर को जीवित रखना है । उनका सुधार हम खुद मिलकर आपसी तौर पर करेंगे । किन्तु सरकारी हस्तक्षेप नहीं होने देंगे । उसे राजनीति के निहित स्वार्थों से बचायेंगे । सरकारी हस्तक्षेप हमारे मौलिक अधिकारों का हनन हैं । धर्म स्थानों पर राजनेताओं और सत्ता की कुदृष्टि न पड़े । इसके लिये सजग हो जाना होना हमारा कर्त्तव्य है ।

धार्मिक स्थानों की देख भाल, सरकार का नहीं, धार्मिक समाज का काम है । इसमें भी वे लोग नहीं जो किसी भी प्रकार से राजनीति की मानसिक विकृति के शिकार हैं । इसलिये मैं सभी धर्मानुरागी सज्ञनों, धर्माचार्यों और सांस्कृतिक संन्तानों से यह आशा करता हूँ कि वे मेरे वक्तव्य पर गम्भीरता से ध्यान देने का कष्ट करें और अपना संगठन सुदृढ़ करें । यह वक्तव्य किसी को उत्तेजित करने अथवा स्वार्थ की दृष्टि से नहीं लिखा गया है किन्तु एक यथार्थ तथ्य ही आपके सामने सद्भाव से रखने का प्रयास है । अन्त में भगवान्, सभी को धर्म बुद्धि एवं विवेक प्रदान करें इस प्रार्थना के साथ वक्तव्य समाप्त करता हूँ ।

आश्चर्य है कि धर्म पर आक्षेप हो रहे हैं और हम सभी अपने काम में व्यस्त हैं. यही बात बता रही है कि धर्म एक दिखावा मात्र शेष है.

—प्रथमश

अब शिथिलता सहन नहीं होती, धर्म के साथ खिलवाड़ करना हम पसन्द नहीं करते.

—प्रथमेश